Each directory should have a file called README bib.txt. with bibliographic entry with following details:-

i. Discipline : **Jainology & Prakrit**

ii. Name of the text : **Gommaṭasāra - Jīvakāṉda**

iii. Author : **Nemicandra**

File named "README_type_log.txt" containing the following details:-

i. Name of the institute : **Jaipur Campus**

ii. (a) Principal Investigator : **Prof. Radhavallabh Tripathi**

(b) Investigator : **Prof. R. Devnathan**

(c) Co-investigator : **Dr. Shukla Mukherjee**

(d) Editor : **Dr. Kamalesh Kumar Jain**

iii. Name of the typist : **Ramprasad Jajoriya**

iv. Completion date of data entry : **31.03.2009**

v. Name of the proof reader : **Dr. Kamalesh Kumar Jain**

vi. Completion date of proof reading : **31.06.2009**

vii. Name of the approval authority from

Rashtriya Sanskrit Sansthan : **Prof. Arknath Choudhary**

viii. Date of approval : **22.03.2010**

श्रीमद्राजचंद्रजैनशास्त्रमाला

श्री परमात्मने नमः

श्रीमन्नेमिचन्द्रसैद्धान्तिकचक्रवर्तिविरचित

गोम्मटसार

(जीवकाण्ड)

गोम्मटसार जीवकाण्ड

विषय-सूची (list of Contents)

विषय	गाथा संख्या
मङ्गल और प्रतिज्ञा	1
अधिकार नाम व संख्या	2
गुणस्थान व मार्गणा	3
बीस प्ररूपणाओं का दो प्ररूपणाओं में अन्तर्भाव	4
मार्गणा में प्ररूपणाओं का अन्तर्भाव	5-7
1- गुणस्थान	
गुणस्थान का सामान्य लक्षण	8
गुणस्थान के चौदह भेद	9-10
गुणस्थानों में होने वाले पञ्चगुण(भाव)	11
चार गुणस्थानों के भावों की अपेक्षा	12
पंचमादि गुणस्थानों में भाव	13-14
मिथ्यात्व का लक्षण एवं भेद	15
मिथ्यात्व के पाँच भेदों के दृष्टान्त	16
मिथ्यात्व का दूसरा लक्षण	17
मिथ्यादृष्टि के बाह्य चिह्न	18
सासादन गुणस्थान का स्वरूप	19
सासादन का दृष्टान्त	20
मिश्र (मिथ्यात्वसासादन) का लक्षण	21
मिश्र गुणस्थान का दृष्टान्त	22
मिश्र गुणस्थान का वैशिष्ट्य	23-24
वेदक (क्षायोपशमिक) सम्यक्त्व का लक्षण	25
औपशमिक और क्षायिक सम्यक्त्व का लक्षण	26
चतुर्थ गुणस्थान की विशेषता	27-29
देशव्रत(देशसंयम)गुणस्थानका लक्षण	30
विरताविरत की उपपत्ति	31
प्रमत्तविरत गुणस्थान का लक्षण	32
प्रमत्तविरत गुणस्थान की विशेषता	33
प्रमाद के 15 भेद	34
प्रमाद के पञ्च प्रकार	35
संख्या की उत्पति का क्रम	36
प्रस्तार का प्रथम क्रम	37
प्रस्तार का द्वितीय क्रम	38
प्रथम प्रस्तार की अपेक्षा अक्षपरिवर्तन	39

द्वितीय प्रस्तार की अपेक्षा अक्षसंचार 40
नष्ट की विधि 41
उद्दिष्ट का स्वरूप 42
प्रथमप्रस्तार की अपेक्षा नष्ट-उद्दिष्ट का गूढयन्त्र 43
द्वितीय प्रस्तार की अपेक्षा गूढयन्त्र 44
सप्तम(अप्रमत्तसंयत) गुणस्थान का स्वरूप 45
स्वस्थान अप्रमत्त का स्वरूप 46
सातिशय अप्रमत्त का स्वरूप 47
अधःप्रवृत्तकरण का लक्षण 48
अधःप्रवृत्तकरण के काल एवं परिणाम तथा उनकी वृद्धि 49
अपूर्वकरण(अष्टम)गुणस्थानका स्वरूप 50
अपूर्वकरण का निरुक्तिपूर्वक लक्षण 51
अपूर्वकरण का विशेष स्वरूप 52-53
अपूर्वकरण परिणामों का कार्य 54-55
नवम गुणस्थान (अनिवृत्तिकरण) का स्वरूप 56-57
दशम गुणस्थान (सूक्ष्मसाम्पराय) का स्वरूप 58-59
सूक्ष्मलोभ का फल 60
एकादश गुणस्थान (उपशान्तकषाय) का स्वरूप 61
द्वादश गुणस्थान का स्वरूप 62
त्रयोदश गुणस्थान (सयोगकेवली) का स्वरूप 63-64
चतुर्दश गुणस्थान(अयोगकेवली) का स्वरूप 65
गुणस्थानगत गुणश्रेणिनिर्जरा 66-67
सिद्ध का स्वरूप 68
सिद्ध के विशेषणों का फल 69

2- **जीवसमास**

जीवसमास का निरुक्तिपूर्वक लक्षण 70
उत्पत्ति के कारण की अपेक्षा जीव-समास का लक्षण 71
जीवसमास के 14 भेद 72
जीवसमास के 57 भेद 73
जीवसमास के स्थानादि 4 अधिकार 74
स्थान अधिकार 75-80
योनि अधिकार 81-82
जन्म के प्रकार 83
जन्म के स्वामी 84
जन्म एवं योनि का सम्बन्ध 85-87
गुणयोनि की संख्या 88-89

गति की अपेक्षा जन्म 90-91
लब्ध्यपर्याप्तकों के स्थान 92
गति की अपेक्षा वेदों का नियम 93
अवगाहन अधिकार 94-96
अवगाहनाओं के स्वामी और उनकी न्यूनाधिकता का गुणाकार 97-101
चतुःस्थानपतित वृद्धि अवगाहना के मध्य के भेद 102-109
वायुकाय की अवगाहना 110
तेजस्काय की अनगाहनाओं के गुणाकार की उत्पति का क्रम 111
अवगाहना के विषय में मत्स्य रचना 112
कुलों के द्वारा जीवसमासका वर्णन 113-117

3- **पर्याप्ति**

पर्याप्त-अपर्याप्त का स्वरूप 118
पर्याप्ति के भेद व स्वामी 119
पर्याप्ति का काल 120-121
लब्ध्यपर्याप्तक का स्वरूप 122
लब्ध्यपर्याप्तक के उत्कृष्ट भव 123-125
केवलियों की अपर्याप्तता की शंका का परिहार 126
गुणस्थानों की अपेक्षा पर्याप्त-अपर्याप्त अवस्था 127
सासादन एवं सम्यक्त्व के अभाव का नियम 128

4- **प्राण**

प्राण का निरुक्तिपरक लक्षण 129
प्राण के भेद 130
प्राणोत्पत्ति सामग्री 131
प्राणों के स्वामी 132
एकेन्द्रियादि के प्राण 133

5- **संज्ञा**

संज्ञा का लक्षण एवं भेद 134
आहारसंज्ञा का स्वरूप 135
भयसंज्ञाके कारण और उसका स्वरूप 136
मैथुनसंज्ञा का कारण एवं स्वरूप 137
परिग्रहसंज्ञा का स्वरूप 138
संज्ञाओं के स्वामी 139

6- **मार्गणा**

मंगलाचरण व प्रतिज्ञा 140
मार्गणा का निरुक्तिपरक लक्षण 141
मार्गणाओं(14) के नाम 142
सान्तरमार्गणाओं के भेद व नाम 143
सान्तर मार्गणाओं का काल 144
अन्तरमार्गणा विशेष 145

गतिमार्गणा -1

गति का निरुक्तिपरक लक्षण व भेद 146

नरकगति का स्वरूप 147

तिर्यग्गति का स्वरूप 148

मनुष्यगति का स्वरूप 149

तिर्यञ्च एवं मनुष्यों के भेद 150

देवगति का स्वरूप 151

सिद्धगति का स्वरूप 152

नारक जीवों की संख्या 153

प्रथम पृथिवी के नारकियों का प्रमाण 154

तिर्यग्जीवों की संख्या 155

तिर्यञ्चों का प्रमाण 156

मनुष्यों का प्रमाण 157

पर्याप्त मनुष्यों की संख्या 158

मानुषी एवं अपर्याप्त मनुष्योंकी संख्या 159

देवगति के जीवों की संख्या 160-62

सर्वार्थसिद्धि एवं सामान्य

देवराशि का प्रमाण 163

इन्द्रिय मार्गणा -2

इन्द्रिय का निरुक्तिपूर्वक लक्षण 164

इन्द्रियों के भेद(द्रव्य एवं भाव) तथा

उनके स्वरूप 165

इन्द्रियापेक्षा जीवों के भेद 166

जीवों की इन्द्रियवृद्धिका क्रम 167

इन्द्रियों का विषय क्षेत्र 168

संज्ञी जीव की इन्द्रियों का विषय-क्षेत्र 169

चक्षु इन्द्रिय का उत्कृष्ट विषय-क्षे 170

इन्द्रियों का आकार 171

इन्द्रियगत आत्मप्रदेशों का अवगाहन

प्रमाण 172

स्पर्शन इन्द्रिय के प्रदेशों का अवगाहन

प्रमाण 173

अतीन्द्रिय जीवों का वर्णन 174

एकेन्द्रियादि जीवों की संख्या 175-77

त्रसजीवों की संख्या 178-80

कायमार्गणा -3

काय का लक्षण व भेद 181

पृथिवी आदि 4 स्थावरों की उत्पत्ति

का कारण 182

शरीर के भेद व लक्षण 183

शरीर का प्रमाण 184

वनस्पतिकाय का स्वरूप भेद 185

वनस्पति जीवों के अवान्तर भेद 186

सप्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित के चिह्न 187

प्रत्येक वनस्पति एवं भेद 188-90

सामान्य या साधारण वनस्पति का

लक्षण व भेद 191
साधारण कहने का हेतु 192-93
निगोदिया जीवों का वर्णन 194-96
नित्यनिगोद का स्वरूप 197
त्रसजीवों का स्वरूप, भेद, क्षेत्रादि 198-99
वनस्पतिके समान अन्य जीवोंमें
प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित भेद 200
स्थावर व त्रस जीवों का आकार 201
कायके कार्य का दृष्टान्त द्वारा समर्थन 202
कायरहित सिद्ध का स्वरूप 203
पृथिवी कायादि जीवों की संख्या 204-15

योगमार्गणा -4

योग का सामान्य लक्षण 216
योग का विशेष लक्षण 217
योग विशेषों का लक्षण 218-21
दशप्रकार का सत्य 222
दशप्रकार के सत्यके दृष्टान्त 223-24
अनुभव वचन के भेद 225-26
चार प्रकार के मनोयोग और वचनयोग
के मूलकारण 227
सयोगकेवली के मनोयोग की संभवता
एवं उसका कारण 228-29
काययोग का निरुक्त्यर्थ 230
काययोग के भेदों का स्वरूप 231-34
आहारक-काययोगका निरूपण 235
आहारक-काययोग के निमित्त 236
आहारकशरीर का स्वरूप 237
आहारकशरीर का कालप्रमाण 238
आहारक-काययोग का निरुक्त्यर्थ 239
आहारकमिश्रयोग का लक्षण 240
कार्मणकाययोग का लक्षण 241
योगप्रवृत्ति का प्रकार 242
अयोगी जिन का स्वरूप 243
शरीरमें कर्म-नोकर्मका विभाग 244
औदारिकादि शरीरों के समय
प्रबद्धादि की संख्या 245-44
औदारिकादि शरीरोंके समयप्रबद्ध
और वर्गणाओं का अवगाहन प्रमाण 247
उक्त कथन में दृष्टान्त 248
विस्रसोपचय का स्वरूप 249
कर्म-नोकर्म के उत्कृष्ट संचय का
स्वरूप तथा स्थान 250
उत्कृष्ट संचय की सामग्री विशेष 251
शरीरों की उत्कृष्ट स्थिति का प्रमाण 252
शरीरों की उत्कृष्ट स्थिति के गुणहानि
आयाम का प्रमाण 253

शरीरों के समयप्रबद्ध का द्रव्य प्रमाण 254
औदारिक एवं वैक्रियिक शरीर की विशेषता 255
औदारिक शरीर के उत्कृष्ट संचय का स्वामी 256
वैक्रियिक शरीर के उत्कृष्ट संचय का स्थान 257
तैजस और कार्मण के उत्कृष्ट संचय का स्थान 258
योगमार्गणा में जीवों की संख्या 259-70

वेदमार्गणा -5

वेदों के दो भेदों का कारण 271
भाववेद और उसके भेदोंका स्वरूप 272-75
वेदरहित जीव का लक्षण 276
वेद की अपेक्षा जीवसंख्या 277-81

कषायमार्गणा -6

कषाय का निरुक्त्यर्थ 282
कष् धातु की अपेक्षा कषाय शब्दकी निरुक्ति 283
क्रोध के चार भेद (शक्ति की अपेक्षा) 284
मान के चार भेद (शक्ति की अपेक्षा) 285
माया के चार भेद (शक्ति की अपेक्षा) 286
लोभ के चार भेद (शक्ति की अपेक्षा) 287
गतियों के प्रथम समय में क्रोधादि का नियम 288
कषाय रहित जीव 289
कषायों का स्थान 290-95
कषाय की अपेक्षा जीवसंख्या 296-98

ज्ञानमार्गणा -7

ज्ञान का निरुक्ति सिद्ध लक्षण 299
ज्ञान के भेद उनका क्षायोपशमिक एवं क्षायिक विभाग 300
मिथ्याज्ञान का कारण एवं स्वामी 301
मिश्र(सम्यक-मिथ्या)ज्ञान का कारण और मनःपर्ययज्ञान का स्वामी 302
मिथ्याज्ञानों का दृष्टान्त से समर्थन 303-5
मतिज्ञानका स्वरूप, उत्पत्ति आदि 306-14
श्रुतज्ञान का सामान्य लक्षण 315
श्रुतज्ञान के भेद 316-18
पर्यायज्ञान 319-20
पर्यायज्ञानके स्वामी और विशेषता 321-22
पर्यायसमास ज्ञान का निरूपण 323
छहवृद्धियों की छहसंख्या 325
छहवृद्धियों की विशेषता 326-32
अर्थाक्षर श्रुतज्ञान 333

श्रुतनिबद्धविषय का प्रमाण	334	अवधिज्ञानका द्रव्यादिकी अपेक्षा वर्णन	376
अक्षरसमास और पदज्ञान	335	अवधि का जघन्य द्रव्य	377
पद के अक्षरों का प्रमाण	336	अवधि का जघन्य क्षेत्र	378
संघातश्रुतज्ञान	337	जघन्य का विशेष कथन	379-84
श्रुतज्ञान का विस्तृत स्वरूप	338	अवधि का समय-प्रबद्ध	385
अनुयोग श्रुतज्ञान का स्वरूप	339	ध्रुवहार का प्रमाण	386
प्राभृत प्राभृत का स्वरूप	340-41	मनोद्रव्य-वर्गणाका जघन्य और	
प्राभृत का स्वरूप	342	उत्कृष्ट प्रमाण	387
वस्तु श्रुतज्ञान का स्वरूप	343	प्रकारान्तर से ध्रुवहारका प्रमाण	388-89
पूर्व ज्ञान के भेदों की संख्या	344	देशावधि के द्रव्य की अपेक्षा भेद	390
चतुर्दश पूर्व के नाम	345-46	देशावधिका क्षेत्रकी अपेक्षा जघन्य	
प्राभृतों का प्रमाण	347	और उत्कृष्ट प्रमाण	391
श्रुतज्ञान का संक्षेप प्रकार	248-49	वर्गणाका प्रमाण	392
द्वादशाङ्ग पदों की संख्या	350	परमावधि के भेद	393
अंगबाह्य श्रुत के भेद	351-53	देशावधि के विकल्प और उनके विषय	
अक्षरों का प्रमाण	354-55	भूत क्षेत्रादि के प्रमाण निकालने	
अंगों व पूर्वों के पदों की संख्या	356-66	के क्रम	394-400
अंगबाह्य श्रुत के भेद	367-68	उन्नीस काण्ड में दोनों क्रमों का	
श्रुतज्ञान का माहात्म्य	369	स्वरूप	401-2
अवधिज्ञानका लक्षण व भेद	370	ध्रुववृद्धिका क्रम प्रमाण	403-8
अवधिज्ञान के स्वामी तथा उनका		अध्रुववृद्धि का क्रम और प्रमाण	409
स्वरूप	371	उत्कृष्ट देशावधिके विषयभूत द्रव्यादि	
अवधि तथा गुणप्रत्यय के भेद	372-75	का प्रमाण	410-12

परमावधि के जघन्य द्रव्यका प्रमाण 413
परमावधिके उत्कृष्ट द्रव्यका प्रमाण 414
सर्वावधिका विषयभूत द्रव्य 415
परमावधिके द्रव्य, क्षेत्र, कालकी अपेक्षा भेद 416
परमावधिका असंख्यातगुणितक्रम 417
प्रकारांतरसे गुणाकारका प्रकार 418-19
परमावधिके विषयभूत उत्कृष्ट क्षेत्र और कालका प्रमाण निकालनेके लिये दो करणसूत्र 420-21
जघन्य देशावधिसे सर्वावधिपर्यंत भावका प्रमाण 422-23
नरकगतिमें अवधिका क्षेत्र 424
तिर्यंच और मनुष्यगतिमें अवधि 425
देवगतिमें अवधिका क्षेत्रादि 426-37
मनःपर्ययज्ञानका स्वरूप 438
मनःपर्ययके भेद 439
मनःपर्ययके दो भेदोंका विशेषस्वरूप 440-42
द्रव्य मन का स्थान तथा आकार 443-44
मनःपर्ययका स्वामी आदि 445-50
ऋजुमतिका जघन्य और उत्कृष्ट द्रव्य 451
विपुलमति का द्रव्य 452-54
दोनों भेदों के क्षेत्रादिका प्रमाण 455-59
केवलज्ञान का स्वरूप 460
ज्ञानमार्गणा में जीवसंख्या 461-64

संयममार्गणा -8

संयमका स्वरूप और उसके पाँच भेद 465
संयम की उत्पत्तिका कारण 466-68
देशसंयम और असंयम का कारण 469
सामायिक संयम का स्वरूप 470
छेदोपस्थापना संयम का स्वरूप 471
परिहारविशुद्धि संयम का स्वरूप 472-73
सूक्ष्मसांपराय संयम का स्वरूप 474
यथाख्यात संयम का स्वरूप 475
देशविरत का लक्षण 476-77
असंयत का लक्षण 478
इन्द्रियों के अट्ठाईस विषय 479
संयम की अपेक्षा जीवसंख्या 480-81

दर्शनमार्गणा -9

दर्शनका लक्षण 482-83
चक्षुदर्शन आदि 4 भेदोंका क्रमसे स्वरूप 484-86
दर्शन की अपेक्षा जीवसंख्या 487-88

लेश्यामार्गणा -10

लेश्याका लक्षण 489-90

लेश्याओंके निर्देशादि 16 अधिकार 491-92
1) निर्देश 493
2) वर्ण 494-95
गतियों में लेश्याओं का नियम 496-98
3) परिणाम 499-03
4) संक्रम 504-06
5) कर्म 507-08
6) लक्षण 509-17
7) गति 518-28
8) स्वामी 529-35
9) साधन 536
10) संख्या 537-42
11) क्षेत्र 543-44
12) स्पर्श 545-50
13) काल 551-52
14) अन्तर 553-54
15-16) भाव और अल्पबहुत्व 555
लेश्यारहित जीव 556

भव्यमार्गणा -11

भव्य अभव्यका स्वरूप 557
भव्यत्व अभव्यत्व से रहित जीव 558-59
भव्यमार्गणा में जीवसंख्या 560
पाँच परिवर्तन 560/1-2

सम्यक्त्वमार्गणा -12

सम्यक्त्व का स्वरूप 561
सात अधिकारों के द्वारा छह द्रव्यों के निरूपण का निर्देश 562
1) नाम 563-64
2) उपलक्षण 565-80
3) स्थिति 581-82
4) क्षेत्र 583-87
5) संख्या 588-91
6) स्थानस्वरूप 592-04
7) फल 605-08
परमाणु के स्कन्धरूप परिणमन का कारण 609-19
पंचास्तिकाय 620
नव पदार्थ 621-22
गुणस्थानक्रम से जीवसंख्या 623-29
क्षपकादि की युगपत् सम्भव विशेष संख्या 630-32
सर्वसंयमियों की संख्या 633-42
अजीवादि तत्त्वों का संक्षिप्त स्वरूप 643-45
क्षायिक सम्यक्त्व का स्वरूप 646-48
वेदक सम्यक्त्व का स्वरूप 649
उपशम सम्यक्त्व का स्वरूप व

सामग्री 650-52

पाँच लब्धि 651

सम्यक्त्व ग्रहण के योग्य जीव 652-53

सम्यक्त्वमार्गणा के दूसरे भेद 654-56

सम्यक्त्वमार्गणा में जीवसंख्या 657-59

संज्ञीमार्गणा -13

संज्ञी असंज्ञी का स्वरूप 660

संज्ञी असंज्ञी की परीक्षा के चिह्न 661-62

संज्ञी मार्गणा में जीवसंख्या 663

आहारमार्गणा -14

आहारका स्वरूप 664

आहारक का निरुक्त्यर्थ 665

आहारक अनाहारक का विभेद 666

समुद्घात के भेद 667

समुद्घात का स्वरूप 668-69

आहारक और अनाहारकका कालप्रमाण 670

आहारमार्गणा में जीवसंख्या 671

7- **उपयोग**

उपयोगका स्वरूप एवं दो भेद 672

दोनों उपयोगोंके उत्तर भेद 673

साकार उपयोगकी विशेषता 674

अनाकार उपयोगकी विशेषता 675

उपयोग में जीवसंख्या 676

अन्तर्भाव

गुणस्थान और मार्गणा में शेषप्ररूपणाओं का अन्तर्भाव 677

मार्गणाओं में गुणस्थानादि 678-98

गुणस्थानों मे जीवसमासादि 699

मार्गणाओं में जीवसमास 700-05

आलाप

नमस्कार और आलाप के कहने की प्रतिज्ञा 706

गुणस्थान और मार्गणाओं के आलापोंकी संख्या 707

गुणस्थानों में आलाप 708-11

मार्गणाओं में आलाप 712-26

जीवसमास की विशेषता 727

बीस भेदों की योजना 728

आवश्यक नियम 728/1-30

गुणस्थानातीत सिद्ध का स्वरूप 731-32

बीस भेदों के जाननेका उपाय एवं फल 733

आशीर्वाद गाथा 73

गाथानुक्रमणी (index of Verses)

गाथा	गाथा संख्या (क्रमानुसार)
अ	
अइभीमदंसणेण	136
अगहिदमिस्सं	560/2
अंगुलअसंखभागं	172
अंगुलअसंखभागे	326
अंगुलअसंखगुणिदा	390
अंगुलअसंखभागं अवरं	391
अंगुलअसंखभागे दव्व	399
अंगुलअसंखभागं धुव	401
अंगुलअसंखभागं संखं	409
अंगुलअसंखभागो	670
अंगुलमावलिया	404
अंगोवंगुदया	229
अज्जज्जसेणगुण	733
अज्जवमलेच्छ	80
अज्जीवेसु य रूवी	564
अट्ठत्तीसद्धलवा	575
अट्ठविहकम्म	68
अट्ठण्हं कम्माणं	453
अट्ठारसछत्तीसं	358
अट्ठेव सयसहस्सा	629
अडकोडिएय	351
अड्ढस्स	574/1
अण्णाणतियं होदि	301
अण्णोण्णुवयारेण	306
अणुलोहं वेदंतो	60
अणुलोहं वेदंतो	474
अणुसंखासंखे	594
अत्थक्खरं च	348
अत्थादो अत्थंतर	305
अत्थि अणंता जीवा	197
अंतरभावप्पबहु	492
अंतरमवरुक्कस्सं	553
अंतोमुहुत्तकालं	50
अंतोमुहुत्तमेत्ते	53
अंतोमुहुत्तमेत्तो	49

अंतोमुहुत्तमेत्तं 253
अंतमुहुत्तमेत्ता 262
अद्धत्तेरस बारस 115
अपदिट्ठिदपत्तेयं 98
अपदिट्ठिदपत्तेया 205
अप्पपरोभय 289
अयदोत्ति छ 532
अयदोत्ति हु अवि 689
अवरद्दव्वादुवरिम 384
अवरद्धे अवरुव 106
अवरपरित्ता 109
अवरमपुण्णं 99
अवरापज्जाय 573
अवरुवरि इगि 102
अवरुवरिम्मि 323
अवरे वरसंख 108
अवरोग्गाहण 103
अवरोग्गाहण 380
अवरो जुत्ताणंतो 560
अवरोहिखेत्तदीहं 379
अवरोहिखेत्त 382
अवरं तु ओहि 381
अवरं दव्वमुदा 451
अवरंसमुदा होंति 520
अवरंसमुदा सोह 523
अवरं होदि अणंतं 387
अवहीयदित्ति 370
अव्वाघादी अंतो 238
असहायणाण 64
असुण्णमसंखे 427
असुण्णस 428
असुहाणं वर 501
अहमिंदा जह देवा 164
अहिमुहणिय 306
अहियारो पाहुडयं 341

आ

आउड्ढरासि 204
आगासं वज्जित्ता 583
आणदपाणद 431
आदिमछट्ठाण 327
आदिमसम्मत्त 19
आदेसे 4
आभीयमासुर 304
आमंतणि आण 225
आयारे सुद्दयडे 356

आवलिअसंखत्तं	212
आवलिअसंखभा	213
आवलिअसंखभागं	383
आवलिअसंखभागो	400
आवलिअसंखभागा	417
आवलिअसंखभागा जहण्ण	422
आवलिअसंखभागं अवरं	458
आवलिअसंख समया	574
आवलिपुधत्त	405
आवासया हु	251
आसवसंवर	644
आहरदि अणेण	239
आहरदि सरीराणं	665
आहारसरीरि	119
आहारदंसणेण	135
आहारस्सुदयेण	235
आहारयमुत्तत्थं	240
आहारकायजो	270
आहारावग्गणादो	607
आहारमरणं	669
आहारो पज्जत्ते	683

इ

इगिदुगपंचे	359
इगिपुरिसे बत्तीसं	278
इगिवण्णं इगि	79
इगिवितिचपण	43
इगिवितिचखच	44
इगिवीसमोह	47
इच्छिदरासिच्छे	420
इंदियकाय	5
इंदिकायाऊणि	132
इंदियणोइंदिय	446
इंदियमणोहिणा	675
इह जाई बाहिया	134

ई

ईहणकरणेण	309

उ

उक्कस्सट्ठिदि	358
उक्कस्ससंखमेत्तं	331
उत्तम अंगम्हि	237
उदयावण्णसरी	664
उदये दु अपुण्ण	122
उदये दु वणप्फ	185
उप्पायपुव्वगाणिय	345

उवजोगो वण्ण	565
उववादगब्भजेसु	92
उववादमारणंतिय	199
उववादा सुरणिरया	90
उववादे अच्चित्तं	85
उववादे सीदुसणं	86
उवयरण	138
उवसम सुहमाहारे	143
उवसंतेखीणे	475
उवसंतखीण	10
उववादे पढम	549
उवहीणं तेत्तीसं	552
उव्वंकं चउरंकं	325

ए

एइंदियपहुदीणं	488
एइंदियस्स फुसणं	167
एकट्ठ च च य	354
एकम्हि काल	56
एक्कं खलु अट्ठंकं	329
एक्कचउक्कं चउ	314
एक्कदरगदि	338
एक्कं समयपबद्धं	254
एक्कारस जीवा	723
एगगुणं तु जहण्णं	610
एगणिगोदसरीरे	196
एदम्हि गुणट्ठाणे	51
एदम्हि विभज्जंते	398
एदे भावा णियमा	12
एयक्खरादु	335
एयदवियम्मि	582
एयपदादो उवरिं	337
एया य कोडिकोडी	117
एयंत बुद्धदरसी	16
एवं असंखलोगा	332
एवं उवरि विणेओ	111
एवं गुणसंजुत्ता	611
एवं तु समुग्घादे	547

ओ

ओगाहणाणि	247
ओघासंजद	334
ओघे चोद्दसठाणे	707
ओघे मिच्छदुगेवि	708
ओरालिय उत्त	231
ओरालं पज्जत्ते	680

ओरालियर 256
ओरालिय वे 244
ओरालियमिस्सं 684
ओहिरहिदा 462

क

कदकफलजुदजलं 61
कंदस्स व मूलस्स 189
कप्पववहार 368
कप्पसुराणं 433
कम्मइयकाय 671
कम्मइयवग्गण 410
कम्मेव य कम्मभवं 241
कम्मोरालिय 264
कमवण्णुत्तर 349
काऊ णीलं किण्हं 502
काऊ काऊ काऊ 529
कालविसेसेण 408
काले चउण्ण 412
कालो छल्लेसा 551
कलोवि य ववएसो 580
कालं अस्सिय 571
किण्हचउक्काणं 527
किण्हतियाणं 528
किण्हवरंसेण मुदा 524
किण्हं सिलास 292
किण्हा णीला काऊ 493
किण्हादिरासि 537
किण्हादिलेस्स 556
किमिरायचक्क 287
कुम्मुण्णय जो 82
केवलणाणदि 63
केवलणाणाणं 539
कोडिसय 114
कोहादिकसायाणं 290

ख

खंधं सयल 604
खंधा असंखलोगा 194
खयउवसमिय 651
खवगे य खीणमोहे 67
खीणे दंसणमोहे 346
खेत्तादो असुह 538

ग

गइ इंदियेसु 142
गइउदयज 146

गच्छसमा तक्का 418

गतनम मनगं 363

गदिठाणोग्गह 566

गदिठाणोग्गहकिरिया 605

गब्भजजीवाणं पुण 87

गब्भणपुइत्थि 280

गाउयपुधत्त 455

गुणजीवा पज्जत्ती...पत्तेयं 677

गुण जीवा पज्जत्ती...भणिदा 2

गुणजीवापज्जत्ती...लेस्सा 725

गुणजीवठाण 731

गुणपच्चइगो 372

गूढसिरसंधि 187

गोयमथेरं 706

घ

घणअंगुलपढम 161

चउगइसरूव 339

चउ पण चोद्दस 678

चउरक्खथावर 661

चउसट्ठिपदं 353

चक्खूण जं पया 484

चक्खूसोदं 171

चंडो ण मुचइ 509

चत्तारिविखे 653

चदुगदिभव्वो 652

चदुगदिमदि 661

चन्दरविजंबु 361

चरमधरासाण 638

चरिमुव्वंकेण 233

चागीभद्दो चोक्खो 516

चिंतियमचिंतियं 449

चोद्दसमग्गण 340

छ

छट्ठाणाणं आदी 328

छट्ठोत्ति पढम 702

छद्दव्वावट्ठाणं 581

छद्दव्वेसु य णामं 562

छप्पयणील 495

छप्पंचाधिय 116

छप्पंचणववि 561

छस्सय जोयण 156

छस्सयपण्णासाइं 366

छादयदि सयं 274

छेत्तूण य परियायं 471

ज

जणवदसम्मदि	222
जत्तस्स पहं	567
जत्थेक्क मरइ	193
जम्मं खलु सम्मु	83
जम्बू दीवं भरहो	195
जम्हा उवरिम	48
जं सामण्णं	482
जह कंचणमग्गिगयं	203
जहखादसंजमो	468
जह पुण्णापुण्णाइं	118
जह भारवहो	202
जाइ जरामरण	152
जाई अविणाभावी	181
जाणइ कज्जाकज्जं	515
जाणइ तिकाल	299
जाहि व जासु व	141
जीवदुगं उत्तट्ठं	622
जीवा अणंतसंखा	588
जीवा चोद्दसभेया	478
जीवाजीवं दव्वं	563
जीवाणं च य रासी	324
जीवादो णंतगुणा	249
जीवादोणंतगुणो	599
जीविदरे कम्म	643
जेट्ठावरबहु	632
जेत्ती वि	573/2
जेसिं ण संति	243
जेहिं अणेया	70
जेहिं दु	8
जोइसियवाण	277
जोइसियंताणोही	437
जोइसियादो अहिया	540
जोगपउत्ती	490
जोगं पडि जोगि	711
जोगे चउरक्खा	487
जो णेव सच्चमोसो	221
जो तसवहाउ	31

ठ

ठाणेहिं वि जोणीहिं	74

ण

णट्ठकसाये	533
णट्ठपमाये पढमा	139
णट्ठासेसपमादो	46
णभएयपयेसत्थो	573/1
ण य कुणइ पक्खवायं	517

ण य जे भव्वाभव्वा	559
ण य परिणमदि	570
ण य पत्तियइ	513
ण य मिच्छतं	654
ण य सच्चमोस	219
णरतिरियाणं	530
णरतिरिय	298
णरमंति जदो	147
णरलद्धिअपज्जेत्ते	716
णरलोएत्ति य	456
णवमी अणक्खर	226
णव य पदत्था	621
णवरि य दुस	255
णवरि विसेसं	319
णवरि समुग्घादम्मि	550
णवरि य सुक्का	693
णवि इंदिय	174
णाणं पंचविहं	673
णाणुवजोगजुदाणं	676
णारयतिरिक्ख	288
णिक्खित्तु बिदिय	38
णिक्खेवे एयत्थे	733
णिच्चिदरधादु	89
णिद्दापयले	55
णिद्दावंचण	511
णिद्दे सवण्णपरि	491
णिद्धत्तं लुक्खत्तं	609
णिद्धणिद्धा ण	612
णिद्धस्स णिद्धेण	615
णिद्धिदरोली	613
णिद्धिदरवरगु	618
णिद्धिदरगुणा	619
णिद्धिदरे सम	616
णिम्मूलखंध	508
णियखेत्ते केवलि	236
णिरया किण्हा	496
णिस्सेसखीण	62
णेरइया खलु	93
णेवित्थी णेव	275
णोइंदियआवरण	660
णोइंदियं ति	444
णोइंदियेसु वि	29
णो कम्मुरालसं	377

त

तज्जोगो सामण्णं	263

तत्तो उवरिं	14	तिगुणा सत्तगुणा	163
तत्तो एगार	162	तिणकारिसिट्ठ	276
तत्तो कम्मइय	397	तिण्णिसया	123
तत्तो ताणुत्ताणं	639	तिण्णिसयजोय	160
तत्तो लांतव	436	तिण्णिसयसट्ठि	170
तत्तो संखेज्ज	640	तिण्हं दोण्हं दोण्हं	534
तद्देहमंगुलस्स	184	तिबिपच पुण्ण	180
तदियक्खो अंत	39	तियकालविसय	441
तदियकसायु	469	तिरधियसय	625
तलतीनमधुग	158	तिरियगदीए	700
तव्वड्ढीए चरिमो	105	तिरियचउक्का	713
तव्विदियं कप्पाण	454	तिरिये अवरं	425
तसचदुजुगाण	71	तिरयंति कुडिल	148
तसजीवाणं	721	तिव्वतमा तिव्व	500
तसरासिपुढवि	206	तिसयं भणंति	626
तस्समयबद्ध	248	तिसु तेरं दस	704
तस्सुवरि इगि	104	तीसं वासो जम्मे	473
तसहीणो संसारी	176	तेउतियाणं एवं	554
तहिं सव्वे सुद्ध	267	तेउदु असंख	542
तहिं सेसदेव	269	तेउस्सय सट्ठा	546
तं सुद्धसलागा	268	तेऊ तेऊ तेऊ	535
ताणं समयपबद्धा	246	तेउ पउमे सुक्के	503
तारिसपरिणाम	54	तेजा सरीरजेट्ठं	258

तेत्तीसवेंजणाइं	352
तेरसकोडी देसे	642
तेरिच्छियलद्धि	714
ते विविसेसेण	214
तेसिं च समासेहि य	318
तोवासयअज्झयणे	357

थ

थावरकायप्पहुदी	685
थावरकायप्प...विण्णेयो	686
थावरकायप्प...णायव्वो	687
थावरकायप्प...लेस्साओ	692
थावरकायप्प त्ति	694
थावरकायप्प सजोगि	698
थावरसंख	175
थोवा तसु	281

द

दव्वं खेत्तं कालं भावं	376
दव्वं खेत्तं कालं...तहा	450
दव्वं छक्कमका	620
दस चोदसट्ठ	344
दसविहसच्चे	220
दस सण्णीणं	133
दंसणमोह	648
दंसणमोहुदयादो	649
दंसणमोहुवसमदो	650
दंसणमोहे	646/1
दंसणवयसामाइय	477
दहिगुडमिव वा	22
दिण्णच्छेदे	215
दिण्णच्छेदेणवहिद	421
दिवसो पक्खो	576
दीव्वंति जदो	151
दुगतिगभवाहु	457
दुगवारपाहुडादो	342
दुविहंपि अपज्जत्तं	710
देवानं अवहारा	635
देवेहिं सादिरेया पुरिसा	279
देवेहिं सादिरेया ति	261
देवेहिं सादिरेगो रासी	663
देसविरदे पमत्ते	13
देसावहिवर	413
देसोहिअवर	394
देसोहिमज्झ	395
देसोहिस्स य	374
दोगुणणिद्धाणु	614

दोण्हं पंच य 705

दोत्तिगपभव 617

ध

धुणवीसडदस 168

धम्मगुणमग्गणा 140

धम्माधम्मादीणं 569

धुवअद्धुवरूवे 402

धुदकोसुंभय 58

धुवहारकम्म 305

धुवहारस्स य 388

धूलिगछक्कट्ठाणे 294

न

नीलुक्कस्संसमुदा 525

प

पच्चक्खाणुदयादो 30

पच्चक्खाणे 346

पंचक्खतिरिक्खाओ 91

पंचतिहिचहु 476

पंचवि इंदिय 130

पंचरस पंच 479

पंचसमिदो तिगुत्तो 472

पंचेव होंति णाणा 300

पज्जत्तस्स य 121

पज्जत्तसरीरस्स 126

पज्जत्तमपुस्साणं 159

पज्जत्तीपट्ठवणं 120

पज्जत्ती पाणावि य 701

पज्जायक्खर 317

पडिवादी देसोही 375

पडिवादी पुण 447

पढमक्खो अंत- 40

पढमं पमदपमा- 37

पढमुवसमसहि- 145

पणजुगले तस 76

पण्णट्ठदाल पण- 365

पणणठदिसया 347

पण्णवणिज्जा 334

पणिदरसभोय 137

पणुवीस जोय- 426

पत्तेयबुद्धतित्थ- 631

पमदादिचउ- 480

पम्मस्स व सठ्ठाण 548

पम्मुक्कस्संसमुदा 521

परमणसिट्ठियमट्ठं 448

परमाणुआदियाइं	485
परमाणुवग्गणम्मि	596
परमाणूहिं अणं-	245
परमावहिवर	419
परमावहिस्स...जाणे	393
परमावहिस्स...दव्वं तु	414
परमोहिदव्व	416
पल्लतियं उव-	252
पल्लसमऊण	411
पल्लासंखघणं-	463
पल्लासंखेज्जव	209
पल्लासंखेज्जदिमं	481
पल्लासंखेज्जदिमा	659
पल्लासंखेज्जा-	260
पस्सदि ओही	396
पहिया जे छप्पु-	507
पुक्खरगहणे	213
पुग्गलविवाह	216
पुढविदगागणि	125
पुढवी आऊ तेऊ	182
पुढवी आदि	200
पुढवी जलं च	602
पुण्णजहण्णं	100
पुरिसिच्छिसंढ	271
पुरुगुणभोगे	273
पुरुमहदुदारु	230
पुव्वं जलथल	362
पुव्वापुव्वप्पड्ढय	59
पुहपुहकसाय	296
पोग्गलदव्वम्हि	593
पोग्गलदव्वाणं	585
पोतजरायुज-	84
फ	
फासरसगन्ध	166
ब	
बंधो समयपबद्धो	645
बहुबहुविहं च	310
बहुभागे समभागो	179
बहुवत्तिजादि	311
बहुविहबहुप्प-	486
बादरआऊ	497
बादरतेऊवाऊ	233
बादरपुण्णातेऊ	259
बादरबादर	603
बादरसुहमे	72

बादरसुहमा 177

बादरसुहमु 183

बादरसंजल- 466

बादरसंजलणु 467

बाबीस सत्त 113

बारुत्तरसय 350

बाहिरपाणेहिं 129

बितिचप पुण्ण 96

बितिचपमाण 178

बिदियुवसम 730

बिहिं तिहिं चदुहिं 198

बीजे जोणीभूदे 190

भ

भत्तं देवी चंदप्पह 223

भरहम्मि अद्ध 406

भवणतियाण 429

भवपच्चइगो 371

भवपच्चइगो 373

भव्वत्तणस्स जोग्गा 558

भव्बासम्मत्तावि 726

भविया सिद्धी 557

भावाणं सामण्ण 483

भावादो छल्लेस्सा 555

भासमणवग्ग- 608

भिण्णसमयट्ठि 52

भूआउतेउ...दुगा 73

भूआउतेउवाऊ...भेदेवि 721

भोगा पुण्णग 531

म

मग्गणउवजोगा 703

मज्झिमअंसेण 522

मज्झिमचउ 679

मज्झिमदव्यं खेत्तं 459

मज्झिमपदक्खर- 355

मण्णंति जदो 149

मणदव्ववग्गणाण...हु 386

मणदव्ववग्गणा...दव्वं 452

मणपज्जवं च 439

मणपज्जवं च णाणं 445

मणपज्जवपरिहारो 729

मणवयणाण 217

मणवयणाणं 227

मणसहियाणं 228

मसुसिणिपमत्त 715

मदिआवरण	165
मदिसुदओही	674
मंदो बुद्धिविहीणो	510
मरणं पत्थेइ	514
मरदिअसंखेज्ज-	544
मसुरंबुबिंदु	201
मायालोहे	6
मिच्छंतं वेदंतो	17
मिच्छाइट्ठि जीवो	18
मिच्छादिठ्ठी जीवो	656
मिच्छाइठ्ठी पावा	623
मिच्छा सावय	624
मिच्छे खलु	11
मिच्छे चोद्दस	699
मिच्छे सासण	681
मिच्छोदयेण	15
मिच्छो सासण...य	9
मिच्छो सासण...त्ति	695
मिस्सुदये सम्मिस्सं	302
मिस्से पुण्णालाओ	718
मीमंसदि जो पुव्वं	662
मूलग्गपोरबीजा	186
मूलसरीरमछंडिय	668
मूलेकं दे छल्ली	188

य

याजकनामेनानन	364

र

रूऊणवरे अवरु-	107
रूवुत्तरेण तत्तो	110
रूसइ णिंदइ	512

ल

लद्धिअपुण्णं	127
लिंपइ अप्पीकीरइ	489
लेस्साणं खलु	518
लेस्साणुक्कस्सा-	505
लोगस्सअसंखे-	584
लोगागासपदेसा...होदि	587
लोगागासपदेसे	589
लोगागास...खेत्तं	591
लोगाणमसंखमिदा	316
लोगाणमसंखेज्जा	499

व

वग्गणरासि	392
वण्णोदयेण	494

वण्णोदयसंपा-	536
वत्तणहेदू कालो	568
वत्तावत्तपमादे	33
बत्तीसं अडदालं	628
वत्थुणिमित्तं	672
वत्थुस्स पदेसादो	312
वदसमिदिकसायाणं	465
वयणेहिं वि	647
वरकाओदंसमुदा	526
ववहारो पुण कालो मणुसो	577
ववहारो पुण तिविहो	578
ववहारो पुण कालो पोग्गल	590
ववहारो य विय-	572
बादरसुहुमे	719
वापणनरनो	360
वासपुधत्ते खइया	657
विउलमदी वि	440
विकहा तहा	34
विग्गहगदिमा-	666
विंदावलिलोगाण	210
विदियुवसम	696
विवरीयमोहि	305
विविहगुण	232
विसजंतकूड	303
विसयाणं विस-	308
विरमुहकमल	728
वीरियजुदमदि	131
वीसं वीसं पाहुड	343
वेगुव्वं पज्जत्ते	682
वेगुव्विय आहारय	242
वेगुव्विय उत्तत्थं	234
वेगुव्वियवरसं-	257
वेंजणअत्थ	307
वेणुवमूलोर-	286
वेदस्सुदीरणाए	272
वेदादाहारोत्ति-	724
वेयणकसाय	667
वेसदछप्पण्णं	541

स

संकमणे छट्ठाणा	506
संकमणं सट्ठाण	504
सक्कीसाणा पढमं	430
सक्को जम्बूदीवं	224
संखा तह पत्थारो	35
संखातीदा सम	403

संखावत्तय जोणी	81	सत्तमरिवदिम्मि	424
संखावलिहिद	658	सत्तादी अट्ठंता	633
संखेओ ओघो	3	सदसिवसंखो	69
संखेज्जपमे वासे	407	संपुण्णं तु समग्गं	460
संखेज्जासंखेज्जा	586	सद्दहणासद्दहणं	655
संखेज्जासंखेज्जे	598	सब्भावमणो सच्चो	218
सगजुलम्हि	77	समओ हु वट्टमा	579
सगमाणेहिं विभत्ते	41	सम्मत्तदेसघादि	25
सगसगअसंख	207	खम्मत्तदेससयल	283
सगसगखेत्त	434	सम्मत्तमिच्छपरि-	24
सगसगअवहा	641	सम्मत्तरयण	20
संगहिय सयल	470	सम्मत्तुप्पत्तीये	66
संजलणणोकसा...सो	32	समयत्तयसंखा	265
संजलणणोकसा...होदि	45	सम्माइट्ठी जीवो	27
सट्ठाणसमुग्घा-	543	सम्मामिच्छुदये	21
संठाविदूण रूवं	42	सव्वंगअंगसंभव	442
सण्णाणतिगं	688	सव्वं च लोयणलिं	432
सण्णाणरासि	464	सव्वमरूवी	592
सणिस्स वार	169	सव्वसमासे	297
सण्णी ओघे मिच्छे	719	सव्वसमासो	330
सत्तण्हं उवसमदो	26	सव्वसुराणं ओघे	717
सत्तण्हं पुढवीणं	712	सव्वावहिस्स एक्को	415
सत्तदिणा छम्मासा	144	सव्वे पि पुव्वभंगा	36

सव्वेसिं सुहमाणं	498	सीदी सट्ठी तालं	124
सव्वोहि त्ति य कमसो	423	सीलेसिं संपत्तो	65
ससमयमावलि	575/1	सुक्कस्स समुग्घा-	545
संसारी पंचक्खा	155	सुण्णं दुगइगि	295
सागरो उवजोगो	7	सुत्तादो तं सम्मं	28
सांतरणिरंतरेण	595	सुदकेवलं च णाणं	369
सामण्णजीव	75	सुहमट्ठिदिसंजुत्तं	560/1
सामण्णा णेरइया	153	सुहमणिगोद...मच्छे	94
सामण्णा पंचिंदी	150	सुहमणिगोद...मच्छे	173
सामण्णेण य एवं	88	सुहमणिगोद...णिरावरणं	320
सामण्णेण तिपंती	78	सुहमणिगोद...हवे	321
सामण्णं पज्जत्त-	709	सुहमणिगोद...अक्खरयं	322
सामाइयचउ	367	सुहमणिगोद...तु	378
साहरणबादरेसु	211	सुहदुक्खसुबहु	282
साहारणोदयेण	191	सुहमेसु संख	208
साहारणमाहारो	192	सुहमेदरगुण	101
साहियसहस्समेकं	95	सुहमणिवाते	97
सिक्खाकिरियु-	661	सुहमो सुहम	690
सिद्धं सुद्धं	1	सेढी सूई अंगुल	157
सिद्धाणंतिम	597	सेढी सूई पल्ला-	600
सिद्धाणं सिद्धगई	731	सेलगकिण्हे	293
सिलपुढवि	284	सेलट्ठिकट्ठ	285
सिलसेलवेणु	291	सेसट्ठारसअंशा	519

सोलससय	336
सोलसयं चउ	627
सोवक्कमाणुवक्कम	266
सो संजमं ण	23
सोहम्मसाण	636
सोहम्मादासारं	637
सोहम्मीसाणा	435

ह

हिदि होदि हु	443
हेट्ठिमउक्कसं	601
हेट्ठा जेसिं	112
हेठ्ठिमछप्पुढवीणं...पुण्णे	128
हेट्ठिमछप्पुढवीणं...णिद्दिट्ठो	154
होंति अणियट्ठिणो	57
होंति खवा इगि	630
होदि अणंतिम	389

सिरि णेमिचंदसिद्धंतचक्कवट्टिविरइयो

गोम्मटसारो (जीवकंडं)

श्रीनेमिचन्द्रसिद्धान्तचक्रवर्तिविरचितो

गोम्मटसारः(जीवकाण्डम्)

संस्कृतच्छाया-सहितः

(with Sanskrit randring

the **Gommaṭasāra – jīvakāṉda** of Nemicandra)

सिद्धं सुद्धं पणमिय, जिणिंदवरणेमिचंदमकलंकं।

गुणरयणभूसणुदयं, जीवस्स परूवणं वोच्छं॥1॥

(सिद्धं शुद्धं प्रणम्य, जिनेन्द्रवरनेमिचन्द्रमकलङ्कम्।

गुणरत्नभूषणोदयं जीवस्य प्ररूपणं वक्ष्ये॥1॥)

गुण जीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणाओ य।

उवओगो वि य कमसो वीसं तु परूवणा भणिदा॥2॥

(गुण-जीवाः पर्याप्तयः प्राणाः संज्ञाश्च मार्गणाश्च।

उपयोगोऽपि च क्रमशः विंशतिस्तु प्ररूपणा भणिताः॥ 2॥)

संखेओ ओघो त्ति य, गुणसण्णा सा च मोहजोगभवा।

वित्थारादेसो त्ति य, मग्गणसण्णा सकम्मभवा॥3॥

(संक्षेप ओघ इति गुणसंज्ञा सा च मोहयोगभवा।

विस्तार आदेश इति च, मार्गणसंज्ञा स्वकर्मभवा॥ 3॥)

आदेसे संलीणा, जीवा पज्जत्ति-पाण-सण्णाओ।

उवओगो वि य भेदे, बीसं तु परूवणा भणिदा॥4॥

(आदेसे संलीना जीवाः पर्याप्तिप्राणसंज्ञाश्च।

उपयोगोऽपि च भेदे, विंशतिस्तु प्ररूपणा भणिताः॥4॥)

इंदियकाये लीणा, जीवा पज्जत्ति-आण-भास-मणो।

जोगे काओ णाणे, अक्खा गदिमग्गणे आऊ॥5॥

(इन्द्रियकाययोर्लीना, जीवाः पर्याप्त्यानभाषामनांसि।

योगे कायः ज्ञाने अक्षीणि गतिमार्गणायामायुः॥5॥)

मायालोहे रदिपुव्वाहारं, कोहमाणगम्हि भयं।

वेदे मेहुणसण्णा, लोहम्हि परिग्गहे सण्णा॥6॥

(मायालोभयो रतिपूर्वकमाहारं क्रोधमानकयोर्भयम्।

वेदे मैथुनसंज्ञा लोभे परिग्रहे संज्ञा॥6॥)

सागारो उवजोगो, णाणे मग्गम्हि दंसणे मग्गे।

अणगारो उवजोगो, लीणो त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥7॥

(साकार उपयोगो, ज्ञानमार्गणायां दर्शनमार्गणायाम्।

अनाकार उपयोगो, लीन इति जिनैर्निर्दिष्टम्॥7॥)

1- गुणस्थानाधिकारः

जेहिं दु लक्खिज्जंते उदयादिसु संभवेहिं भावेहिं।

जीवा ते गुणसण्णा णिद्दिट्ठा सव्वदरसीहिं॥8॥

(यैस्तु लक्ष्यन्ते उदयादिषु सम्भवैर्भावैः।

जीवास्ते गुणसंज्ञा निर्दिष्टाः सर्वदर्शिभिः॥8॥)

मिच्छो सासण मिस्सो, अविरदसम्मो य देसविरदो य।

विरदा पमत्त इदरो, अपुव्व अणियट्टि सुहमो य॥9॥

(1 मिथ्यात्वं 2 सासनः 3 मिश्रः 4 अविरतसम्यक्त्वं च 5 देशविरतश्च।

6 विरताः प्रमत्तः 7 इतरः 8 अपूर्वः 9 अनिवृत्तिः 10 सूक्ष्मश्च॥9॥)

उवसंत खीणमोहो, सजोगकेवलिजिणो अजोगी य।

चउदस जीवसमासा कमेण सिद्धा य णादव्वा॥10॥

(11 उपशान्तः 12 क्षीणमोहः 13 सयोगकेवलिजिनः 14 अयोगी च।

चतुर्दश जीवसमासाः क्रमेण सिद्धाश्च ज्ञातव्याः॥10॥)

मिच्छे खलु ओदइओ, विदिये पुण पारणामिओ भावो।

मिस्से खओवसमिओ, अविरदसम्मम्हि तिण्णेव॥11॥

(मिथ्यात्वे खलु औदयिको, द्वितीये पुनः पारिणामिको भावः।

मिश्रे क्षायोपशमिकः, अविरतसम्यक्त्वे त्रय एव॥11॥)

एदे भावा णियमा, दंसणमोहं पडुच्च भणिदा हु।

चारित्तं णत्थि जदो, अविरदअंतेसु ठाणेसु॥12॥

(एते भावा नियमा, दर्शनमोहं प्रतीत्य भणिताः खलु।

चारित्रं नास्ति यतोऽविरतान्तेषु स्थानेषु॥12॥)

देसविरदे पमत्ते, इदरे व खओवसमियभावो दु।

सो खलु चरित्तमोहं, पडुच्च भणियं तहा उवरिं॥13॥

(देशविरते प्रमत्ते, इतरे च क्षायोपशमिकभावस्तु।

स खलु चरित्रमोहं, प्रतीत्य भणितस्तथा उपरि॥13॥)

तत्तो उवरिं उवसमभावो, उवसामगेसु खवगेसु।

खइओ भावो णियमा, अजोगिचरिमो त्ति सिद्धे य॥14॥

(तत उपरि उपशमभावः, उपशामकेषु क्षपकेषु।

क्षायिको भावो नियमात्, अयोगिचरिम इति सिद्धे च॥14॥)

मिच्छोदयेण मिच्छत्तमसद्दहणं तु तच्च-अत्थाणं।

एयंतं विवरीयं, विणयं संसयिदमण्णाणं॥15॥

(मिथ्यात्वोदयेन मिथ्यात्वमश्रद्धानं तु तत्त्वार्थानाम्।

एकान्तं विपरीतं विनयं संशयितमज्ञानम्॥15॥)

एयंत बुद्धदरसी, विवरीओ बम्ह तावसो विणओ।

इंदो वि य संसइयो, मक्कडियो चेव अण्णाणी॥16॥

(एकान्तो बुद्धदर्शी विपरीतो ब्रह्म तापसो विनयः।

इन्द्रोऽपि संशयितो मस्करी चैवाज्ञानी॥16॥)

मिच्छंतं वेदंतो, जीवो विवरीयदंसणो होदि।

ण य धम्मं रोचेदि हु, महुरं खु रसं जहा जरिदो॥17॥

(मिथ्यात्वं विदन् जीवो विपरीतदर्शनो भवति।

न च धर्मं रोचते हि, मधुरं खलु रसं यथा ज्वरितः॥17॥)

मिच्छाइट्ठी जीवो, उवइट्ठं पवयणं ण सद्दहदि।

सद्दहदि असब्भावं उवइट्ठं वा अणुवइट्ठं॥18॥

(मिथ्यादृष्टिर्जीवः उपदिष्टं प्रवचनं न श्रद्दधाति।

श्रद्दधाति असद्भावमुपदिष्टं वानुपदिष्टम्॥18॥)

आदिमसम्मत्तद्धा, समयादो छावलि त्ति वा सेसे।

अणअण्णदरुदयादो, णासियसम्मो त्ति सासणक्खो त्तो॥19॥

(आदिमसम्यक्त्वाद्धा, आसमयतः षडावलिरिति वा शेषे।

अनान्यतरोदयात्, नाशितसम्यक्त्व इति सासनाख्यः सः॥19॥)

सम्मत्तरयणपव्वयसिहरादो मिच्छभूमिसमभिमुहो।

णासियसम्मत्तो सो, सासणणामो मुणेयव्वो॥20॥

(सम्यक्त्वरत्नपर्वतशिखरात् मिथ्यात्वभूमिसमभिमुखः।

नाशितसम्यक्त्वः सः सासननामा मन्तव्यः॥20॥)

सम्मामिच्छुदयेण य, जत्तंतरसव्वघादिकज्जेण।

ण य सम्मं मिच्छं पि य, सम्मिस्सो होदि परिणामो॥21॥

(सम्यग्मिथ्यात्वोदयेन च, जात्यन्तरसर्वघातिकार्येण।

न च सम्यक्त्वं मिथ्यात्वमपि च, सम्मिश्रो भवति परिणामः॥21॥)

दहिगुडमिव वामिस्सं, पुहभावं णेव कारिदुं सक्कं।

एवं मिस्सयभावो, सम्मामिच्छो त्ति णादव्वो॥22॥

(दधिगुडमिव व्यामिश्रं, पृथग्भावं नैव कर्तुं शक्यम्।

एवं मिश्रकभावः, सम्यग्मिथ्यात्वमिति ज्ञातव्यम्॥22॥)

सो संजमं ण गिण्हदि, देसजमं वा ण बंधदे आउं।

सम्मं वा मिच्छं वा, पडिवज्जिय मरदि णियमेव॥23॥

(स संयमं न गृह्णाति, देशयमं वा न बध्नाति आयुः।

सम्यक्त्वं वा मिथ्यात्वं वा प्रतिपद्य म्रियते नियमेन॥23॥)

सम्मत्त-मिच्छपरिणामेसु जहिं आउगं पुरा बद्धं।

तहिं मरणं मरणंतसमुग्घादो वि य ण मिस्सम्मि॥24॥

(सम्यक्त्व-मिथ्यात्वपरिणामेषु यत्रायुष्कं पुरा बद्धम्।

तत्र मरणं मारणान्तसमुद्घातोऽपि च न मिश्रे॥24॥)

सम्मत्तदेसघादिस्सुदयादो वेदगं हवे सम्मं।

चलमलिनगाढं तं, णिच्चं कम्मक्खवणहेदु॥25॥

(सम्यक्त्वदेशघातेरुदयाद्वेदकं भवेत्सम्यक्त्वम्।

चलं मलिनमगाढं, तन्नित्यं कर्मक्षपणहेतु॥25॥)

सत्तण्हं उवसमदो, उवसमसम्मो खया दु खइयो य।

विदियकसायुदयादो, असंजदो होदि सम्मो य॥26॥

(सप्तानामुपशमतः उपशमसम्यक्त्वं क्षयातु क्षायिकं च।

द्वितीयकषायोदयादसंयतं भवति सम्यक्त्वं च॥26॥)

सम्माइट्ठी जीवो, उवइट्ठं पवयणं तु सद्दहदि।

सद्दहदि असब्भावं अजाणमाणो गुरुणियोगा॥27॥

(सम्यग्दृष्टिर्जीव उपदिष्टं, प्रवचनं तु श्रद्दधाति।

श्रद्दधात्यसद्भावमज्ञायमानो गुरुनियोगात्॥27॥)

सुत्तादो तं सम्मं, दरसिज्जंतं जदा ण सद्दहदि।

सो चेव हवइ मिच्छाइट्ठी जीवो तदो पहुदी॥28॥

(सूत्रात्तं सम्यक् दर्शयन्तं, यदा न श्रद्दधाति।

स चैव भवति मिथ्यादृष्टिर्जीवस्तदा प्रभृति॥28॥)

णो इंदियेसु विरदो, णो जीवे थावरे तसे वापि।

जो सद्दहदि जिणुत्तं, सम्माइट्ठी अविरदो सो॥29॥

(नो इन्द्रियेषु विरतो, नो जीवे स्थावरे त्रसे वापि।

यः श्रद्दधाति जिनोक्तं, सम्यग्दृष्टिरविरतः सः॥29॥)

पच्चक्खाणुदयादो, संजमभावो ण होदि णवरिं तु।

थोववदो होदि तदो, देसवदो होदि पंचमओ॥30॥

(प्रत्याख्यानोदयात्, संयमभावो न भवति नवरि तु।

स्तोकव्रतो भवति ततो, देशव्रतो भवति पंचमः॥30॥)

जो तसवहाउ विरदो, अविरदओ तह य थावरवहादो।

एक्कसमयम्हि जीवो, विरदाविरदो जिणेक्कमई॥31॥

(यस्त्रसवधाद्विरतः, अविरतस्तथा च स्थावरवधात्।

एकसमये जीवो विरताविरतो जिनैकमतिः॥31॥)

संजलणणोकसायाणुदयादो संजमो हवे जम्हा।

मलजणणपमादो वि य, तम्हा हु पमत्तविरदो सो॥32॥

(संज्वलननोकषायाणामुदयात् संयतो भवेद्यस्मात्।

मलजननप्रमादोऽपि च तस्मात् खलु प्रमत्तविरतः सः॥32॥)

वत्तावत्तपमादे, जो वसइ पमत्तसंजदो होदि।

सयलगुणसीलकलिओ, महव्वई चित्तलायरणो॥33॥

(व्यक्ताव्यक्तप्रमादे, यो वसति प्रमत्तसंयतो भवति।

सकलगुणशीलकलितो महाव्रती चित्रलाचरणः॥33॥)

विकहा तहा कसाया, इंदिय णिद्दा तहेव पणयो य।

चदु चदु पणमेगेगं होंति पमादा हु पण्णरस॥34॥

(विकथास्तथा कषाया, इन्द्रियनिद्रास्तथैव प्रणयश्च।

चतुः चतुः पञ्चैकैकं भवन्ति प्रमादाः खलु पञ्चदश॥34॥)

संखा तह पत्थारो, परियट्टण णट्ठ तह समुद्दिट्ठं।

एदे पंच पयारा, पमदसमुक्कित्तणे णेया॥35॥

(संख्या तथा प्रस्तारः परिवर्तनं नष्टं तथा समुद्दिष्टम्।

एते पञ्च प्रकाराः प्रमादसमुत्कीर्तने ज्ञेयाः॥35॥)

सव्वे पि पुव्वभंगा, उवरिमभंगेसु एक्कमेक्केसु।

मेलंति त्ति य कमसो, गुणिदे उप्पज्जदे संखा॥36॥

(सर्वेऽपि पूर्वभङ्गा, उपरिमभङ्गेषु एकैकेषु।

मिलन्ति इति च क्रमशो, गुणिते उत्पद्यते संख्या॥36॥)

पढमं पमदपमाणं, कमेण णिक्खिविय उवरिमाणं च।

पिंडं पडि एक्केकं, णिक्खित्ते होदि पत्थारो॥37॥

(प्रथमं प्रमादप्रमाणं, क्रमेण निक्षिप्य उपरिमाणं च।

पिण्डं प्रति एकैकं, निक्षिप्ते भवति प्रस्तारः॥37॥)

णिक्खित्तु विदियमेत्तं, पढमं तस्सुवरि विदियमेक्केक्कं।

पिंडं पडि णिक्खेओ, एवं सव्वत्थ कायव्वो॥38॥

(निक्षिप्त्वा द्वितीयमात्रं प्रथमं तस्योपरि द्वितीयमेकैकम्।

पिण्डं प्रति निक्षेप, एवं सर्वत्र कर्तव्यः॥38॥)

तदियक्खो अंतगदो आदिगदे संकमेदि विदियक्खो।

दोण्णि वि गंतूणंतं आदिगदे संकमेदि पढमक्खो॥39॥

(तृतीयाक्ष अन्तगत आदिगते, संक्रामति द्वितीयाक्षः।

द्वावपि गत्वान्तमादिगते, संक्रामति प्रथमाक्षः॥39॥)

पढमक्खो अन्तगदो, आदिगदे संकमेदि विदियक्खो।

दोण्णि वि गंतूणंतं आदिगदे संकमेदि तदियक्खो॥40॥

(प्रथमाक्ष अन्तगत आदिगते संक्रामति द्वितीयाक्षः।

द्वावपि गत्वान्तमादिगते, संक्रामति तृतीयाक्षः॥40॥)

सगमाणेहिं विभत्ते सेसं लक्खित्तु जाण अक्खपदं।

लद्धे रूवं पक्खिव सुद्धे अंते ण रूवपक्खेवो॥41॥

(स्वकमानैर्विभक्ते शेषं, लक्षयित्वा जानीहि अक्षपदम्।

लब्धे रूपं प्रक्षिप्य, शुद्धे अन्ते न रूपप्रक्षेपः॥41॥)

संठाविदूण रूवं, उवरीदो संगुणित्तु सगमाणे।

अवणिज्ज अणंकिदयं, कुज्जा एमेव सव्वत्थ॥42॥

(संस्थाप्य रूपमुपरितः संगुणित्वा स्वकमानम्।

अपनीयानङ्कितं कुर्यात् एवमेव सर्वत्र॥42॥)

इगिवितिचपणखपणदशपण्णरसं खवीसतालसट्ठी य।

संठविय पमदठाणे, णट्ठुद्दिट्ठं च जाण तिट्ठाणे॥43॥

(एकद्वित्रिचतुःपंचखपंचदशपंचदश खविंशच्चत्वारिंशत् षष्ठीश्च।

संस्थाप्य प्रमादस्थाने, नष्टौद्दिष्टे च जानीहि त्रिस्थाने॥43॥)

इगिवितिचखचडवारम खसोलरागट्ठदालचउसटिंठ्।

संठविय पमदठाणे, णट्ठुद्दिट्ठं च जाण तिट्ठाणे॥44॥

(एकद्वित्रिचतुःखचतुरष्टद्वादश, खषोडशरागाष्टचत्वारिंशिच्चतुःषष्टिम्।

संस्थाप्य प्रमादस्थाने नष्टौद्दिष्टे च जानीहि त्रिस्थाने॥44॥)

संजलणणोकसायाणुदओ मंदो जदा तदा होदि।

अपमत्तगुणो तेण य, अपमत्तो संजदो होदि॥45॥

(संज्वलननोकषायाणामुदयो मन्दो यदा तदा भवति।

अप्रमत्तगुणस्तेन च, अप्रमत्तः संयतो भवति॥45॥)

णट्ठासेसपमादो, वयगुणसीलोलिमंडिओ णाणी।

अणुवसमओ अखवओ झाणणिलीणो हु अपमत्तो॥46॥

(नष्टाशेषप्रमादो, व्रतगुणशीलावलिमण्डितो ज्ञानी।

अनुपशमक अक्षपको, ध्याननिलीनो हि अप्रमत्तः॥46॥)

इगवीसमोहखवणुवसमणणिमित्ताणि तिकरणाणि तहिं।

पढमं अधापवत्तं, करणं तु करेदि अपमत्तो॥47॥

(एकविंशतिमोहक्षपणोपशमननिमित्तानि त्रिकरणानि तेषु।

प्रथममधःप्रवृत्तं, करणं तु करोति अप्रमत्तः॥47॥)

जम्हा उवरिमभावा हेट्ठिमभावेहिं सरिसगा होंति।

तम्हा पढमं करणं अधापवत्तोत्ति णिद्दिट्ठं॥48॥

(यस्मादुपरितनभावा, अधस्तनभावैः सदृशका भवन्ति।

तस्मात्प्रथमं करणमधःप्रवृत्तमिति निर्दिष्टम्॥48॥)

अंतोमुहुत्तमेत्तो तक्कालो होदि तत्थ परिणामा।

लोगाणमसंखमिदा, उवरुवरिं सरिसवड्ढिगया॥49॥

(अन्तर्मुहूर्तमात्रस्तत्कालो भवति तत्र परिणामाः।

लोकानामसंख्यमिता, उपर्युपरिसदृशवृद्धिगताः॥49॥)

अंतोमुहुत्तकालं, गमिऊण अधापवत्तकरणं तं।

पडिसमयं सुज्झंतो, अपुव्वकरणं समल्लियइ॥50॥

(अन्तर्मुहूर्तकालं गमयित्वा, अधःप्रवृत्तकरणं तत्।

प्रतिसमयं शुद्ध्यन्, अपूर्वकरणं समाश्रयति॥50॥)

एदम्हि गुणट्ठाणे, विसरिससमयट्ठियेहि जीवेहिं।

पुव्वमपत्ता जम्हा, होंति अपुव्वा हु परिणामा॥51॥

(एतस्मिन् गुणस्थाने, विसदृशसमयस्थितैर्जीवैः।

पूर्वमप्राप्ता यस्मात्, भवन्ति अपूर्वा हि परिणामाः॥51॥)

भिण्णसमयट्ठियेहिं दु, जीवेहिं ण होदि सव्वदा सरिसो।

करणेहिं एक्कसमयट्ठियेहिं सरिसो विसरिसो वा॥52॥

(भिन्नसमयस्थितैस्तु जीवैर्न, भवति सर्वदा सादृश्यम्।

करणैरेकसमयस्थितैः सादृश्यं वैसादृश्यं वा॥52॥)

अंतोमुहुत्तमेत्ते पडिसमयमसंखलोगपरिणामा।

कमउड्ढा पुव्वगुणे, अणुकट्टी णत्थि णियमेण॥53॥

(अन्तर्मुहूर्तमात्रे, प्रतिसमयमसंख्यलोकपरिणामाः।

क्रमवृद्धा अपूर्वगुणे, अनुकृष्टिर्नास्ति नियमेन॥53॥)

तारिसपरिणामट्ठियजीवा हु जिणेहिं गलियतिमिरेहि।

मोहस्सपुव्वकरणा, खवणुवसमणुज्जया भणिया॥54॥

(तादृशपरिणामस्थितजीवा, हि जिनैर्गलिततिमिरैः।

मोहस्यापूर्वकरणाः क्षपणोपशमनोद्यताः भणिताः॥54॥)

णिद्दापयले नट्ठे सदि आऊ उवसमंति उवसमया।

खवयं ढुक्के खवया, णियमेण खवंति मोहं तु॥55॥

(निद्राप्रचले नष्टे, सति आयुषि उपशमयन्ति उपशमकाः।

क्षपकं ढौकमानाः क्षपका, नियमेन क्षपयन्ति मोहं तु॥55॥)

एकम्हि कालसमये, संठाणादीहिं जह णिवट्टंति।

ण णिवट्टंति तहावि य, परिणामेहि मिहो जेहिं॥56॥

होंति अणियट्टिणो ते, पडिसमयं जेस्सिमेक्कपरिणामा।

विमलयरझाणहुयवहसिहाहिं णिद्दड्ढकम्मवणा॥57॥ (जुम्मं)

(एकस्मिन् कालसमये, संस्थानादिभिर्यथा निवर्त्तन्ते।

न निवर्तन्ते तथापि च परिणामैर्मिथो यैः॥56॥

भवन्ति अनिवर्तिनस्ते प्रतिसमयं येषामेकपरिणामाः।

विमलतरध्यानहुतवहशिखाभिर्निर्दग्धकर्मवनाः॥57॥ (युग्मम्))

धुदकोसुंभयवत्थं, होहि जहा सुहमरायसंजुत्तं।

एवं सुहमकसाओ, सुहमसरागोत्ति णादव्वो॥58॥

(धौतुकौसुम्भवस्त्रं, भवति यथा सूक्ष्मरागसंयुक्तम्।

एवं सूक्ष्मकषायः सूक्ष्मसराग इति ज्ञातव्यः॥58॥)

पुव्वापुव्वप्फड्ढय, बादरसुहमगयकिट्टिअणुभागा।

हीणकमाणंतगुणेणवरादु वरं च हेट्ठस्स॥59॥

(पूर्वापूर्वस्पर्धकबादरसूक्ष्मगतकृष्टय्नुभागाः।

हीनक्रमा अनन्तगुणेन, अवरातु वरं चाधस्तनस्य॥59॥)

अणुलोहं वेदंतो, जीवो उवसामगो व खवगो वा।

सो सुहमसांपराओ, जहखादेणूणओ किं चि॥60॥

(अणुलोभं विदन् जीव उपशमको व क्षपको वा।

स सूक्ष्मसाम्परायो, यथाख्यातेनोनः किञ्चित्॥60॥)

कदकफलजुदजलं वा, सरए सरवाणियं व णिम्मलयं।

सयलोवसंतमोहो, उवसंतकसायओ होदि॥61॥

(कतक-फल-युतजलं वा, शरदि सरःपानीयं व निर्मलम्।

सकलोपशान्तमोह, उपशान्तकषायको भवति॥61॥)

णिस्सेसखीणमोहो, फलिहामलभायणुदयसमचित्तो।

खीणकसाओ भण्णदि, णिग्गंथो वीयरायेहिं॥62॥

(निःशेषक्षीणमोहः, स्फटिकामलभाजनोदकसमचित्तः।

क्षीणकषायो भण्यते, निर्ग्रन्थो वीतरागैः॥62॥)

केवलणाणदिवायरकिरण-कलावप्पणासियण्णाणो।

णवकेवललद्धुग्गम सुजणियपरमप्पववएसो॥63॥

(केवलज्ञानदिवाकर-किरणकलापप्रणाशिताज्ञानः।

नवकेवललब्ध्युद्गमसुजनितपरमात्मव्यपदेशः॥63॥)

असहायणाणदंसणसहिओ इदि केवली हु जोगेण।

जुत्तो ति सजोगजिण, अणाइणिहणारिसे उत्तो॥64॥

(असहायज्ञानदर्शनसहित इति केवली हि योगेन।

युक्त इति सयोगजिनः अनादिनिधनार्ष उक्तः॥64॥)

सीलेसिं संपत्तो, णिरुद्धणिस्सेसआसवो जीवो।

कम्मरयविप्पमुक्को, गयजोगो केवली होदि॥65॥

(शीलैश्यं संप्राप्तो, निरुद्धनिःशेषास्रवो जीवः।

कर्मरजोविप्रमुक्तो, गतयोगः केवली भवति॥65॥)

सम्मत्तुप्पत्तीये, सावयविरदे अणंतकम्मंसे।

दंसणमोहक्खवगे, कसायउवसामगे य उवसंते॥66॥

खवगे य खीणमोहे, जिणेसु दव्वा असंखगुणिदकमा।

तव्विवरीया काला, संखेज्जगुणक्कमा होंति॥67॥ (जुम्मं)

(सम्यक्त्वोत्पत्तौ श्रावकविरते अनन्तकर्मांशे।

दर्शनमोहक्षपके कषायोपशामके चोपशान्ते॥66॥

क्षपके च क्षीणमोहे, जिनेषु द्रव्याण्यसंख्यगुणितक्रमाणि।

तद्विपरीताः कालाः संख्यातगुणक्रमा भवन्ति॥67॥ (युग्मम्))

अट्ठविहकम्मवियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।

अट्ठगुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥68॥

(अष्टविधकर्मविकलाः शीतीभूता निरञ्जना नित्याः।

अष्टगुणा कृतकृत्या लोकाग्रनिवासिनः सिद्धाः॥68॥)

सदसिव संखो मक्कडि, बुद्धो णेयाइयो य वेसेसी।

ईसरमंडलिदंसण,-विदूसणट्ठं कयं एदं॥69॥

(सदाशिवः सांख्यः मस्करी बुद्धो नैयायिकश्च वैशेषिकः।

ईश्वरमण्डलिदर्शनविदूषणार्थं कृतमेतत्॥69॥)

इति गुणस्थानप्ररूपणानामा प्रथमोऽधिकारः।

2 - जीवसमास-प्ररूपणा

जेहि अणेया जीवा, णज्जंते बहुविहा वि तज्जादी।

ते पुण संगहिदत्था, जीवसमासा त्ति विण्णेया॥70॥

(यैरनेके जीवा नयन्ते, बहुविधा अपि तज्जातयः।

ते पुनः संगृहीतार्था, जीवसमासा इति विज्ञेयाः॥70॥)

तसचदुजुगाण मज्झे, अविरुद्धेहिं जुदजादिकम्मुदये।

जीवसमासा होंति हु, तब्भवसारिच्छसामण्णा॥71॥

(त्रसचतुर्युगलानां मध्ये, अविरुद्धैर्युतजातिकर्मोदये।

जीवसमासा भवन्ति हि, तद्भवसादृश्यसामान्याः॥71॥)

बादरसुहुमेइंदिय, वितिचउरिंदिय असण्णिसण्णी य।

पज्जत्तापज्जत्ता, एवं ते चोद्दसा होंति॥72॥

(बादरसूक्ष्मैकेन्द्रियद्वित्रिचतुरिन्द्रियासंज्ञिसंज्ञिनश्च।

पर्याप्तापर्याप्ता एवं ते चतुर्दश भवन्ति॥72॥)

भूआउतेउवाऊ, णिच्चचदुग्गदिणिगोदथूलिदरा।

पत्तेयपदिट्ठिदरा, तस पण पुण्णा अपुण्णदुगा॥73॥

(भ्वप्तेजोवायुनित्यचतुर्गतिनिगोदस्थूलेतराः।

प्रत्येकप्रतिष्ठेतराः, त्रसपंच पूर्णा अपूर्णद्विकाः॥73॥)

ठाणेहिं वि जोणीहिं वि, देहोग्गाहणकुलाण भेदेहिं।

जीवसमासा सव्वे, परूविदव्वा जहाकमसो॥74॥

(स्थानैरपि योनिभिरपि, देहावगाहनकुलानां भेदैः।

जीवसमासाः सर्वे, प्ररूपितव्या यथाक्रमशः॥74॥)

सामण्णजीव तसथावरेसु इगिविंगलसयलचरिमदुगे।

इंदियकाये चरिमस्स य दुतिचदुपणगभेदजुदे॥75॥

(सामान्यजीवः त्रसस्थावरयोः, एकविकलसकलचरिमद्विके।

इन्द्रियकाययोः चरमस्य च, द्वित्रिचतुःपञ्चभेदयुते॥75॥)

पणजुगले तससहिये, तसस्स दुतिचदुरपणगभेदजुदे।

छद्दुगपत्तेयम्हि य, तसस्स तियचदुरपणगभेदजुदे॥76॥

(पंचयुगले त्रससहिते त्रसस्य द्वित्रिचतुःपंचकभेदयुते।

षड्द्विकप्रत्येके च, त्रसस्य त्रिचतुःपंचभेदयुते॥76॥)

सगजुगलम्हि तसस्स य, पणभंगजुदेसु होंति उणवीसा।

एयादुणवीसो त्ति य, इगिबितिगुणिदे हवे ठाणा॥77॥

(सप्तयुगले त्रसस्य च-पंचभंगयुतेषु भवन्ति एकोनविंशतिः।

एकादेकोनविंशतिरिति च, एकद्वित्रिगुणिते भवेयुः स्थानानि॥77॥)

सामण्णेण तिपंती, पढमा विदिया अपुण्णगे इदरे।

पज्जत्ते लद्धिअपज्जत्तेऽपढमा हवे पंती॥78॥

(सामान्येन त्रिपंक्तयः, प्रथमा द्वितीया अपूर्णके इतरस्मिन्।

पर्याप्ते लब्ध्यपर्याप्तेऽप्रथमा भवेत् पंक्तिः॥78॥)

इगिवण्णं इगिविगले, असण्णिसण्णिगयजलथलखगाणं।

गब्भभवे सम्मुच्छे, दुतिगं भोगथलखेचरे दो दो॥79॥

(एकपञ्चाशत् एकविकले, असंज्ञिसंज्ञिगतजलस्थलखगानाम्।

गर्भभवे सम्मूर्च्छे द्वित्रिकं भोगस्थलखेचरे द्वौ द्वौ॥79॥)

अज्जवमलेच्छमणुए, तिदु भोगकुभोगभूमिजे दो दो।

सुरणिरये दो दो इदि, जीवसमासा हु अडणउदी॥80॥

(आर्यम्लेच्छमनुष्ययोस्त्रयो द्वौ भोगकुभोगभूमिजयोर्द्वौ द्वौ।

सुरनिरययोर्द्वौ द्वौ इति, जीवसमासा हि अष्टानवतिः॥80॥)

संखावत्तयजोणी, कुम्मुण्णयवंसपत्तजोणी य।

तत्थ य संखावत्ते, णियमा दु विवज्जदे गब्भो॥81॥

(शंखावर्तकयोनिः, कूर्मोन्नतवंशपत्रयोनी च।

तत्र च शंखावर्ते, नियमात्तु विवर्ज्यते गर्भः॥81॥)

कुम्मुण्णयजोणीये, तित्थयरा दुविहचक्कवट्टी य।

रामा वि य जायंते, सेसाए सेसगजणो दु॥82॥

(कूर्मोन्ननतयोनौ, तीर्थकरा द्विविधचक्रवर्तिनश्च।

रामा अपि च जायन्ते, शेषायां शेषकजनस्तु॥82॥)

जम्मं खलु सम्मुच्छण, गब्भुववादा दु होदि तज्जोणी।

सच्चित्तसीदसंउडसेदर मिस्सा य पत्तेयं॥83॥

(जन्म खलु सम्मूर्छनगर्भोपपादास्तु भवति तद्योनयः।

सचित्तशीतसंवृतसेतरमिश्राश्च प्रत्येकम्॥83॥)

पोतजरायुजअंडज, जीवाणं गब्भ देवणिरयाणं।

उववाद सेसाणं, सम्मुच्छणयं तु णिद्दिट्ठं॥84॥

(पोतजरायुजाण्डजजीवानां गर्भो देवनारकाणाम्।

उपपादः शेषाणां सम्मूर्छनकं तु निर्दिष्टम्॥84॥)

उववादे अच्चित्तं, गब्भे मिस्सं तु होदि सम्मुच्छे।

सच्चितं अच्चित्तं, मिस्सं च य होदि जोणी हु॥85॥

(उपपादे अचित्ता गर्भे मिश्रा तु भवति सम्मूर्च्छे।

सचित्ता अचित्ता मिश्रा च च भवति योनिर्हि॥85॥)

उववादे सीदुसणं, सेसे सीदुसणमिस्सयं होदि।

उववादेयक्खेसु य, संउड वियलेसु विउलं तु॥86॥

(उपपादे शीतोष्णे शेषे शीतोष्णमिश्रका भवन्ति।

उपपादैकाक्षेषु च संवृता विकलेषु विवृता तु॥86॥)

गब्भजजीवाणं पुण, मिस्सं णियमेण होदि जोणी हु।

सम्मुच्छणपंचक्खे, वियलं वा विउलजोणी हु॥87॥

(गर्भजजीवानां पुनः मिश्रा नियमेन भवति यॊनिर्हि।

सम्मूर्छनपंचाक्षेषु विकलं वा विवृतयॊनिर्हि॥87॥)

सामण्णेण य एवं, णव जोणीओ हवंति वित्थारे।

लक्खाण चदुरसीदी, जोणीओ हॊंति णियमेण॥88॥

(सामान्येन चैवं नव यॊनयॊ भवन्ति विस्तारे।

लक्षाणां चतुरशीतिः यॊनयॊ भवन्ति नियमेन॥88॥)

णिच्चिदरधादुसत्त य, तरुदस वियलिंदियेसु छच्चेव।

सुरणिरयतिरियचउरो, चोद्दस मणुए सदसहस्सा॥89॥

(नित्येतरधातुसप्त च, तरुदश विकलेन्द्रियेषु षट् चैव।

सुरनिरयतिर्यक्चतस्रः, चतुर्दश मनुष्ये शतसहस्राः॥89॥)

उववादा सुरणिरया, गब्भजसम्मुच्छिमा हु णरतिरिया।

सम्मुच्छिमा मणुस्साऽपज्जत्ता एयवियलक्खा॥90॥

(उपपादाः सुरनिरयाः गर्भजसम्मूच्छिमा हि नरतिर्यञ्चः।

सम्मूर्च्छिमा मनुष्या, अपर्याप्ता एकविकलाक्षाः॥90॥)

पंचक्खितरिक्खाओ, गब्भजसम्मुच्छिमा तिरिक्खाणं।

भोगभुमा गब्भभवा, नरपुण्णा गब्भजा चेव॥91॥

(पंचाक्षतिर्यंचॊ गर्भजसम्मुर्छिमा तिरश्चाम्।

भॊगभूमा गर्भभवाः, नरपूर्णा गर्भजाश्चैव॥91॥)

उववादगब्भजेसु य लद्धिअपज्जत्तगा ण णियमेण॥

णरसम्मुच्छिमजीवा, लद्धिअपज्जत्तगा चेव॥92॥

(उपपादगर्भजेषु च, लब्ध्यपर्याप्तका न नियमेन।

नरसम्मूर्छिमजीवा, लब्ध्यपर्याप्तकाश्चैव॥92॥)

णेरइया खलु संढा, णरतिरिये तिण्ण होंति सम्मुच्छा।

संढा सुरभोगभुमा, पुरिसिच्छीवेदगा चेव॥93॥

(नैरयिकाः खलु षण्ढाः, नरतिरश्चोस्त्रयो भवन्ति सम्मूर्च्छाः।

षण्ढाः सुरभोगभूमाः पुरुषस्त्रीवेदकाश्चैव॥93॥)

सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जादस्स तदियसमयम्हि।

अंगुलअसंखभागं, जहण्णमुक्कस्सयं मच्छे॥94॥

(सूक्ष्मनिगोदापर्याप्तकस्य जातस्य तृतीयसमये।

अंगुलासंख्यभागं, जघन्यमुत्कृष्टकं मत्स्ये॥94॥)

साहियसहस्समेकं, बारं कोसूणमेकमेक्कं च।

जोयणसहस्सदीहं, पम्मे वियले महामच्छे॥95॥

(साधिकसहस्रमेकं, द्वादश क्रोशोनमेकमेकं च।

योजनसहस्रदीर्घं, पद्मे विकले महामत्स्ये॥95॥)

वितिचपपुण्णजहण्णं, अणुंधरीकुंथुकाणमच्छीसु।

सिच्छयमच्छे विंदंगुलसंखं संखगुणिदकमा॥96॥

(द्वित्रिचपपूर्णजघन्यमनुंधरीकुंथुकाणमक्षिकासु।

सिक्थकमत्स्ये वृन्दांगुलसंख्यं संख्यगुणितक्रमाः॥96॥)

सुहुमणिवातेआभू, वातेआपुणिपदिट्ठिदं इदरं।

वितिचपमादिल्लाणं, एयाराणं तिसेढीय॥97॥

(सूक्ष्मनिवातेआभू, वाते अपुनिप्रतिष्ठितमितरत्।

द्वित्रिचपमाद्यानामेकादशानां त्रिश्रेणयः॥97॥)

अपदिट्ठदपत्तेयं, वितिचपतिचविअपदिट्ठदं सयलं।

तिचविअपदिट्ठिदं च य, सयलं बादालगुणिदकमा॥98॥

(अप्रतिष्ठितप्रत्येकं द्वित्रिचपत्रिचद्व्यप्रतिष्ठितं सकलम्।

त्रिचद्व्यप्रतिष्ठितं च च सकलं द्वाचत्वारिंशद्गुणितक्रमाः॥98॥)

अवरमपुण्णं पढमं, सोलं पुण पढमविदियतदियोली।

पुण्णिदरपुण्णयाणं, जहण्णमुक्कस्समुक्कस्सं॥99॥

(अवरमपूर्णं प्रथमे षोडश पुनः प्रथमद्वितीयतृतीयावलिः।

पूर्णेतरपूर्णानां जघन्यमुत्कृष्टमुत्कृष्टम्॥99॥)

पुण्णजहण्णं तत्तो, वरं अपुण्णस्स पुण्णउक्कस्सं।

वीपुण्णजहण्णो त्ति असंखं संखं गुणं तत्तो॥100॥

(पूर्णजघन्यं ततो वरमपूर्णस्य पूर्णोत्कृष्टम्।

द्विपूर्णजघन्यमिति असंख्यं संख्यं गुणं ततः॥100॥)

सुहुमेदरगुणगारो, आवलिपल्लाअसंखभागो दु।

सट्ठाणे सेढिगया, अहिया तत्थेकपडिभागो॥101॥

(सूक्ष्मेतरगुणकार आवलिपल्यासंख्येयभागस्तु।

स्वस्थाने श्रेणिगता अधिकास्तत्रैकप्रतिभागः॥101॥)

अवरुबरि इगिपदेसे, जुदे असंखेज्जभागवड्ढीए।

आदी णिरंतरमदो, एगेगपदेसपरिवड्ढी॥102॥

(अवरोपरि एकप्रदेशे युते असंख्यातभागवृद्धेः।

आदिः निरन्तरमतः एकैकप्रदेशपरिवृद्धिः॥102॥)

अवरोग्गाहणमाणे, जहण्णपरिमिदअसंखरासिहिदे।

अवरस्सुवरिं उड्ढे, जेट्ठमसंखेज्जभागस्य॥103॥

(अवरावगाहनाप्रमाणे जघन्यपरिमितासंख्यातराशिहृते।

अवरस्योपरि वृद्धे ज्येष्ठमसंख्यातभागस्य॥103॥)

तस्सुवरि इगिपदेसे, जुदे अवत्तव्वभागपारंभो।

वरसंखमवहिदवरे, रूऊणे अवरउवरि जुदे॥104॥

(तस्योपरि एकप्रदेशे युते अवक्तव्यभागप्रारम्भः।

वरसंख्यातावहितावरे रूपोने अवरोपरि युते॥104॥)

तव्वड्ढीए चरिमो, तस्सुवरिं रूवसंजुदे पढमा।

संखेज्जभागउड्ढी, उवरिमदो रूवपरिवड्ढी॥105॥

(तद्वृद्धेशचरमः तस्योपरि रूपसंयुते प्रथमा।

संख्यातभागवृद्धिः उपर्यतो रूपपरिवृद्धिः॥105॥)

अवरद्धे अवरूवरिं, उड्ढे तव्वड्ढिपरिसमत्ती हु।

रूवे तदुवरि उड्ढे, होदि अवत्तव्वपढमपदं॥106॥

(अवरार्द्धे अपरोपरिवृद्धे तद्वृद्धिपरिसमाप्तिर्हि।

रूपे तदुपरि वृद्धं भवति अवक्तव्यप्रथमपदम्॥106॥)

रूऊणवरे अवरुस्सुवरिं संवड्ढिदे तदुक्कस्सं।

तम्हि पदेसे उड्ढे, पढमा संखेज्जगुणवड्ढी॥107॥

(रूपोनावरे अवरस्योपरि संवर्द्धिते तदुत्कृष्टम्।

तस्मिन् प्रदेशे वृद्धे प्रथमा संख्यातगुणवृद्धिः॥107॥)

अवरे वरसंखगुणे, तच्चरिमो तम्हि रूवसंजुत्ते।

उग्गाहणम्हि पढमा होदि अवत्तव्वगुणवड्ढी॥108॥

(अवरे वरसंख्यगुणे तच्चरमः तस्मिन् रूपसंयुक्ते।

अवगाहने प्रथमा भवति अवक्तव्यगुणवृद्धिः॥108॥)

अवरपरित्तासंखेणवरं संगुणिय रूवपरिहीणे।

तच्चरिमो रूवजुदे तम्हि असंखेज्जगुणपढमं॥109॥

(अवरपरीतासंख्येनावरं संगुण्य रूपपरिहीने।

तच्चरमो रूपयुते तस्मिन् असंख्यातगुणप्रथमम्॥109॥)

रूवुत्तरेण तत्तो, आवलियासंखभागगुणगारे।

तप्पाउग्गे जादे, वाउस्सोग्गाहणं कमसो॥110॥

(रूपोत्तरेण तत आवलिकासंख्यभागगुणकारे।

तत्प्रायोग्ये जाते वायोरवगाहनं क्रमशः॥110॥)

एवं उवरि वि णेओ, पदेसवड्ढिक्कमो जहाजोग्गं।

सव्वत्थेक्केकम्हि य, जीवसमासाण विच्चाले॥111॥

(एवमुपर्यपि ज्ञेयः प्रदेशवृद्धिक्रमो यथायोग्यम्।

सर्वत्रैकैकस्मिंश्च जीवसमासानामन्तराले॥111॥)

हेट्ठा जेसिं जहण्णं, उवरिं उक्कस्सयं हवे जत्थ।

तत्थंतरगा सव्वे, तेसिं उग्गाहणविअप्पा॥112॥

(अधस्तनं येषां जघन्यमुपर्युत्कृष्टकं भवेद्यत्र।

तत्रान्तरगाः सर्वे तेषामवगाहनविकल्पाः॥112॥)

वावीस सत्त तिण्णि य, सत्त य कुलकोडिसयसहस्साहिं।

णेया पुढविदगागणि, वाउक्कायाण परिसंखा॥113॥

(द्वाविंशतिः सप्त त्रीणि च सप्त च कुलकोटिशतसहस्राणि।

ज्ञेया पृथिवीदकाग्निवायुकायिकानां परिसंख्या॥113॥)

कोडिसयसहस्साइं, सत्तट्ठ णव य अट्ठवीसाइं।

वेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-हरिदकायाणं॥114॥

(कोटिशतसहस्राणि सप्ताष्ट नव च अष्टाविंशतिः।

द्वीन्द्रिय-त्रीन्द्रिय-चतुरिन्द्रिय-हरितकायानाम्॥114॥)

अद्धतेरस बारस दसयं कुलकोडिसदसहस्साइं।

जलचर-पक्खि-चउप्पय-उरपरिसप्पेसु णव होंति॥115॥

(अर्धत्रयोदश द्वादश दशकं कुलकोटिशतसहस्राणि।

जलचर-पक्षि चतुष्पदोरुपरिसर्पेषु नव भवन्ति॥115॥)

छप्पंचाधियवीसं, बारसकुलकोडिसदसहस्साइं।

सुर-णेरइय-णराणं जहाकमं होंति णेयाणि॥116॥

(षट्पञ्चाधिकविंशतिः द्वादश कुलकोटिशतसहस्राणि।

सुर-नैरयिक-नराणां यथाक्रमं भवन्ति ज्ञेयानि॥116॥)

एया य कोडिकोडी, सत्ताणउदी य सदसहस्साइं।

पण्णं कोडिसहस्सा, सव्वंगीणं कुलाणं य॥117॥

(एका च कोटिकोटी सप्तनवतिश्च शतसहस्राणि।

पञ्चाशत् कोटि सहस्राणि सर्वाङ्गिनां कुलानां च॥117॥)

इति जीवसमासप्ररूपणो नाम द्वितीयोऽधिकारः।

3 - पर्याप्ति-प्ररूपणा

जह पुण्णापुण्णाइं, गिह-घड-वत्थादियाइं दव्वाइं।

तह पुण्णिदरा जीवा, पज्जत्तिदरा मुणेयव्वा॥118॥

(यथा पूर्णापूर्णानि गृहघटवस्त्रादिकानि द्रव्याणि।

तथा पूर्णतराः जीवाः पर्याप्तेतराः मन्तव्याः॥118॥)

आहार-सरीरिंदिय, पज्जत्ती आणपाण-भास-मणो।

चत्तारि पंच छप्पि य, एइंदिय-वियल-सण्णीणं॥119॥

(आहार-शरीरेन्द्रियाणि पर्याप्तयः आनप्राणभाषामनांसि।

चतस्रः पञ्च षडपि च एकेन्द्रिय-विकल-संज्ञिनाम्॥119॥)

पज्जत्तीपट्ठवणं जुगवं, तु कमेण होदि णिट्ठवणं।

अंतोमुहुत्तकालेणहियकमा तत्तियालावा॥120॥

(पर्याप्तिप्रस्थापनं युगपत्तु क्रमेण भवति निष्ठापनम्।

अन्तर्मुहूर्तकालेन अधिकक्रमास्तावदालापात्॥120॥)

पज्जत्तस्स य उदये, णियणियपज्जत्तिट्ठिदो होदि।

जाव सरीरमपुण्णं, णिव्वत्ति अपुण्णगो ताव॥121॥

(पर्याप्तस्य च उदये निजनिजपर्याप्तिनिष्ठितो भवति।

यावत् शरीरमपूर्णं निर्वृत्यपूर्णकस्तावत्॥121॥)

उदये दु अपुण्णस्स य, सगसगपज्जत्तियं ण णिट्ठवदि।

अंतोमुहुत्तमरणं, लद्धिअपज्जत्तगो सो दु॥122॥

(उदये तु अपूर्णस्य च स्वकस्वकपर्याप्तीर्न निष्ठापयति।

अन्तर्मुहूर्तमरणं लब्ध्यपर्याप्तकः स तु॥122॥)

तिण्णिसया छत्तीसा, छवट्ठिसहस्सगाणि मरणाणि।

अंतोमुहुत्तकाले, तावदिया चेव खुद्दभवा॥123॥

(त्रीणि शतानि षट्त्रिंशत् षट्सहस्रकाणि मरणानि।

अन्तर्मुहूर्तकाले तावन्तश्चैव क्षुद्रभवाः॥123॥)

सीदी सट्ठी तालं, वियले चउवीस होंति पंचक्खे।

छावट्ठिं च सहस्सा, सयं च वत्तीसमेयक्खे॥124॥

(अशीतिः षष्टिः चत्वारिंशद्विकले चतुर्विंशतिर्भवन्ति पंचाक्षे।

षट्षष्टिश्च सहस्राणि शतं च द्वात्रिंशमेकाक्षे॥124॥)

पुढविदगागणिमारुद, साहारणथूलसुहमपत्तेया।

एदेसु अपुण्णेसु य, एक्केक्के बार खं छक्कं॥125॥

(पृथ्वीदकाग्निमारुतसाधारणस्थूलसूक्ष्मप्रत्येकाः।

एतेषु अपूर्णेषु च एकैकस्मिन् द्वादश खं षट्कम्॥125॥)

पज्जत्तसरीरस्स य, पज्जत्तुदयस्स कायजोगस्स।

जोगिस्स अपुण्णत्तं, अपुण्णजोगो त्ति णिद्दिट्ठं॥126॥

(पर्याप्तशरीरस्य य, पर्याप्त्युदयस्य काययोगस्य।

यॊगिनॊऽपूर्णत्वमपूर्णयॊग इति निर्दिष्टम्॥126॥)

लद्धिअपुण्णं मिच्छे, तत्थ वि विदिये चउत्थ-छट्ठे य।

णिव्वत्तिअपज्जत्ती, तत्थ वि सेसेसु पज्जत्ती॥127॥

(लब्ध्यपूर्णं मिथ्यात्वे तत्रापि द्वितीये चतुर्थषष्ठे च।

निर्वृत्यपर्याप्तिः तत्रापि शेषेषु पर्याप्तिः॥127॥)

हेट्ठिमछप्पुढवीणं, जोइसिवणभवणसव्वइत्थीणं।

पुण्णिदरे ण हि सम्मो, ण सासणो णारयापुण्णे॥128॥

(अधःस्तनषट्पृथ्वीनां ज्यॊतिष्कवनभवनसर्वस्त्रीणाम्।

पूर्णेतरस्मिन् न हि सम्यक्त्वं न सासनो नारकापूर्णे॥128॥)

इति पर्याप्तिप्ररूपणो नाम तृतीयोऽधिकारः।

4 - प्राणप्ररूपणा

बाहिरपाणेहिं जहा, तहेव अब्भंतरेहिं पाणेहिं।

पाणंति जेहिं जीवा, पाणा ते होंति णिद्दिट्ठा॥129॥

(बाह्यप्राणैर्यथा तथैवाभ्यन्तरैः प्राणैः।

प्राणन्ति यैर्जीवाः प्राणास्ते भवन्ति निर्दिष्टाः॥129॥)

पंच वि इंदियपाणा, मणवचिकायेसु तिण्णि बलपाणा।

आणापाणप्पाणा, आउगपाणेण होंति दस पाणा॥130॥

(पञ्चापि इन्द्रियप्राणाः मनोवचःकायेषु बलप्राणाः।

आनापानप्राणा आयुष्कप्राणेन भवन्ति दश प्राणाः॥130॥)

बीरियजुदमदिखउवसमुत्था णोइंदियेंदियेसु बला।

देहुदये कायाणा, वचीबला आउ आउदये॥131॥

(वीर्ययुतमतिक्षयोपशमोत्था नोइन्द्रियेन्द्रियेषु बलाः।

देहोदये कायानौ वचोबल आयुः आयुरुदये॥131॥)

इंदियकायाऊणि य, पुण्णापुण्णेसु पुण्णगे आणा।

बीइंदियादिपुण्णे, वचीमणो सण्णिपुण्णेव॥132॥

(इन्द्रियकायायूंषि च पूर्णापूर्णेषु पूर्णके आनाः।

द्वीन्द्रियादिपूर्ण वचः मनः संज्ञिपूर्णे एव॥132॥)

दस सण्णीणं पाणा, सेसेगूणंतिमस्स वेऊणा।

पज्जत्तेसिदरेसु य, सत्त दुगे सेसगेगूणा॥133॥

(दश संज्ञिनां प्राणाः शेषैकोनमन्तिमस्य व्यूनाः।

पर्याप्तेष्वितरेषु च सप्त द्विके शेषकैकोनाः॥133॥)

इति प्राणप्ररूपणो नाम चतुर्थोऽधिकारः।

5 - संज्ञा प्ररूपणा

इह जाहि बाहिया वि य, जीवा पावंति दारूणं दुक्खं।

सेवंता वि य उभये, ताओ चत्तारि सण्णाओ॥134॥

(इह याभिर्बाधिता अपि च जीवाः प्राप्नुवन्ति दारुणं दुःखम्।

सेवमाना अपि च उभयस्मिन् ताश्चतस्रः संज्ञाः॥134॥)

आहरदंसणेण य, तस्सुवजोगेण ओमकोठाए।

सादिदरुदीरणाए, हवदि हु आहारसण्णा हु॥135॥

(आहारदर्शनेन च तस्योपयोगेन अवमकोष्ठतया।

सातेतरोदीरणया भवति हि आहारसंज्ञा हि॥135॥)

अइभीमदंसणेण य, तस्सुवजोगेण ओमसत्तीए।

भयकम्मुदीरणाए, भयसण्णा जायदे चदुहिं॥136॥

(अतिभीमदर्शनेन च तस्योपयोगेन अवमसत्वेन।

भयकर्मोदीरणया भयसंज्ञा जायते चतुर्भिः॥136॥)

पणिदरसभोयणेण य, तस्सुवजोगे कुसील सेवाए।

वेदस्सुदीरणाए, मेहुणसण्णा हवदि एवं॥137॥

(प्रणीतरसभोजनेन च तस्योपयोगे कुशीलसेवया।

वेदस्योदीरणया मैथुनसंज्ञा भवति एवम्॥137॥)

उवयरणदंसणेण य, तस्सुवजोगेण मुच्छिदाए य।

लोहस्सुदीरणाए, परिग्गहे जायदे सण्णा॥138॥

(उपकरणदर्शनेन च तस्योपयोगेन मूर्च्छिताये च।

लोभस्योदीरणया परिग्रहे जायते संज्ञा॥138॥)

णट्ठपमाए पढमा, सण्णा ण हि तत्थ कारणाभावा।

सेसा कम्मत्थित्तेणुवयारेणत्थि ण हि कज्जे॥139॥

(नष्टप्रमादे प्रथमा संज्ञा न हि तत्र कारणाभावात्।

शेषाः कर्मास्तित्वेनोपचारेण सन्ति न हि कार्ये॥139॥)

इति संज्ञाप्ररूपणो नाम पञ्चमोऽधिकारः।

6 - मार्गणा महाधिकारः

धम्मगुणमग्गणाहयमोहारिबलं जिणं णमंसित्ता।

मग्गणमहाहियारं, विविहहियारं भणिस्सामो॥140॥

(धर्मगुणमार्गणाहतमोहारिबलं जिनं नमस्कृत्य।

मार्गणामहाधिकारं विविधाधिकारं भणिष्यामः॥140॥)

जाहि व जासु व जीवा, मग्गिज्जंते जहा तहा दिट्ठा।

ताओ चोदस जाणे सुयणाणे मग्गणा होंति॥141॥

(यभिर्वा यासु वा जीवा मृग्यन्ते यथा तथा दृष्टाः।

ताश्चतुर्दश जानीहि श्रुतज्ञाने मार्गणा भवन्ति॥141॥)

गइइंदियेसु काये, जोगे वेदे कसायणाणे य।

संजमदंसणलेस्सा, भवियासम्मत्तसण्णि आहारे॥142॥

(गतीन्द्रियेषु काये योगे वेदे कषायज्ञाने च।

संयमदर्शनलेश्याभव्यतासम्यक्त्वसंज्ञ्याहारे॥142॥)

उवसम सुहमाहारे, वेगुव्वियमिस्स णरअपज्जत्ते।

सासणसम्मे मिस्से, सांतरगा मग्गणा अट्ठ॥143॥

(उपशम सूक्ष्माहारे वैगूर्विकमिश्रनरापर्याप्ते।

सासनसम्यक्त्वे मिश्रे सान्तरका मार्गणा अष्ट॥143॥)

सत्त दिणा छम्मासा, वासपुधत्तं च बारस मुहुत्ता।

पल्लासंखं तिण्हं, वरमवरं एगसमयो दु॥144॥

(सप्त दिनानि षण्मासा वर्षपृथक्त्वं च द्वादश मुहूर्ताः।

पल्यासंख्यं त्रयाणां वरमवरमेकसमयस्तु॥144॥)

पढमुवसमसहिदाए, विरदाविरदीए चोद्दसा दिवसा।

विरदीए पण्णरसा, विरहिदकालो दु बोधव्वो॥145॥

(प्रथमोपशमसहिताया विरताविरतेश्चतुर्दश दिवसाः।

विरतेः पंचदश विरहितकालस्तु बोद्धव्यः॥145॥)

गइउदयजपज्जाया, चउगइगमणस्स हेउ वा हु गई।

णारयतिरिक्खमाणुसदेवगइ त्ति य हवे चदुधा॥146॥

(गत्युदयजपर्यायः चतुर्गतिगमनस्य हेतुर्वा हि गतिः।

नारकतिर्यग्मानुषदेवगतिरिति च भवेत् चतुर्धा॥146॥)

ण रमंति जदो णिच्चं, दव्वे खेत्ते य काल-भावे य।

अण्णोण्णेहिं य जम्हा, तम्हा ते णारया भणिया॥147॥

(न रमन्ते यतो नित्यं द्रव्ये क्षेत्रे च कालभावे च।

अन्योन्यैश्च यस्मात्तस्मात्ते नारता भणिताः॥147॥)

तिरियंति कुडिलभावं, सुविउलसण्णा णिगिट्ठिमण्णाणा।

अच्चंतपावबहुला, तम्हा तेरिच्छया भणिया॥148॥

(तिरोञ्चन्ति कुटिलभावं सुविवृत्तसंज्ञा निकृष्टमज्ञानाः।

अत्यन्तपापबहुलास्तस्मात्तैरश्चका भणिताः॥148॥)

मण्णंति जदो णिच्चं, मणेण णिउणा मणुक्कडा जम्हा।

मण्णुब्भवा य सव्वे, तम्हा ते माणुसा भणिदा॥149॥

(मन्यन्ते यतो नित्यं मनसा निपुणा मनसोत्कटा यस्मात्।

मनूद्भवाश्च सर्वे तस्मात्ते मानुषा भणिताः॥149॥)

सामण्णा पंचिंदी, पज्जत्ता जोणिणी अपज्जत्ता।

तिरिया णरा तहा वि य, पंचिंदियभंगदो हीणा॥150॥

(सामान्याः पंचेन्द्रियाः पर्याप्ताः योनिमत्यः अपर्याप्ताः।

तिर्यञ्चो नरास्तथापि च पंचेन्द्रियभंगतो हीनाः॥150॥)

दीव्वंति जदो णिच्चं, गुणेहिं अट्ठेहिं दिव्वभावेहिं।

भासंतदिव्वकाया, तम्हा ते वण्णिया देवा॥151॥

(दीव्यन्ति यतो नित्यं गुणैरष्टाभिर्दिव्यभावैः।

भासमानदिव्यकायाः तस्मात्ते वर्णिता देवाः॥151॥)

जाइजरामरणभया, संजोगविजोगदुक्खसण्णाओ।

रोगादिगा य जिस्से, ण संति सा होदि सिद्धगई॥152॥

(जातिजरामरणभया संयोगवियोगदुःखसंज्ञाः।

रोगादिकाश्च यस्यां न सन्ति सा भवति सिद्धगतिः॥152॥)

सामण्णा णेरइया, घणअंगुलविदियमूलगुणसेढी।

विदियादि वारदसअड, छत्तिदुणिजपदहिदा सेढी॥153॥

(सामान्या नैरयिका घनांगुलद्वितीयमूलगुणश्रेणी।

द्वितीयादिः द्वादशदशाष्टषट्त्रिद्विनिजपदहिता श्रेणी॥153॥)

हेट्ठिमछप्पुढवीणं, रासिविहीणो दु सव्वरासी दु।

पढमावणिम्हि रासी, णेरइयाणं तु णिद्दिट्ठो॥154॥

(अधस्तनषट्पृथ्वीनां राशिविहीनस्तु सर्वराशिस्तु।

प्रथमावनौ राशिः नैरयिकाणां तु निर्दिष्टः॥154॥)

संसारी पंचक्खा, तप्पुण्णा तिगदिहीणया कमसो।

सामण्णा पंचिंदी, पंचिंदियपुण्णतेरिक्खा॥155॥

(संसारिणः पंचाक्षास्तत्पूर्णाः त्रिगतिहीनकाः क्रमशः।

सामान्याः पञ्चेन्द्रियाः पंचेन्द्रियपूर्णतैरश्चाः॥155॥)

छस्सयजोयणकदिहदजगपदरं जोणिणीण परिमाणं।

पुण्णूणा पंचक्खा, तिरियअपज्जत्तपरिसंखा॥156॥

(षट्शतयॊजनकृतिहृतजगत्प्रतरं यॊनिमतीनां परिमाणम्।

पूर्णॊनाः पंचाक्षाः तिर्यगपर्याप्तपरिसंख्या॥156॥)

सेढीसूईअंगुलआदिमतदियपदभाजिदेगूणा।

सामण्णमणुसरासी, पंचमकदिघणसमा पुण्णा॥157॥

(श्रेणी सूच्यङ्गुलादिमतृतीयपदभाजितैकॊना।

सामान्यमनुष्यराशिः पंचमकृतिघनसमाः पूर्णाः॥157॥)

तललीनमधुगविमलंधूमसिलागाविचोरभयमेरू।

तटहरिखझसा होंति हु, माणुसपज्जत्तसंखंका॥158॥

(तललीनमधुगविमलं धूमसिलागाविचोरभयमेरू।

तटहरिखझसा भवन्ति हि मानुषपर्याप्तसंख्यांकाः॥158॥)

पज्जत्तमणुस्साणं, तिचउत्थो माणुसीण परिमाणं।

सामण्णा पुण्णूणा, मणुवअपज्जत्तगा होंति॥159॥

(पर्याप्तमनुष्याणां त्रिचतुर्थो मानुषीणां परिमाणम्।

सामान्याः पूर्णोना मानवा अपर्याप्तका भवन्ति॥159॥)

तिण्णिसयजोयणाणं, वेसदछप्पण्णअंगुलाणं च।

कदिहदपदरं वेंतर, जोइसियाणं च परिमाणं॥160॥

(त्रिशतयोजनानां द्विशतषट्पंचाशदंगुलानां च।

कृतिहृतप्रतरं व्यन्तरज्योतिष्काणां च परिमाणम्॥160॥)

घणअंगुलपढमपदं, तदियपदं सेढिसंगुणं कमसो।

भवणे सोहम्मदुगे, देवाणं होदि परिमाणं॥161॥

(घनांगुलप्रथमपदं तृतीयपदं श्रेणिसंगुणं क्रमशः।

भवने सौधर्मद्विके देवानां भवति परिमाणम्॥161॥)

तत्तो एगारणवसगपणचउणियमूलभाजिदा सेढी।

पल्लासंखेज्जदिमा, पत्तेयं आणदादिसुरा॥162॥

(तत एकादशनवसप्तपंचचतुर्निजमूलभाजिता श्रेणी।

पल्यासंख्यातकाः प्रत्येकमानतादिसुराः॥162॥)

तिगुणा सत्तगुंणा वा, सव्वट्ठा माणुसीपमाणादो।

सामण्णदेवरासी, जोइसियादो विसेसाहिया॥163॥

(त्रिगुणा सप्तगुणा वा सर्वार्था मानुषीप्रमाणतः।

सामान्यदेवराशिः ज्यॊतिष्कतॊ विशेषाधिकः॥163॥)

इति गतिमार्गणाधिकारः।

2 - अथ इन्द्रियमार्गणाधिकारः

अहमिंदा जह देवा, अविसेसं अहमहंति मण्णंता।

ईसंति एक्कमेक्कं, इंदा इव इंदिये जाण॥164॥

(अहमिन्द्रा यथा देवा अविशेषमहमहमिति मन्यमानाः।

ईशते एकैकमिन्द्रा इव इन्द्रियाणि जानीहि॥164॥)

मदिआवरणखओवसमुत्थविसुद्धी हु तज्जबोहो वा।

भाविंदियं तु दव्वं, देहुदयजदेहचिण्हं तु॥165॥

(मत्यावरणक्षयॊपशमॊत्थविशुद्धिर्हि तज्जबॊधॊ वा।

भावेन्द्रियं तु द्रव्यं देहुदयजदेहचिह्नं तु॥165॥)

फासरसगंधरूवे, सद्दे णाणं च चिण्हयं जेसिं।

इगिबितिचदुपंचिंदिय, जीवा णियभेयभिण्णाओ॥166॥

(स्पर्शरसगंधरूपे शब्दे ज्ञानं च चिह्नकं येषाम्।

एकद्वित्रिचतुःपंचेन्द्रियजीवा निजभेदभिन्ना ओ॥166॥)

एइंदियस्स फुसणं, एक्कं वि य होदि सेसजीवाणं।

होंति कमउड्ढियाइं, जिब्भाघाणच्छिसोत्ताइं॥167॥

(एकेन्द्रियस्य स्पर्शनमेकमपि च भवति शेषजीवानाम्।

भवन्ति क्रमवर्द्धितानि जिह्वाघ्राणाक्षिश्रोत्राणि॥167॥)

धणुवीसडदसयकदी, जोयणछादालहीणतिसहस्सा।

अट्ठसहस्स धणूणं, विसया दुगुणा असण्णि त्ति॥168॥

(धनुर्विंशत्यष्टदशककृतिः योजनषट्चत्वारिंशद्धीनत्रिसहस्राणि।

अष्टसहस्रं धनुषां विषया द्विगुणा असंज्ञीति॥168॥)

सण्णिस्स वार सोदे, तिण्हं णव जोयणाणि चक्खुस्स।

सत्तेतालसहस्सा, बेसदतेसट्ठिमदिरेया॥169॥

(संज्ञिनो द्वादश श्रोत्रे त्रयाणां नव योजनानि चक्षुषः।

सप्तचत्वारिंशत्सहस्राणि द्विशतत्रिषष्ठ्यतिरेकाणि॥169॥)

तिण्णिसयसट्ठिविरहिद, लक्खं दशमूलताडिदे मूलं।

णवगुणिदे सट्ठिहृदे, चक्खुप्फासस्स अद्धाणं॥170॥

(त्रिशतषष्टिविरहितलक्षं दशमूलताडिते मूलम्।

नवगुणिते षष्टिहृते चक्षुःस्पर्शस्य अध्वा॥170॥)

चक्खूसोदं घाणं, जिब्भायारं मसूरजवणाली।

अतिमुत्तखुरप्पसमं, फासं तु अणेयसंठाणं॥171॥

(चक्षुःश्रोत्रघ्राणजिह्वाकारं मसूरयवनाल्यः।

अतिमुक्तक्षुरप्रसमं स्पर्शनं तु अनेकसंस्थानम्॥171॥)

अंगुलअसंखभागं, संखेज्जगुणं तदो विसेसहियं।

तत्तो असंखगुणिदं, अंगुलसंखेज्जयं तत्तु॥172॥

(अंगुलासंख्यभागं संख्यातगुणं ततो विशेषाधिकम्।

ततोऽसंख्यगुणितमंगुलसंख्यातं तत्तु॥172॥)

सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जादस्स तदियसमयम्हि।

अंगुलअसंखभागं जहण्णमुक्कस्सयं मच्छे॥173॥

(सूक्ष्मनिगोदापर्याप्तकस्य जातस्य तृतीयसमये।

अंगुलासंख्यभागं जघन्यमुत्कृष्टकं मत्स्ये॥173॥)

ण वि इंदियकरणजुदा, अवग्गहादीहिं गाहया अत्थे।

णेव य इंदियसोक्खा, अणिंदियाणंतणाणसुहा॥174॥

(नापि इन्द्रियकरणयुता अवग्रहादिभिर्ग्राहका अर्थे।

नैव च इन्द्रियसौख्या अनिन्द्रियानन्तज्ञानसुखाः॥174॥)

थावरसंखपिपीलिय, भमरमणुस्सादिगा सभेदा जे।

जुगवारमसंखेज्जा, णंताणंता णिगोदभवा॥175॥

(स्थावरशंखपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादिकाः सभेदा ये।

युगवारमसंख्येया अनन्तानन्ता निगोदभवाः॥175॥)

तसहीणो संसारी, एयक्खा ताण संखगा भागा।

पुण्णाणं परिमाणं, संखेज्जदिमं अपुण्णाणं॥176॥

(त्रसहीनाः संसारिण एकाक्षास्तेषां संख्यका भागाः।

पूर्णानां परिमाणं संख्येयकमपूर्णानाम्॥176॥)

बादरसुहमा तेसिं, पुण्णापुण्णे त्ति छव्विहाणं पि।

तक्कायमग्गणाये, भणिज्जमाणक्कमो णेयो॥177॥

(बादरसूक्ष्मास्तेषां पूर्णापूर्ण इति षड्विधानामपि।

तत्कायमार्गणायां भणिष्यमाणक्रमो ज्ञेयः॥177॥)

बितिचपमाणमसंखेणवहिदपदरंगुलेण हिदपदरं।

हीणकमं पडिभागो, आवलियासंखभागो दु॥178॥

(द्वित्रिचतुःपंचमानमसंख्येनावहितप्रतरांगुलेन हितप्रतरम्।

हीनक्रमं प्रतिभाग आवलिकासंख्यभागस्तु॥178॥)

बहुभागे समभागो चउण्णमेदेसिमेक्कभागम्हि।

उत्तकमो तत्थ वि बहु, भागो बहुगस्स देओ दु॥179॥

(बहुभागे समभागश्चतुर्णामेतेषामेकभागे।

उक्तक्रमस्तत्रापि बहुभागो बहुकस्य देयस्तु॥179॥)

तिबिपचपुण्णपमाणं, पदरंगुलसंखभागहिदपदरं।

हीणकमं पुण्णूणा, बितिचपजीवा अपज्जत्ता॥180॥

(त्रिद्विपञ्चचतुः पूर्णप्रमाणं प्रतराङ्गुलसंख्यभागहितप्रतरम्।

हीनक्रमं पूर्णोना द्वित्रिचतुःपंचजीवा अपर्याप्ताः॥180॥)

इति इन्द्रियमार्गणाधिकारः समाप्तः।

3 - अथ कायमार्गणा

जाईअविणाभावी, तसथावरउदयजो हवे काओ।

सो जिणमदम्हि भणिओ, पुढवीकायादिछब्भेयो॥181॥

(जात्यविनाभावित्रसस्थावरोदयजो भवेत् कायः।

स जिनमते भणितः पृथ्वीकायादिषड्भेदः॥181॥)

पुढवी आऊ तेऊ, वाऊ कम्मोदयेण तत्थेव।

णियवण्णचउक्कजुदो, ताणं देहो हवे णियमा॥182॥

(पृथिव्यप्तेजोवायुकर्मोदयेन तत्रैव।

निजवर्णचतुष्कयुतस्तेषां देहो भवेन्नियमात्॥182॥)

बादरसुहुमुदयेण य, बादरसुहुमा हवंति तद्देहा।

घादसरीरं थूलं, अघाददेहं हवे सुहुमं॥183॥

(बादरसूक्ष्मौदयेन च बादरसूक्ष्मा भवन्ति तद्देहाः।

घातशरीरं स्थूलमघातदेहं भवेत् सूक्ष्मम्॥183॥)

तद्देहमंगुलस्स, असंखभागस्स विंदमाणं तु।

आधारे थूला ओ, सव्वत्थ णिरंतरा सुहुमा॥184॥

(तद्देहमंगुलस्यासंख्यभागस्य वृन्दमानं तु।

आधारे स्थूलाः ओ सर्वत्र निरन्तराः सूक्ष्माः॥184॥)

उदये दु वणप्फदिकम्मस्स य जीवा वसप्फदी होंति।

पत्तेयं सामण्णं, पदिट्ठिदिदरे त्ति पत्तेयं॥185॥

(उदये तु वनस्पतिकर्मणश्च जीवा वनस्पतयो भवन्ति।

प्रत्येकं सामान्यं प्रतिष्ठितेतरे इति प्रत्येकम्॥185॥)

मूलग्गपोरबीजा, कंदा तह खंदबीज बीजरुहा।

सम्मुच्छिमा य भणिया, पत्तेयाणंतकाया य॥186॥

(मूलाग्रपर्वबीजा कन्दास्तथा स्कन्धबीजबीजरुहाः।

सम्मूर्छिमाश्च भणिताः प्रत्येकानन्तकायाश्च॥186॥)

गूढसिरसंधिपव्वं समभंगमहीरुहं च छिण्णरुहं।

साहारणं सरीरं, तव्विवरीयं च पत्तेयं॥187॥

(गूढशिरासन्धिपर्वं समभङ्गमहीरुकं च छिन्नरुहम्।

साधारणं शरीरं तद्विपरीतं च प्रत्येकम्॥187॥)

मूले कंदे छल्ली, पवाल सालदलकुसुम फलबीजे।

समभंगे सदि णंता, असमे सदि होंति पत्तेया॥188॥

(मूले कन्दे त्वक्प्रवालशालादलकुसुमफलबीजे।

समभंगे सति नान्ता असमे सति भवन्ति प्रत्येकाः॥188॥)

कंदस्स व मूलस्स व, सालाखंदस्स वावि बहुलतरा।

छल्ली साणंतजिया, पत्तेयजिया तु तणुकदरी॥189॥

(कन्दस्य वा मूलस्य वा शाखास्कन्धस्य वापि बहुलतरी।

त्वक् सा अनन्तजीवा प्रत्येकजीवा तु तनुकतरी॥189॥)

बीजे जोणीभूदे, जीवो चंकमदि सो व अण्णा वा।

जे वि य मूलादीया, ते पत्तेया पढमदाए॥190॥

(बीजे योनीभूते जीवः चंक्रामति स वा अन्यो वा।

येऽपि च मूलादिकास्ते प्रत्येकाः प्रथमतायाम्॥190॥)

साहारणोदयेण णिगोदसरीरा हवंति सामण्णा।

ते पुण दुविहा जीवा, बादर सुहुमा त्ति विण्णेया॥191॥

(साधारणोदयेन निगोदशरीरा भवन्ति सामान्याः।

ते पुनर्द्विविधा जीवा बादर-सूक्ष्मा इति विज्ञेयाः॥191॥)

साहारणमाहारो, साहारणमाणपाणगहणं च।

साहारणजीवाणं, साहारणलक्खणं भणियं॥192॥

(साधारणमाहारः साधारणमानपानग्रहणं च।

साधारणजीवानां साधारणलक्षणं भणितम्॥192॥)

जत्थेक्क मरइ जीवो, तत्थ दु मरणं हवे अणंताणं।

वक्कमइ जत्थ एक्को, वक्कमणं तत्थ णंताणं॥193॥

(यत्रैकॊ म्रियते जीवस्तत्र तु मरणं भवेदनन्तानाम्।

प्रक्रामति यत्र एकः प्रक्रमणं तत्रानन्तानाम्॥193॥)

खंधा असंखलोगा, अंडरआवासपुलविदेहा वि।

हेट्ठिल्लजोणिगाओ, असंखलोगेण गुणिदकमा॥194॥

(स्कन्धा असंख्यलॊका अंडरावासपुलविदेहा अपि।

अधस्तनयॊनिका असंख्यलॊकेन गुणितक्रमाः॥194॥)

जम्बूदीवं भरहो, कोसलसागेदतग्घराइं वा।

खंधंडरआवासा, पुलविसरीराणि दिट्ठंता॥195॥

(जम्बूद्वीपॊ भरतः कॊशलसाकेततद्ग्रहाणि वा।

स्कन्धाण्डरावासाः पुलविशरीराणि दृष्टान्ताः॥195॥)

एगणिगोदसरीरे, जीवा दव्वप्पमाणदो दिट्ठा।

सिद्धेहिं अणंतगुणा, सव्वेण विदीदकालेण॥196॥

(एकनिगॊदशरीरे जीवा द्रव्यप्रमाणतॊ दृष्टाः।

सिद्धैरनन्तगुणाः सर्वेण व्यतीतकालेन॥196॥)

अत्थि अणंता जीवा, जेहिं ण पत्तो तसाण परिणामो।

भावकलंकसुपउरा, णिगोदवासं ण मुंचंति॥197॥

(सन्ति अनन्ता जीवा यैर्न प्राप्तः त्रसानां परिणामः।

भावकलङ्कसुप्रचुरा निगॊदवासं न मुञ्चन्ति॥197॥)

विहि तिहि चहुहिं पंचहिं, सहिया जे इंदिएहिं लोयम्हि।

ते तसकाया जीवा णेया वीरावदेसेण॥198॥

(द्वाभ्यां त्रिभिश्चतुर्भिः पञ्चभिः सहिता ये इन्द्रियैर्लोके।

ते त्रसकाया जीवा ज्ञेया वीरोपदेशेन॥198॥)

उववादमारणंतिय, परिणदतसमुज्झिऊण सेसतसा।

तसणालिबाहिरम्हि य, णत्थि त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥199॥

(उपपादमारणान्तिकपरिणतत्रसमुज्झित्वा शेषत्रसाः।

त्रसनालीबाह्ये च न सन्तीति जिनैर्निर्दिष्टम्॥199॥)

पुढवीआदिचउण्हं, केवलिआहारदेवणिरयंगा।

अपदिट्ठिदा णिगोदेहिं, पदिट्ठिदंगा हवे सेसा॥200॥

(पृथिव्यादिचतुर्णां केवल्याहारदेवनिरयांगानि।

अप्रतिष्ठितानि निगोदैः प्रतिष्ठिताङ्गा भवन्ति शेषाः॥200॥)

मसुरंबुबिंदुसूई, कलावधयसण्णिहो हवे देहो।

पुढवीआदिचउण्हं, तरुतसकाया अणेयविहा॥201॥

(मसूराम्बुबिन्दुसूचीकलापध्वजसन्निभो भवेद्देहः।

पृथिव्यादिचतुर्णां तरुत्रसकाया अनेकविधाः॥201॥)

जह भारवहो पुरिसो वहइ भरं गेहिऊण कावलियं।

एमेव वहइ जीवो कम्मभरं कायकावलियं॥202॥

(यथा भारवहः पुरुषो वहति भारं गृहीत्वा कावटिकाम्।

एवमेव वहति जीवः कर्म्मभरं कायकावटिकाम्॥202॥)

जह कंचणमग्गिगयं, मुंचइ किट्टेण कालियाए य।

तह कायबंधमुक्का, अकाइया झाणजोगेण॥203॥

(यथा कञ्चनमग्निगतं मुच्यते किट्टेन कालिकया च।

तथा कायबन्धमुक्ता अकायिका ध्यानयॊगेन॥203॥)

आउड्ढरासिवारं लोगे अण्णोण्णसंगुणे तेऊ।

भूजलवाऊ अहिया पडिभागोऽसंखलोगो दु॥204॥

(सार्धत्रयराशिवारं लॊके अन्यॊन्यसंगुणे तेजः।

भूजलवायवः अधिकाः प्रतिभागॊऽसंख्यलॊकस्तु॥204॥)

अपदिट्ठिदपत्तेया, असंखलोगप्पमाणया हौंति।

तत्तो पदिट्ठिदा पुण, असंखलोगेण संगुणिदा॥205॥

(अप्रतिष्ठितप्रत्येका असंख्यलॊकप्रमाणका भवन्ति।

ततः प्रतिष्ठिताः पुनः असंख्यलॊकेन संगुणिताः॥205॥)

तसरासिपुढविआदी, चउक्कपत्तेयहीणसंसारी।

साहारणजीवाणं, परिमाणं होदि जिणदिट्ठं॥206॥

(त्रसराशिपृथिव्यादिचतुष्कप्रत्येकहीनसंसारी।

साधारणजीवानां परिमाणं भवति जिनदिष्टम्॥206॥)

सगसगअसंखभागो, बादरकायाण होदि परिमाणं।

सेसा सुहमपमाणं, पडिभागो पुव्वणिद्दिट्ठो॥207॥

(स्वकस्वकासंख्यभागॊ बादरकायानां भवति परिमाणम्।

शेषाः सूक्ष्मप्रमाणं प्रतिभागः पूर्वनिर्दिष्टः॥207॥)

सुहुमेसु संखभागं, संखा भागा अपुण्णगा इदरा।

जस्सि अपुण्णद्धादो, पुण्णद्धा संखगुणिदकमा॥208॥

(सूक्ष्मेषु संख्यभागः संख्या भागा अपूर्णकाः इतरे।

यस्मादपूर्णाद्धातः पूर्णाद्धा संख्यगुणितक्रमाः॥208॥)

पल्लासंखेज्जवहिद, पदरंगुलभाजिदे जगप्पदरे।

जलभूणिपबादरया पुण्णा आवलि असंखभजिदकमा॥209॥

(पल्यासंख्यातावहितप्रतरांगुलभाजिते जगत्प्रतरे।

जलभूनिपबादरकाः पूर्णा आवल्यसंख्यभजितक्रमाः॥209॥)

विंदावलिलोगाणमसंखं संखं च तेउवाऊणं।

पज्जत्ताण पमाणं, तेहिं विहीणा अपज्जत्ता॥210॥

(वृन्दावलिलॊकानामसंख्यं संख्यं च तेजॊवायूनाम्।

पर्याप्तानां प्रमाणं तैर्विहीना अपर्याप्ताः॥210॥)

साहारणबादरेसु असंखं भागं असंखगा भागा।

पुण्णाणमपुण्णाणं, परिमाणं होदि अणुकमसो॥211॥

(साधारणबादरेषु असंख्यं भागमसंख्यका भागाः।

पूर्णानामपूर्णानां परिमाणं भवत्यनुक्रमशः॥211॥)

आवलिअसंखसंखेणवहिदपदरंगुलेण हिदपदरं।

कमसो तसतप्पुण्णा पुण्णूणतसा अपुण्णा हु॥212॥

(आवल्यसंख्यसंख्येनावहितप्रतरांगुलेन हितप्रतरम्।

क्रमशस्त्रसतत्पूर्णाः पूर्णॊनत्रसा अपूर्णा हि॥212॥)

आवलिअसंखभागेणवहिदपल्लूणसायरद्धछिदा।

बादरतेपणिभूजलवादाणं चरिमसागरं पुण्णं॥213॥

(आवल्यसंख्यभागेनावहितपल्यॊनसागरार्धच्छेदाः।

बादरतेपनिभूजलवातानां चरमः सागरः पूर्णः॥213॥)

ते वि विसेसेणहिया, पल्लासंखेज्जभागमेत्तेण।

तम्हा ते रासीओ असंखलोगेण गुणिदकमा॥214॥

(तेपि विशेषेणाधिकाः पल्यासंख्यातभागमात्रेण।

तस्मात्ते राशयोऽसंख्यलोकेन गुणितक्रमाः॥214॥)

दिण्णच्छेदेणवहिद, इट्ठच्छेदेहिं पयदविरलणं भजिदे।

लद्धमिदइट्ठरासीणण्णोण्णहदीए होदि पयदधणं॥215॥

(देयच्छेदेनावहितेष्टच्छेदैः प्रकृतविरलनं भाजिते।

लब्धमितेष्टराश्यन्योन्यहत्या भवति प्रकृतधनम्॥215॥)

इति कायमार्गणाधिकारः।

4 - अथ योगमार्गणा

पुग्गलविवाइदेहोदयेण मणवयणकायजुत्तस्स।

जीवस्स जा हु सत्ती, कम्मागमकारणं जोगो॥216॥

(पुद्गलविपाकिदेहोदयेन मनोवचनकाययुक्तस्य।

जीवस्य या हि शक्तिः कर्मागमकारणं योगः॥216॥)

मणवयणाण पउत्ती, सच्चासच्चुभयअणुभयत्थेसु।

तण्णाम होदि तदा, तेहि दु जोगा हु तज्जोगा॥217॥

(मनोवचनयोः प्रवृत्तयः सत्यासत्योभयानुभयार्थेषु।

तन्नाम भवति तदा तैस्तु योगात् हि तद्योगाः॥217॥)

सब्भावमणो सच्चो, जो जोगो तेण सच्चमणजोगो।

तव्विवरीओ मोसो, जाणुभयं सच्चमोसो त्ति॥218॥

(सद्भावमनः सत्यं यो योगस्तेन सत्यमनोयोगः।

तद्विपरीतो मृषा जानीहि उभयं सत्यमृषेति॥218॥)

ण य सच्चमोसजुत्तो जो दु मणो सो असच्चमोसमणो।

जो जोगो तेण हवे, असच्चमोसो दु मणजोगो॥219॥

(न च सत्यमृषायुक्तं यत्तु मनः तदसत्यमृषामनः।

यॊ यॊगस्तेन भवेत् असत्यमृषा तु मनॊयॊगः॥219॥)

दसविहसच्चे वयणे, जो जोगो सो दु सच्चवचिजोगो।

तव्विवरीओ मोसो, जाणुभयं सच्चमोसो त्ति॥220॥

(दशविधसत्ये वचने यॊ यॊगः स तु सत्यवचॊयॊगः।

तद्विपरीतॊ मृषा जानीहि उभयं सत्यमृषेति॥220॥)

जो णेव सच्चमोसा, सो जाण असच्चमोसवचिजोगो।

अमणाणं जा भासा, सण्णीणामंतणी आदी॥221॥

(यो नैव सत्यमृषा स जानीहि असत्यमृषावचॊयॊगः।

अमनसां या भाषा संज्ञिनामामन्त्रण्यादिः॥221॥)

जणवदसम्मदिठवणा, णामे रूबे पडुच्चववहारे।

सम्भावणे य भावे, उवमाए दसविहं सच्चं॥222॥

(जनपदसम्मतिस्थापनानाम्नि रूपे प्रतीत्यव्यवहारयॊः।

संभावनायां च भावे उपमायां दशविधं सत्यम्॥222॥)

भत्तं देवी चंदप्पह-, पडिमा तह य होदि जिणदत्तो।

सेदो दिग्घो रज्झदि, कूरो त्ति य जं हवे वयणं॥223॥

(भक्तं देवी चन्द्रप्रभप्रतिमा तथा च भवति जिनदत्तः।

श्वेतॊ दीर्घॊ रध्यते क्रूरमिति च तद्भवेद्वचनम्॥223॥)

सक्को जंबूदीवं, पल्लट्टदि पाववज्जवयणं च।

पल्लोवमं च कमसो, जणवदसच्चादिदिट्ठंता॥224॥

(शक्रो जम्बूद्वीपं परिवर्तयति पापवर्जवचनं च।

पल्योपमं च क्रमशो जनपदसत्यादिदृष्टांताः॥224॥)

आमंतणि आणवणी, याचणिया पुच्छणी य पण्णवणी।

पच्चक्खाणी संसयवयणी, इच्छाणुलोमा य॥225॥

(आमन्त्रणी आज्ञापनी याचनी आपृच्छनी च प्रज्ञापनी।

प्रत्याख्यानी संशयवचनी इच्छानुलोम्नी च॥225॥)

णवमी अणक्खरगदा, असच्चमोसा हवंति भासाओ।

सोदाराणं जम्हा, वत्तावत्तंससंजणया॥226॥

(नवमी अनक्षरगता असत्यमृषा भवन्ति भाषाः।

श्रोतृणां यस्मात् व्यक्ताव्यक्तांशसंज्ञापिकाः॥226॥)

मणवयणाणं मूलणिमित्तं खलु पुराणदेहउदओ दु।

मोसुभयाणं मूलणिमित्तं खलु होदि आवरणं॥227॥

(मनोवचनयोर्मूलनिमित्तं खलु पूर्णदेहोदयस्तु।

मृषोभययोर्मूलनिमित्तं खलु भवत्यावरणम्॥227॥)

मणसहियाणं वयणं, दिट्ठं तप्पुव्वमिदि सजोगम्मि।

उत्तो मणोवयारेणिंदियणाणेण हीणम्हि॥228॥

(मनःसहितानां वचनं दृष्टं तत्पूर्वमिति सयोगे।

उक्तो मन उपचारेणेन्द्रियज्ञानेन हीने॥228॥)

अंगोवंगुदयादो, दव्वमणट्ठं जिणिंदचंदम्हि।

मणवग्गणखंधाणं आगमणादो दु मणजोगो॥229॥

(आंगोपांगोदयात् द्रव्यमनोर्थं जिनेन्द्रचन्द्रे।

मनोवर्गणास्कन्धानामागमनात् तु मनोयोगः॥229॥)

पुरुमहदुदारुरालं, एयट्ठो संविजाण तम्हि भवं।

ओरालियं तमुच्चइ, ओरालियकायजोगो सो॥230॥

(पुरुमहदुदारमुरालमेकार्थः संविजानीहि तस्मिन् भवं।

औरालिकं तदुच्यते औरालिककाययोगः सः॥230॥)

ओरालिय उत्तत्थं विजाण मिस्सं तु अपरिपुण्णं तं।

जो तेण संपजोगो ओरालियमिस्सजोगो सो॥231॥

(औरालिकमुक्तार्थं विजानीहि मिश्रं तु अपरिपूर्णं तत्।

यस्तेन संप्रयोग औरालिकमिश्रयोगः सः॥231॥)

विविहगुणइड्ढिजुत्तं, विक्किरियं वा हु होदि वेगुव्वं।

तिस्से भवं च णेयं, वेगुव्वियकायजोगो सो॥232॥

(विविधगुणर्द्धियुक्तं विक्रियं वा हि भवति विगूर्वम्।

तस्मिन् भवं च ज्ञेयं वैगूर्विककाययोगः सः॥232॥)

बादरतेऊवाऊ, पंचिंदियपुण्णगा विगुव्वंति।

ओरालियं सरीरं, विगुव्वणप्पं हवे जेसिं॥233॥

(बादरतेजोवायुपञ्चेन्द्रियपूर्णका विगूर्वन्ति।

औरालिकं शरीरं विगूर्वणात्मकं भवेत् येषाम्॥233॥)

वेगुव्विय उत्तत्थं, विजाण मिस्सं तु अपरिपुण्णं तं।

जो तेण संपजोगो, वेगुव्वियमिस्सजोगो सो॥234॥

(वैगूर्विकमुक्तार्थं विजानीहि मिश्रं तु अपरिपूर्णं तत्।

यस्तेन संप्रयोगो वैगूर्विकमिश्रयोगः सः॥234॥)

आहारस्सुदयेण य, पमत्तविरदस्स होदि आहारं।

असंजमपरिहरणट्ठं, संदेहविणासणट्ठं च॥235॥

(आहारस्योदयेन च प्रमत्तविरतस्य भवति आहारकम्।

असंयमपरिहरणार्थं संदेहविनाशनार्थं च॥235॥)

णियखेत्ते केवलिदुगविरहे णिक्कमणपहुदिकल्लाणे।

परखेत्ते संवित्ते, जिणजिणघरवंदणट्ठं च॥236॥

(निजक्षेत्रे केवलिद्विकविरहे निःक्रमणप्रभृतिकल्याणे।

परक्षेत्रे संवृत्ते जिनजिनगृहवन्दनार्थं च॥236॥)

उत्तम अंगम्हि हवे, धादुविहीणं सुहं असंहणणं।

सुहसंठाणं धवलं, हत्थपमाणं पसत्थुदयं॥237॥

(उत्तमाङ्गे भवेद् धातुविहीनं शुभमसंहननम्।

शुभसंस्थानं धवलं हस्तप्रमाणं प्रशस्तोदयम्॥237॥)

अव्वाघादी अंतोमुहुत्तकालट्ठिदी जहण्णिदरे।

पज्जत्तीसंपुण्णे, मरणं पि कदाचि संभवई॥238॥

(अव्याघाति अन्तर्मुहूर्तकालस्थिती जघन्येतरे।

पर्याप्तिसंपूर्णायां मरणमपि कदाचित् संभवति॥238॥)

आहरदि अणेण मुणी, सुहमे अत्थे सयस्स संदेहे।

गत्ता केवलिपासं तम्हा आहारगो जोगो॥239॥

(आहरत्यनेन मुनिः सूक्ष्मानर्थान् स्वस्य संदेहे।

गत्ता केवलिपार्श्वं तस्मादाहारको योगः॥239॥)

आहारयमुत्तत्थं विजाण मिस्सं तु अपरिपुण्णं तं।

जो तेण संपजोगो, आहारयमिस्सजोगो सो॥240॥

(आहारकमुक्तार्थं विजानीहि मिश्रं तु अपरिपूर्णं तत्।

यस्तेन संप्रयोग आहारकमिश्रयोगः सः॥240॥)

कम्मेव य कम्मभवं, कम्मइयं जो दु तेण संजोगो।

कम्मइयकायजोगो, इगिविगतिगसमयकालेसु॥241॥

(कर्म्मैव च कर्मभवं कार्मणं यस्तु तेन संयोगः।

कार्मणकाययोग एकद्विकत्रिकसमकालेषु॥241॥)

वेगुव्विय-आहारयकिरिया, ण समं पमत्तविरदम्हि।

जोगो वि एक्ककाले, एक्केव य होदि णियमेण॥242॥

(वैगूर्विकाहारकक्रिया न समं प्रमत्तविरते।

योगोऽपि एककाले एक एव च भवति नियमेन॥242॥)

जेसिं ण संति जोगा, सुहासुहा पुण्णपावसंजणया।

ते होंति अजोगिजिणा, अणोवमाणंतबलकलिया॥243॥

(येषां न सन्ति योगाः शुभाशुभाः पुण्यपापसंजनकाः।

ते भवन्ति अयोगिजिना अनुपमानन्तबलकलिताः॥243॥)

ओरालियवेगुव्विय, आहारयतेजणामकम्मुदये।

चउणोकम्मसरीरा, कम्मेव य होदि कम्मइयं॥244॥

(औरालिकवैगूर्विकाहारकतेजोनामकर्मोदये।

चतुर्नोकर्मशरीराणि कर्मैव च भवति कार्मणम्॥244॥)

परमाणूहिं अणंतेहिं, वग्गणसण्णा हु होदि एक्का हु।

ताहि अणंताहिं णियमा, समयपबद्धो हवे एक्को॥245॥

(परमाणुभिरनन्तैर्वर्गणासंज्ञा हि भवत्येका हि।

ताभिरनन्तैर्नियमात् समयप्रबद्धो भवेदेकः॥245॥)

ताणं समयपबद्धा, सेढिअसंखेज्जभागगुणिदकमा।

णंतेण य तेजदुगा, परं परं होदि सुहुमं खु॥246॥

(तेषां समयप्रबद्धाः श्रेण्यसंख्येयभागगुणितक्रमाः।

अनन्तेन च तेजोद्विका परं परं भवति सूक्ष्मं खलु॥246॥)

ओगाहणाणि ताणं, समयपबद्धाण वग्गणाणं च।

अंगुलअसंखभागा, उवरुवरिमसंखगुणहीणा॥247॥

(अवगाहन नि तेषां समयप्रबद्धानां वर्गणानां च।

अंगुलासंख्यभागा उपर्युपरि असंख्यगुणहीनानि॥247॥)

तस्समयबद्धवग्गणओगाहो सूइअंगुलासंख-।

भागहिदविंदअंगुलमुवरुवरिं तेण भजिदकमा॥248॥

(तत्समयवद्धवर्गणावगाहः सूच्यंगुलासंख्य-।

भागहितवृन्दांगुलमुपर्युपरि तेन भजितक्रमाः॥248॥)

जीवादो णंतगुणा, पडिपरमाणुम्हि विस्ससोवचया।

जीवेण य समवेदा, एक्केक्कं पडि समाणा हु॥249॥

(जीवतोऽनन्तगुणाः प्रतिपरमाणौ विस्रसोपचयाः।

जीवेन च समवेता एकैकं प्रति समानाः हि॥249॥)

उक्कस्सट्ठिदिचरिमे, सगसगउक्कस्ससंचओ होदि।

पणदेहाणं वरजोगादिससामग्गिसहियाणं॥250॥

(उत्कृष्टस्थितिचरमे स्वकस्वकौत्कृष्टसंचयौ भवति।

पञ्चदेहानां वरयौगादिस्वसामाग्रीसहितानाम्॥250॥)

आवासया हु भवअद्धाउस्सं जोगसंकिलेसो य।

ओकट्टुक्कट्टणगा, छच्चेदे गुणिदकम्मंसे॥251॥

(आवश्यकानि हि भवाद्धा आयुष्यं यौगसंक्लेशौ च।

अपकर्षणोत्कर्षणके षट् चैते गुणितकर्मांशे॥251॥)

पल्लतियं उवहीणं, तेत्तीसंतोमुहुत्त उवहीणं।

छावट्ठी कम्मट्ठिदि, बंधुक्कस्सट्ठिदी ताणं॥252॥

(पल्यत्रयमुदधीनां त्रयस्त्रिंशदन्तर्मुहूर्त उदधीनाम्।

षट्षष्ठिः कर्मस्थितिर्बन्धौत्कृष्टस्थितिस्तेषाम्॥252॥)

अंतोमुहुत्तमेत्तं, गुणहाणी होदि आदिमतिगाणं।

पल्लासंखेज्जदिमं, गुणहाणी तेजकम्माणं॥253॥

(अन्तर्मुहूर्तमात्रा गुणहानिर्भवति आदिमत्रिकाणाम्।

पल्यासंख्याता गुणहानिस्तेजःकर्मणोः॥253॥)

एक्कं समयपबद्धं, बंधदि एक्कं उदेदि चरिमम्मि।

गुणहाणीण दिवड्ढं, समयपबद्धं हवे सत्तं॥254॥

(एकं समयप्रबद्धं बध्नाति एकमुदेति चरमे।

गुणहानीनां द्वयर्धं समयप्रबद्धं भवेत् सत्त्वम्॥254॥)

णवरि य दुसरीराणं, गलिदवसेसाउमेत्तठिदिबंधो।

गुणहाणीण दिवड्ढं, संचयमुदयं च चरिमम्हि॥255॥

(नवरि च द्विशरीरयॊर्गलितावशेषायुर्मात्रस्थितिबंधः।

गुणहानीनां द्वठ्यर्धं संचयमुदयं च चरमे॥255॥)

ओरालियवरसंचं, देवुत्तरकुरुवजादजीवस्स।

तिरियमणुस्सस्स हवे, चरिमदुचरिमे तिपल्लाठिदिगस्स॥256॥

(औदारिकवरसंचयं देवॊत्तरकुरुपजातजीवस्य।

तिर्यग्मनुष्यस्य भवेत् चरमद्विचरमे त्रिपल्यस्थितिकस्य॥256॥)

वेगुव्वियवरसंचं, वावीससमुद्दआरणदुगम्हि।

जम्हा वरजोगस्स य, वारा अण्णत्थ ण हि बहुगा॥257॥

(वैगूर्विकवरसंचयं द्वाविंशतिसमुद्रआरणद्विके।

यस्मात् वरयॊगस्य च वारा अन्यत्र न हि बहुकाः॥257॥)

तेजासरीरजेट्ठं, सत्तमचरिमम्हि विदियवारस्स।

कम्मस्स वि तत्थेव य, णिरये बहुवारभमिदस्स॥258॥

(तैजसशरीरज्येष्ठं सप्तमचरमे द्वितीयवारस्य।

कार्मणस्यापि तत्रैव च निरये बहुवारभ्रमितस्य॥258॥)

बादरपुण्णा तेऊ, सगरासीए असंखभागमिदा।

विक्किरियसत्तिजुत्ता, पल्लासंखेज्जया वाऊ॥259॥

(बादरपूर्णा तैजसाः स्वकराशेरसंख्यभागमिताः।

विक्रियाशक्तियुक्ताः पल्यासंख्याता वायवः॥259॥)

पल्लासंखेज्जाहयविंदंगुलगुणिदसेढिमेत्ता हु।

वेगुव्वियपंचक्खा, भोगभुमा पुह विगुव्वंति॥260॥

(पल्यासंख्याताहतवृन्दांगुलगुणितश्रेणिमात्रा हि।

वैगूर्विकपञ्चाक्षा भोगभूमाः पृथक् विगूर्वन्ति॥260॥)

देवेहिं सादिरेया, तिजोगिणो तेहिं हीणतसपुण्णा।

वियजोगिणो तदूणा, संसारी एक्कजोगा हु॥261॥

(देवैः सातिरेकाः त्रियोगिनस्तैर्हीनाः त्रसपूर्णाः।

द्वियोगिनस्तदूना संसारिणः एकयोगा हि॥261॥)

अंतोमुहुत्तमेत्ता चउमणजोगा कमेण संखगुणा।

तज्जोगो सामण्णं चउवचिजोगा तदो दु संखगुणा॥262॥

(अन्तर्मुहूर्तमात्राः चतुर्मनोयोगाः क्रमेण संख्यगुणाः।

तद्योगः सामान्यं चतुर्वचोयोगाः ततस्तु संख्यगुणाः॥262॥)

तज्जोगो सामण्णं काओ संखाहदो तिजोगमिदं।

सव्वसमासविभजिदं सगसगगुणसंगुणे दु सगरासी॥263॥

(तद्योगः सामान्यं कायः संख्याहतः त्रियोगिमितम्।

सर्वसमासविभक्तं स्वकस्वकगुणसंगुणे तु स्वकराशिः॥263॥)

कम्मोरालियमिस्सयओरालद्धासु संचिदअणंता।

कम्मोरालियमिस्सय ओरालियजोगिणो जीवा॥264॥

(कार्मणौदारिकमिश्रकौरालाद्धासु संचितानन्ताः।

कार्मणौरालिकमिश्रकौरालिकयोगिनो जीवाः॥264॥)

समयत्तयसंखावलिसंखगुणावलिसमासहिदरासी।

सगगुणगुणिदे थोवो असंखसंखाहदो कमसो॥265॥

(समयत्रयसंख्यावलिसंख्यगुणावलिसमासहितराशिम्।

स्वकगुणगुणिते स्तोकः असंख्यसंख्याहतः क्रमशः॥265॥)

सोवक्कमाणुवक्कमकालो संखेज्जवासठिदिवाणे।

आवलिअसंखभागो संखेज्जावलिपमा कमसो॥266॥

(सोपक्रमानुपक्रमकालः संख्यातवर्षस्थितिवाने।

आवल्यसंख्यभागः संख्यातावलिप्रमः क्रमशः॥266॥)

तहिं सव्वे सुद्धसला सोवक्कमकालदो दु संखगुणा।

तत्तो संखगुणूणा अपुण्णकालम्हि सुद्धसला॥267॥

(तस्मिन् सर्वाः शुद्धशलाकाः सोवक्रमकालतस्तु संख्यगुणाः।

ततः संख्यागुणोना अपूर्णकाले शुद्धशलाकाः॥267॥)

तं सुद्धसलागाहिदणियरासिमपुण्णाकाललद्धाहिं।

सुद्धसलागाहिं गुणे वेंतरवेगुव्वमिस्सा हु॥268॥

(तं शुद्धशलाकाहितनिजराशिमपूर्णकाललब्धाभिः।

शुद्धशलाकाभिर्गुणे व्यन्तरवैगूर्वमिश्रा हि॥268॥)

तहिं सेसदेवणारयमिस्सजुदे सव्वयमिस्सवेगुव्वं।

सुरणिरयकायजोगा, वेगुव्वियकायजोगा हु॥269॥

(तस्मिन् शेषदेवनारकमिश्रयुते सर्वमिश्रवैगूर्वम्।

सुरनिरयकाययॊगा वैगूर्विककाययॊगा हि॥269॥)

आहारकायजोगा, चउवण्णं हॊंति एकसमयम्हि।

आहारमिस्सजोगा, सत्तावीसा दु उक्कस्सं॥270॥

(आहारकाययोगाः चतुष्पञ्चाशत् भवन्ति एकसमये।

आहारमिश्रयॊगाः सप्तविंशतिस्तूत्कृष्टम्॥270॥)

इति योगमार्गणाधिकारः।

5 - अथ वेदमार्गणा

पुरिसिच्छिसंढवेदोदयेण पुरिसिच्छिसंढओ भावे।

णामोदयेण दव्वे, पाएण समा कहिं विसमा॥271॥

(पुरुषस्त्रीषण्ढवेदोदयेन पुरुषस्त्रीषण्ढाः भावे।

नामोदयेन द्रव्ये प्रायेण समाः क्वचिद् विषमाः॥271॥)

वेदस्सुदीरणाए, परिणामस्स य हवेज्ज संमोहो।

संमोहेण ण जाणदि, जीवो हि गुणं व दोषं वा॥272॥

(वेदस्योदीरणायां परिणामस्य च भवेत् संमोहः।

संमोहेन न जानाति जीवो हि गुणं वा दोषं वा॥272॥)

पुरुगुणभोगे सेदे, करेदि लोयम्मि पुरुगुणं कम्मं।

पुरुउत्तमो य जम्हा, तम्हा सो वण्णिओ पुरिसो॥273॥

(पुरुगुणभोगे शेते करोति लोके पुरुगुणं कर्म।

पुरुरुत्तमश्च यस्मात् तस्मात् स वर्णितः पुरुषः॥273॥)

छादयदि सयं दोसे, णयदो छाददि परं वि दोसेण।

छादणसीला जम्हा, तम्हा सा वण्णिया इत्थी॥274॥

(छायदति स्वकं दोषैः नयतः छायदति परमपि दोषेण।

छादनशीला यस्मात् तस्मात् सा वर्ण्णिता स्त्री॥274॥)

णेवित्थी णेव पुमं, णउंसओ उहयलिंगवदिरित्तो।

इट्ठावग्गिसमाणगवेदणगरुओ कलुसचित्तो॥275॥

(नैव स्त्री नैव पुमान् नपुंसक उभयलिंगव्यतिरिक्तः।

इष्टापाकाग्निसमानकवेदनागुरुकः कलुषचित्तः॥275॥)

तिणकारिसिट्ठपागग्गिसरिसपरिणामवेदणुम्मुक्का।

अवगयवेदा जीवा, सगसंभवणंतवरसोक्खा॥276॥

(तृणकारीषेष्टपाकाग्निसदृशपरिणामवेदनोन्मुक्ताः।

अपगतवेदा जीवाः स्वकसम्भवानन्तरवरसौख्याः॥276॥)

जोइसियवाणजोणिणितिरिवखपुरुसा य सण्णि णो जीवा।

तत्तेऽपम्मलेस्सा, संखगुणूणा कमेणेदे॥277॥

(ज्योतिष्कवानयोनिनीतिर्यक्पुरुषाश्च संज्ञिनो जीवाः।

तत्तेजःपद्मलेश्याः संख्यगुणीनाः क्रमेणैते॥277॥)

इगिपुरिसे बत्तीसं, देवी तज्जोगभजिददेवोघे।

सगगुणगारेण गुणे, पुरुसा महिला य देवेसु॥278॥

(एकपुरुषे द्वात्रिंशद्देव्यः तद्योगभक्तदेवौघे।

स्वकगुणकारेण गुणे पुरुषा महिलाश्च देवेषु॥278॥)

देवेहिं सादिरेया, पुरिसा देवीहिं साहिया इत्थी।

तेहिं विहीण सवेदो, रासी संढाण परिमाणं॥279॥

(देवैः सातिरेका, पुरुषा देवीभिः साधिका स्त्रियः।

तैर्विहीनः सवेदो राशिः षण्ढानां परिमाणम्॥279॥)

गब्भणपुइत्थिसण्णी, सम्मुच्छणसण्णिपुण्णगा इदरा।

कुरुजा असण्णिगब्भजणपुइत्थीवाणजोइसिया॥280॥

(गर्भनपुंस्त्रीसंज्ञिनः सम्मूर्छनसंज्ञिपूर्णका इतरे।

कुरुजा असंज्ञिगर्भजनपुंस्त्रीवानज्योतिष्काः॥280॥)

थोवा तिसु संखगुणा, तत्तो आवलिअसंखभागगुणा।

पल्लासंखेज्जगुणा, तत्तो सव्वत्थ संखगुणा॥281॥

(स्तोकाः त्रिषु संख्यगुणाः तत आवल्यसंख्यभागगुणाः।

पल्यासंख्येयगुणाः ततः सर्वत्र संख्यगुणाः॥281॥)

इति वेदमार्गणाधिकारः।

6 - अथ कषायमार्गणा

सुहदुक्खसुबहुसस्सं, कम्मक्खेत्तं कसेदि जीवस्स।

संसारदूरमेरं, तेण कसाओ त्ति णं बेंति॥282॥

(सुखदुःखसुबहुसस्यं कर्मक्षेत्रं कृषति जीवस्य।

संसारदूरमर्यादं तेन कषाय इतीमं ब्रुवन्ति॥282॥)

सम्मत्तदेससयलचरित्तजहक्खादचरणपरिणामे।

घादंति वा कसाया, चउसोल असंखलोगमिदा॥283॥

(सम्यक्त्वदेशसकलचरित्रयथाख्यातचरणपरिणामान्।

घातयन्ति वा कषायाः चतुःषोडशासंख्यलोकमिताः॥283॥)

सिलपुढविभेदधूलीजलराइसमाणओ हवे कोहो।

णारयतिरियणरामरगईसु उप्पायओ कमसो॥284॥

(शिलापृथ्वीभेदधूलिजलराजिसमानको भवेत् क्रोधः।

नारकतिर्यग्नरामरगतिषूत्पादकः क्रमशः॥284॥)

सेलट्ठिकट्ठवेत्ते, णियभेएणणुहरंतओ माणो।

णरयतिरियणरामरगईसु उप्पायओ कमसो॥285॥

(शैलास्थिकाष्ठवेत्रान् निजभेदेनानुहरन् मानः।

नारकतिर्यग्नरामरगतिषूत्पादकः क्रमशः॥285॥)

वेणुवमूलोरब्भयसिंगे गोमुत्तए य खोरप्पे।

सरिसी माया णारयतिरियणरामरगईसु खिवदि जियं॥286॥

(वेणूपमूलॊरभ्रकशृंगेण गॊमूत्रेण च क्षुरप्रेण।

सदृशी माया नारकतिर्यग्नरामरगतिषु क्षिपति जीवम्॥286॥)

किमिरायचक्कतणुमलहरिद्दराएण सरिसओ लोहो।

णारयतिरिक्खमाणुसदेवेसुप्पायओ कमसो॥287॥

(क्रिमिरागचक्रतनुमलहरिद्रारागेण सदृशॊ लॊभः।

नारकतिर्यग्मानुषदेवेषूत्पादकः क्रमशः॥287॥)

णारयतिरिक्खिणरसुरगईसु उप्पण्णपढमकालम्हि।

कोहो माया माणो लोहुदओ अणियमा वापि॥288॥

(नारकतिर्यग्नरसुरगतिषूत्पन्नप्रथमकाले।

क्रॊधॊ माया मानॊ लोभॊदयः अनियमॊ वापि॥288॥)

अप्पपरोभयबाधणबंधासंजमणिमित्तकोहादी।

जेसिं णत्थि कसाया अमला अकसाइणो जीवा॥289॥

(आत्मपरॊभयबाधनबन्धासंयमनिमित्तक्रॊधादयः।

येषां न सन्ति कषाया अमला अकषायिणॊ जीवाः॥289॥)

कोहादिकसायाणं, चउ चउदस वीस होंति पद संखा।

सत्तीलेस्साआउगबंधाबंधगदभेदेहिं॥290॥

(क्रॊधादिकषायाणां चत्वारश्चतुर्दश विंशतिः भवन्ति पदसंख्याः।

शक्तिलेश्याऽऽयुष्कबन्धाबन्धगतभेदैः॥290॥)

सिलसेलवेणुमूलक्किमिरायादी कमेण चत्तारि।

कोहादिकसायाणं सत्तिं पडि होंति णियमेण॥291॥

(शिलाशैलवेणुमूलक्रिमिरागादीनि क्रमेण चत्वारि।

क्रोधादिकषायाणां शक्तिं प्रति भवन्ति नियमेन॥291॥)

किण्हं सिलासमाणे, किण्हादी छक्कमेण भूमिम्हि।

छक्कादी सुक्को ति य, धूलिम्मि जलम्मि सुक्केक्का॥292॥

(कृष्णा शिलासमाने कृष्णादयः षट् क्रमेण भूमौ।

षट्कादिः शुक्लेति च धूलौ जले शुक्लैका॥292॥)

सेलगकिण्हे सुण्णं, णिरयं च य भूगएगविट्ठाणे।

णिरयं इगिवितिआऊ, तिट्ठाणे चारि सेसपदे॥293॥

(शैलगकृष्णे शून्य निरयं च च भूगैकद्वित्रिस्थाने।

निरयमेकद्वित्र्यायुस्त्रिस्थाने चत्वारि शेषपदे॥293॥)

धूलिगछक्कट्ठाणे, चउराऊतिगदुगं च उवरिल्लं।

पणचदुठाणे देवं, देवं सुण्णं च तिट्ठणे॥294॥

(धूलिगषट्कस्थाने चतुरायूंषि त्रिकद्विकं चोपरितनम्।

पञ्चचतुर्थस्थाने देवं देवं शून्यं च तृतीयस्थाने॥294॥)

सुण्णं दुगइगिठाणे, जलम्हि सुण्णं असंखभजिदकमा।

चउचोदसवीसपदा, असंखलोगा हु पत्तेयं॥295॥

(शून्यं द्विकैकस्थाने जले शून्यमसंख्यभजितक्रमाः।

चतुश्चतुर्दशविंशतिपदा असंख्यलॊका हि प्रत्येकम्॥295॥)

पुह पुह कसायकालो, णिरये अंतोमुहुत्तपरिमाणो।

लोहादी संखगुणो, देवेसु य कोहपहुदीदो॥296॥

(पृथक् पृथक् कषायकालः निरये अन्तर्मुहूर्तपरिमाणः।

लॊभादिः संख्यगुणॊ देवेषु च क्रॊधप्रभृतितः॥296॥)

सव्वसमासेणवहिदसगसगरासी पुणो वि संगुणिदे।

सगसगगुणगारेहिं य सगसगरासीण परिमाणं॥297॥

(सर्वसमासेनावहितस्वकस्वकराशौ पुनरपि संगुणिते।

स्वकस्वकगुणकारैश्च स्वकस्वकराशीनां परिमाणम्॥297॥)

णरतिरिय लोहमायाकोहो माणो विइंदियादिव्व।

आवलिअसंखभज्जा, सगकालं वा समासेज्ज॥298॥

(नरतिरश्चॊः लॊभमायाक्रॊधॊ मानॊ द्वीन्द्रियादिवत्।

आवल्यसंख्यभाज्याः स्वककालं वा समासाद्य॥298॥)

इति कषायमार्गणाधिकारः।

7 - अथ ज्ञानमार्गणाधिकारः

जाणइ तिकालविसए, दव्वगुणे पज्जए य बहुभेदे।

पच्चक्खं च परोक्खं, अणेण णाणं ति णं बॆंति॥299॥

(जानाति त्रिकालविषयान् द्रव्यगुणान् पर्यायांश्च बहुभेदान्।

प्रत्यक्षं च परॊक्षमनेन ज्ञानमिति इदं ब्रुवन्ति॥299॥)

पंचेव होंति णाणा, मदिसुदओहिमणं च केवलयं।

खयउवसमिया चउरो, केवलणाणं हवे खइयं॥300॥

(पञ्चैव भवन्ति ज्ञानानि मतिश्रुतावधिमनश्च केवलम्।

क्षायोपशमिकानि चत्वारि केवलज्ञानं भवेत् क्षायिकम्॥300॥)

अण्णाणतियं होदि हु, सण्णाणतियं खु मिच्छअणउदये।

णवरि विभंग णाणं, पंचिंदियसण्णिपुण्णेव॥301॥

(अज्ञानत्रिकं भवति खलु सद्ज्ञानत्रिकं खलु मिथ्यात्वानोदये।

नवरि विभंगं ज्ञानं पंचेन्द्रियसंज्ञिपूर्ण एव॥301॥)

मिस्सुदये सम्मिस्सं, अण्णाणतियेण णाणतियमेव।

संजमविसेससहिए, मणपज्जवणाणमुद्दिट्ठं॥302॥

(मिश्रोदये संमिश्रमज्ञानत्रयेण ज्ञानत्रयमेव।

संयमविशेषसहिते मनःपर्ययज्ञानमुद्दिष्टम्॥302॥)

विसजंतकूडपंजरबंधादिसु विणुवएसकरणेण।

जा खलु पवट्टइ मई, मइअण्णाणं ति णं बेंति॥303॥

(विषयन्त्रकूटपंजरबंधादिषु विनोपदेशकरणेन।

या खलु प्रवर्तते मतिः मत्यज्ञानमिति इदं ब्रुवन्ति॥303॥)

आभीयमासुरक्खं, भारहरामायणादिउवएसा।

तुच्छा असाहणीया, सुयअण्णाणं ति णं बेंति॥304॥

(आभीतमासुरक्षं भारतरामायणाद्युपदेशाः।

तुच्छा असाधनीया श्रुताज्ञानमिति इदं ब्रुवन्ति॥304॥

विवरीयमोहिणाणं, खओवसमियं च कम्मबीजं च।

वेभंगो त्ति पउच्चइ, समत्तणाणीण समयम्हि॥305॥

विपरीतमवधिज्ञानं क्षायोपशमिकं च कर्म्मबीजं च।

विभंग इति प्रॊच्यते समासज्ञानिनां समये॥305॥

अहिमुहणियमियबोहणमाभिणिबोहयमणिंदिइंदियजं।

अवगहईहावायाधारणगा होंतिपत्तेयं॥306॥

अभिमुखनियमितबॊधनमाभिनिबॊधिकमनिन्द्रियेन्द्रियजम्।

अवग्रहेहावायधारणका भवन्ति प्रत्येकम्॥306॥

वेंजणअत्थअवग्गहभेदा हु हवंति पत्तपत्तत्थे।

कमसो ते वावरिदा, पढमं ण हि चक्खुमणसाणं॥307॥

व्यञ्जनार्थावग्रहभेदौ हि भवतः प्राप्ताप्रार्थे।

क्रमशस्तौ व्यापृतौ प्रथमॊ न हि चक्षुर्मनसॊः॥307॥)

विसयाणं विसईणं, संजोगाणंतरं हवे णियमा।

अवगहणाणं गहिदे, विसेसकंखा हवे ईहा॥308॥

(विषयाणां विषयिणां संयॊगानन्तरं भवेत् नियमात्।

अवग्रहज्ञानं गृहीते विशेषकांक्षा भवेदीहा॥308॥)

ईहणकरणेण जदा, सुणिण्णओ होदि सो अवाओ दु।

कालांतरे वि णिण्णिदवत्थुसमरणस्स कारणं तुरियं॥309॥

(ईहनकरणेन यदा सुनिर्णयॊ भवति स अवायस्तु।

कालान्तरेऽपि निर्णीतवस्तुस्मरणस्य कारणं तुर्यम्॥309॥)

बहु बहुविहं च खिप्पाणिस्सिदणुत्तं धुवं च इदरं च।

तत्थेक्केक्के जादे, छत्तीसं तिसयभेदं तु॥310॥

(बहु बहुविधं च क्षिप्रानिःसृतानुक्तं धुवं च इतरच्च।

तत्रैकैकस्मिन् जाते षट्त्रिंशत् त्रिशतभेदं तु॥310॥)

बहुबत्तिजादिगहणे, बहुबहुविहमियरमियरगहणम्हि।

सगणामादो सिद्धा, खिप्पादी सेदरा य तहा॥311॥

(बहुव्यक्तिजातिग्रहणे बहु बहुविधमितरदितरग्रहणे।

स्वकनामतः सिद्धाः क्षिप्रादयः सेतराश्च तथा॥311॥)

वत्थुस्स पदेसादो, वत्थुग्गहणं तु वत्थुदेसं वा।

सयलं वा अवलंबिय, अणिस्सिदं अण्णवत्थुगई॥312॥

(वस्तुनः प्रदेशात् वस्तुग्रहणं तु वस्तुदेशं वा।

सकलं वा अवलम्ब्य अनिःसृतमन्यवस्तुगतिः॥312॥)

पुक्खरगहणे काले, हत्थिस्स य वदणगवयगहणे वा।

वत्थुंतरचंदस्स य, धेणुस्स य बोहणं च हवे॥313॥

(पुष्करग्रहणे काले हस्तिनश्च वदनगवयग्रहणे वा।

वस्त्वन्तरचन्द्रस्य च धेनोश्च बोधनं च भवेत्॥313॥)

एक्कचउक्कं चउवीसट्ठावीसं च तिप्पडिं किच्चा।

इगिछव्वारसगुणिदे, मदिणाणे होंति ठाणाणि॥314॥

(एकचतुष्कं चतुर्विंशत्यष्टाविंशतिश्च त्रिःप्रतिं कृत्वा।

एकषड्द्वादशगुणिते मतिज्ञाने भवन्ति स्थानानि॥314॥)

अत्थादो अत्थंतरमुवलंभंतं भणंति सुदणाणं।

आभिणिबोहियपुव्वं, णियमेणिह सद्दजं पमुहं॥315॥

(अर्थादर्थान्तरमुपलभमानं भणन्ति श्रुतज्ञानम्।

आभिनिबोधिकपूर्वं नियमेनेह शब्दजं प्रमुखम्॥315॥)

लोगाणमसंखमिदा, अणक्खरप्पे हवंति छट्ठाण।

वेरूवछट्ठवग्गपमाणं रुऊणमक्खरगं॥316॥

(लॊकानामसंख्यमितानि अनक्षरात्मके भवन्ति षट्स्थानानि।

द्विरूपषष्ठवर्गप्रमाणं रूपॊनमक्षरगम्॥316॥)

पज्जायक्खरपदसंघादं पडिवत्तियाणिजोगं च।

दुगवारपाहुडं च य, पाहुडयं वत्थु पुव्वं च॥317॥

(पर्यायाक्षरपदसंघातं प्रतिपत्तिकानुयॊगं च।

द्विकवारप्राभृतं च च प्राभृतकं वस्तु पूर्वं च॥317॥)

तेसिं च समासेहि य, वीसविहं वा हु होदि सुदणाणं।

आवरणस्स विस भेदा, तत्तियमेत्ता हवंति त्ति॥318॥

(तेषां च समासैश्च विंशविध वा हि भवति श्रुतज्ञानम्।

आवरणस्यापि भेदाः तावन्मात्रा भवन्ति इति॥318॥)

णवरि विसेसं जाणे, सुहमजहण्णं तु पज्जयं णाणं।

पज्जायावरणं पुण, तदणंतरणाणभेदम्हि॥319॥

(नवरि विशेषं जानीहि सूक्ष्मजघन्यं तु पर्यायं ज्ञानम्।

पर्यायावरणं पुनः तदनन्तरज्ञानभेदे॥319॥)

सुहमणिगोदअपज्जत्तयस्स जादस्स पढमसमयम्हि।

हवदि हु सव्वजहण्णं णिच्चुग्घाडं णिरावरणं॥320॥

(सूक्ष्मनिगॊदापर्याप्तकस्य जातस्य प्रथमसमये।

भवति हि सर्वजघन्यं नित्यॊद्घाटं निरावरणम्॥320॥)

सुहमणिगोदअपज्जत्तगेसु सगसंभवेसु भमिऊण।

चरिमापुण्णतिवक्काणादिमवक्कट्ठियेव हवे॥321॥

(सूक्ष्मनिगोदापर्याप्तकेषु स्वकसम्भवेषु भ्रमित्वा।

चरमापूर्णत्रिवक्राणामादिमवक्रस्थिते एव भवेत्॥321॥)

सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जादस्स पढमसमयम्हि।

फासिंदियमदिपुव्वं सुदणाणं लद्धिअक्खरयं॥322॥

(सूक्ष्मनिगोदापर्याप्तकस्य जातस्य प्रथमसमये।

स्पर्शेन्द्रियमतिपूर्वं श्रुतज्ञानं लब्ध्यक्षरकम्॥322॥)

अवरुवरिम्मि अणंतमसंखं संखं च भागवड्ढीए।

संखमसंखमणंतं, गुणवड्ढी होंति हु कमेण॥323॥

(अवरोपरि अनन्तमसंख्यं संख्यं च भागवृद्धयः।

संख्यमसंख्यमनन्तं गुणवृद्धयो भवन्ति हि क्रमेण॥323॥)

जीवाणं च य रासी, असंखलोगा वरं खु संखेज्जं।

भागगुणम्हि य कमसो, अवट्ठिदा होंति छट्ठाणे॥324॥

(जीवानां च च राशिः असंख्यलोका वरं खलु संख्यातम्।

भागगुणयोश्च क्रमशः अवस्थिता भवन्ति षट्स्थाने॥324॥)

ऊव्वंकं चउरंकं, पणछस्सत्तंक अट्ठअंकं च।

छव्वड्ढीणं सण्णा, कमसो संदिट्ठिकरणट्ठं॥325॥

(ऊर्वंकश्चतुरङ्कः पञ्चट्सप्तांकः अष्टांकश्च।

षड्वृद्धीनां संज्ञा क्रमशः संदृष्टिकरणार्थम्॥325॥)

अंगुलअसंखभागे, पुव्वगवड्ढीगदे दु परवड्ढी।

एक्क वारं होदि हु पुणो पुणो चरिमऊड्ढित्ती॥326॥

(अंगुलासंख्यातभागे पूर्वगवृद्धिगते तु परवृद्धिः।

एकं वारं भवति हि पुनः पुनः चरमवृद्धिरिति॥326॥)

आदिमछट्ठाणम्हि य, पंच य वड्ढी हवंति सेसेसु।

छव्वड्ढीओ होंति हु, सरिसा सवत्थ पदसंखा॥327॥

(आदिमषट्स्थाने च पञ्च च वृद्धयो भवन्ति शेषेषु।

षड्वृद्धयो भवन्ति हि सदृशा सर्वत्र पदसंख्या॥327॥)

छट्ठाणाणं आदी, अट्ठंकं होदि चरिममुव्वंकं।

जम्हा जहण्णणाणं, अट्ठंकं जिणदिट्ठं॥928॥

(षट्स्थानानामादिरष्टांकं भवति चरममुर्वङ्कम्।

यस्माज्जघन्यज्ञानमष्टांकं भवति जिनदृष्टम्॥328॥)

एक्कं खलु अट्ठंकं, सत्तंकं कंडयं तदो हेट्ठा।

रूवहियकंडएण य, गुणिदकमा जावमुव्वंकं॥329॥

(एकं खलु अष्टांकं सप्ताङ्कं काण्डकं ततोऽधः।

रूपाधिककाण्डकेन च गुणितक्रमा यावदुर्वङ्कः॥329॥)

सव्वसमासो णियमा, रूवाहियकंडयस्स वग्गस्स।

विंदस्स य संवग्गो, होदि त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥330॥

(सर्वसमासो नियमात् रूपाधिककाण्डकस्य वर्ग्गस्य।

वृन्दस्य च संवर्गो भवतीति जिनैर्निर्दिष्टम्॥330॥)

उक्कस्ससंखमेत्तं, ततिचउत्थेक्कदालछप्पण्णं।

सत्तदसमं च भागं, गंतूण य लद्धिअक्खरं दुगुणं॥331॥

(उत्कृष्टसंख्यातमात्रं तत्त्रिचतुर्थैकचत्वारिंशत्षट्पञ्चाशम्।

सप्तदशमं च भागं गत्वा च लब्ध्यक्षरं द्विगुणम्॥331॥)

एवं असंखलोगा, अणक्खरप्पे हवंति छट्ठाणा।

ते पज्जायसमासा, अक्खरगं उवरि वोच्छामि॥332॥

(एवमसंख्यलोका अनक्षरात्मके षट्स्थानानि।

ते पर्यायसमासा अक्षरगमुपरि वक्ष्यामि॥332॥)

चरिमुव्वंकेणवहिदअत्थक्खरगुणिदचरिममुव्वंकं।

अत्थक्खरं तु णाणं होदि त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥333॥

(चरिमौर्वंकेणावहितार्थाक्षरगुणितचरमौर्वङ्कम्।

अर्थाक्षरं तु ज्ञानं भवतीति जिनैर्निर्दिष्टम्॥333॥)

पण्णवणिज्जा भावा, अणंतभागो दु अणभिलप्पाणं।

पण्णवणिज्जाणं पुण, अणंतभागो सुदणिबद्धो॥334॥

(प्रज्ञापनीया भावा अनन्तभागस्तु अनभिलप्यानाम्।

प्रज्ञापनीयानां पुनः अनन्तभागः श्रुतनिबद्धः॥334॥)

एयक्खरादु उवरिं, एगेगेणक्खरेण वड्ढंतो।

संखेज्जे खलु उड्ढे पदणामं होदि सुदणाणं॥335॥

(एकाक्षरात्तूपरि एकैकेनाक्षरेण वर्धमानाः।

संख्येये खलु वृद्धे पदनाम भवति श्रुतज्ञानम्॥335॥)

सोलससयचउतीसा, कोडी तियसीदिलक्खयं चेव।

सत्तसहस्साट्ठसया, अट्ठासीदी य पदवण्णा॥336॥

(षोडशशतचतुस्त्रिंशत्कोट्यः त्र्यशीतिलक्षकं चैव।

सप्तसहस्राण्यष्टशतानि अष्टाशीतिश्च पदवर्णाः॥336॥)

एयपदादो उवरिं, एगेगेणक्खरेण वड्ढंतो।

संखेज्जसहस्सपदे, उड्ढे संघादणाम सुदं॥337॥

(एकपदादुपरि एकैकेनाक्षरेण वर्धमानाः।

संख्यातसहस्रपदे वृद्धे संघातनाम श्रुतम्॥337॥)

एक्कदरगदिणिरूवयसंघादसुदादु उवरि पुव्वं वा।

वण्णे संखेज्जे संघादे उड्ढम्हि पडिवत्ती॥338॥

(एकतरगतिनिरूपकसंघातश्रुतादुपरि पूर्वं वा।

वर्णे संख्येये संघाते वृद्धे प्रतिपत्तिः॥338॥)

चउगइसरूवरूवयपडिवत्तीदो दु उवरि पुव्वं वा।

वण्णे संखेज्जे पडिवत्तीउड्ढम्हि अणियोगं॥339॥

(चतुर्गतिस्वरूपरूपकप्रतिपत्तितस्तु उपरि पूर्वं वा।

वर्णे संख्याते प्रतिपत्तिवृद्धे अनुयोगम्॥339॥)

चोद्दसमग्गणसंजुदअणियोगादुवरि वड्ढिदे वण्णे।

चउरादीअणियोगे दुगवारं पाहुडं होदि॥340॥

(चतुर्दशमार्गणासंपुतानुयोगादुपरि वर्धिते वर्णे।

चतुराद्यनुयोगे द्विकवारं प्राभृतं भवति॥340॥)

अहियारो पाहुडयं, एयट्ठो पाहुडस्स अहियारो।

पाहुडपाहुडणामं, होदि त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥341॥

(अधिकारः प्राभृतमेकार्थः प्राभृतस्याधिकारः।

प्राभृतप्राभृतनामा भवतीति जिनैर्निर्दिष्टम्॥341॥)

दुगवारपाहुडादो, उवरिं वण्णे कमेण चउवीसे।

दुगवारपाहुडे संउड्ढे खलु होदि पाहुडयं॥342॥

(द्विकवारप्राभृतादुपरि वर्णे क्रमेण चतुर्विंशतौ।

द्विकवारप्राभृते संवृद्धे खलु भवति प्राभृतकम्॥342॥)

वीसं वीसं पाहुडअहियारे एक्कवत्थुअहियारो।

एक्केक्कवण्णउड्ढी, कमेण सव्वत्थ णायव्वा॥343॥

(विंशतौ विंशतौ प्राभृताधिकारे एको वस्त्वधिकारः।

एकैकवर्णवृद्धिः क्रमेण सर्वत्र ज्ञातव्या॥343॥)

दस चोदसट्ठ अट्ठारसयं बारं च बार सोलं च।

वीसं तीसं पण्णारसं च दस चदुसु वत्थूणं॥344॥

(दश चतुर्दशाष्ट अष्टादशकं द्वादश च द्वादश षोडश च।

विंशतिः त्रिंशत् पञ्चदश च दश चतुर्षु वस्तूनाम्॥344॥)

उप्पायपुव्वगाणियविरियपवादत्थिणत्थियपवादे।

णाणासच्चपवादे आदाकम्मप्पवादे य॥345॥

(उत्पादपूर्वाग्रायणीयवीर्यप्रवादास्तिनास्तिकप्रवादानि।

ज्ञानसत्यप्रवादे आत्मकर्मप्रवादे च॥345॥)

पच्चक्खाणे विज्जाणुवादकल्लाणपाणवादे य।

किरियाविसालपुव्वे कमसोथ तिलोयबिंदुसारे य॥346॥

(प्रत्याख्यानं विद्यानुवादकल्याणप्राणवादानि च।

क्रियाविशालपूर्वं क्रमशः अथ त्रिलोकविन्दुसारं च॥346॥)

पणणउदिसया वत्थू, पाहुडया तियसहस्सणवयसया।

एदेसु चाद्दसेसु वि, पुव्वेसु हवंति मिलिदाणि॥347॥

(पञ्चनवतिशतानि वस्तूनि प्राभृतकानि त्रिसहस्रनवशतानि।

एतेषु चतुर्दशस्वपि पूर्वेषु भवन्ति मिलितानि॥347॥)

अत्थक्खरं च पदसंघातं पडिवत्तियाणिजोगं च।

दुगवारपाहुडं च य पाहुडयं वत्थु पुव्वं च॥348॥

(अर्थाक्षरं च पदसंघातं प्रतिपत्तिकानुयॊगं च।

द्विकबारप्राभृतं च च प्राभृतकं वस्तु पूर्वं च॥348॥)

कमवण्णुत्तरवड्ढिय, ताण समासा य अक्खरगदाणि।

णाणवियप्पे वीसं गंथे, बारस य चोद्दसयं॥349॥

(क्रमवर्णोत्तरवर्धिते तेषां समासाश्च अक्षरगताः।

ज्ञानविकल्पे विंशतिः ग्रन्थे द्वादश च चतुर्दशकम्॥349॥)

बारुत्तरसयकोडी, तेसीदी तह य होंति लक्खाणं।

अट्ठावण्णसहस्सा पंचेव पदाणि अंगाणं॥350॥

(द्वादशोत्तरशतकॊट्यः त्र्यशीतिस्तथा भवन्ति लक्षाणाम्।

अष्टापंचाशत्सहस्राणि पञ्चैव पदानि अङ्गानाम्॥350॥)

अडकोडिएयलक्खा अट्ठसहस्सा य एयसदिगं च।

पण्णत्तरि वण्णाओ, पइण्णयाणं पमाणं तु॥351॥

(अष्टकॊट्येकलक्षाणि अष्टसहस्राणि च एकशतकं च।

पंचसप्ततिः वर्णाः प्रकीर्णकानां प्रमाणं तु॥351॥)

तेत्तीस वेंजणाइं, सत्तावीसा सरा तहा भणिया।

चत्तारि य जोगवहा, चउसट्ठी मूलवण्णाओ॥352॥

(त्रयस्त्रिंशत् व्यंजनानि सप्तविंशतिः स्वरास्तथा भणिताः।

चत्वारश्च योगवहाः चतुःषष्टिः मूलवर्णाः॥352॥)

चउसट्ठिपदं विरलिय, दुगं च दाउण संगुणं किच्चा।

रूऊणं च कए पुण, सुदणाणस्सक्खरा होंति॥353॥

(चतुःषष्ठिपदं विरलयित्वा द्विकं च दत्वा संगुणं कृत्वा।

रूपोने च कृते पुनः श्रुतज्ञानस्याक्षराणि भवन्ति॥353॥)

एकट्ठ च च य छस्सत्तयं च च य सुण्णसत्ततियसत्ता।

सुण्ण णव पण पंच य एक्कं छक्केक्कगो य पणगं च॥354॥

(एकाष्ट च च च षट्सप्तकं च च च शून्यसप्तत्रिकसप्त।

शून्यं नव पञ्च पञ्च च एकं षट्कैककश्च पञ्चकं च॥354॥)

मज्झिमपदक्खरवहिदवण्णा ते अंगपुव्वगपदाणि।

सेसक्खरसंखा ओ, पइण्णयाणं पमाणं तु॥355॥

(मध्यमपदाक्षरावहितवर्णास्ते अंगपूर्वपदानि।

शेषाक्षरसंख्या अहो प्रकीर्णकानां प्रमाणं तु॥355॥)

आयारे सुद्दयडे, ठाणे समवायणामगे अंगे।

तत्तो विक्खापण्णत्तीए णाहस्स धम्मकहा॥356॥

(आचारे सूत्रकृते स्थाने समवायनामके अंगे।

ततो व्याख्याप्रज्ञप्तौ नाथस्य धर्मकथायां॥356॥)

तोवासयअज्झयणे, अंतयडे णुत्तरोववाददसे।

पण्हाणं वायरणे, विवायसुत्ते य पदसंखा॥357॥

(तत उपासकाध्ययने अन्तकृते अनुत्तरौपपाददशे।

प्रश्नानां व्याकरणे विपाकसूत्रे च पदसंख्या॥357॥)

अट्ठारस छत्तीसं, वादालं अडकडी अड वि छप्पण्णं।

सत्तरि अट्ठावीसं, चउदालं सोलससहस्सा॥358॥

(अष्टादश षट्त्रिंशत् द्वाचत्वारिंशत् अष्टकृतिः अष्टद्वि षट्पंचाशत्।

सप्ततिः अष्टविंशतिः चतुश्चत्वारिंशत् षोडशसहस्राणि॥358॥)

इगिदुगपंचेयारं, तिवीसदुतिणठदिलक्ख तुरियादी।

चुलसीदिलक्खमेया, कोडी य विवागसुत्तम्हि॥359॥

(एकद्विकपंचैकादशत्रयोविंशतिद्वित्रिनवतिलक्षं चतुर्थादिषु।

चतुरशीतिलक्षमेका कोटिश्च विपाकसूत्रे॥359॥)

वापणनरनोनानं, एयारंगे, जुदी हु वादम्हि।

कनजतजमताननमं, जनकनजयसीम बाहिरे वण्णा॥360॥

(वापणनरनोनानं एकादशांगे युतिर्हि वादे।

कनजतजमताननमं जनकनजयसीम बाह्ये वर्णाः॥360॥)

चंदरविजंबुदीवयदीवसमुद्दयवियाहपण्णत्ती।

परियम्मं पचविहं सुत्तं पढमाणिजोगमदो॥361॥

(चन्द्ररविजम्बूद्वीपकद्वीपसमुद्रकव्याख्याप्रज्ञप्तयः।

परिकर्म पंचविधं सूत्रं प्रथमानुयोगमतः॥361॥)

पुव्वं जलथलमाया आगासयरूवगयमिमा पंच।

भेदा हु चूलियाए तेसु पमाणं इणं कमसो॥362॥

(पूर्वं जलस्थलमायाकाशकरूपगता इम पंच।

भेदा हि चूलिकायाः तेषु प्रमाणमिदं क्रमशः॥362॥)

गतनम मनगं गोरम मरगत जवगातनोननं जजलक्खा।

मननन धममननोननननामं रनधजधरानननजलादी॥363॥

(गतनम मनगं गोरम मरगत जवगातनोननं जजलक्षाणि।

मननन धममननोननननामं रनधजधरानन जलदिषु॥363॥)

याजकनामेनाननमेदाणि पदाणि होंति परिकम्मे।

कानवधिवाचनाननमेसो पुण चूलियाजोगो॥364॥

(याजकनामेनाननमेतानि पदानि भवन्ति परिकर्मणि।

कानवधिवाचनाननमेषः पुनः चूलिकायोगः॥364॥)

पण्णट्ठदाल पणतीस तीस पण्णास पण्ण तेरसदं।

णउदी दुदाल पुव्वे पणवण्णा तेरससयाइं॥365॥

(पंचाशदष्टचत्वारिंशत् पंचत्रिंशत् पंचाशत् पंचाशत् त्रयोदशशतम्।

नवतिः द्वाचत्वारिंशत् पूर्वे पंचपंचाशत् त्रयोदशशतानि॥365॥)

छस्सयपण्णासाइं चउसयपण्णास छसयपणुवीसा।

विहि लक्खेहि दु गुणिया पंचम रूऊण छज्जुदा छट्ठे॥366॥

(षट्शतपंचाशानि चतुःशतपंचाशत् षट्शतपंचविंशतिः।

द्वाभ्यां लक्षाभ्यां तु गुणितानि पंचमं रूपोनं षट्युतानि षष्ठे॥366॥)

सामइयचउवीसत्थयं तदो वंदणा पडिक्कमणं।

वेणइयं किदियम्मं दसवेयालं च उत्तरज्झयणं॥367॥

(सामायिकं चतुर्विंशस्तवं ततो वंदना प्रतिक्रमणम्।

वैनयिकं कृतिकर्म दशवैकालिकं च उत्तराध्ययनम्॥367॥)

कप्पववहारकप्पाकप्पियमहकप्पियं च पुंडरियं।

महपुंडरीयणिसिहियमिदि चोद्दसमंगबाहिरयं॥368॥

(कल्प्यव्यवहार-कल्पाकल्प्यिक-महाकल्प्यं च पुंडरीकम्।

महापुंडरीकं निषिद्धिका इति चतुर्दशांगबाह्यम्॥368॥)

सुदकेवलं च णाणं, दोण्णि वि सरिसाणि होंति बोहादो।

सुदणाणं तु परोक्खं, पच्चक्खं केवलं णाणं॥369॥

(श्रुतं केवलं च ज्ञानं द्वेऽपि सदृशे भवतो बोधात्।

श्रुतज्ञानं तु परोक्षं प्रत्यक्षं केवलं ज्ञानम्॥369॥)

अवहीयदि त्ति ओही, सीमाणाणे त्ति वण्णियं समये।

भवगुणपच्चयविहियं, जमोहिणाणे त्ति णं बेंति॥370॥

(अवधीयत इत्यवधिः सीमाज्ञानमिति वर्णितं समये।

भवगुणप्रत्ययविधिकं यदवधिज्ञानमिति इदं ब्रुवन्ति॥370॥)

भवपच्चइगो सुरणिरयाणं तित्थे वि सव्वअंगुत्थो।

गुणपच्चइगो णरतिरियाणं संखादिचिण्हभवो॥371॥

(भवप्रत्ययकं सुरनारकाणां तीर्थेऽपि सर्वांगोत्थम्।

गुणप्रत्ययकं नरतिरश्चां शंखादिचिह्नभवम्॥371॥)

गुणपच्चइगो छद्धा, अणुगावट्ठिदपवड्ढमाणिदरा।

देसोही परमोही, सव्वोहि त्ति य तिधा ओही॥372॥

(गुणप्रत्ययकः षोढा अनुगावस्थितप्रवर्धमानेतरे।

देशावधिः परमावधिः सर्वावधिरिति च त्रिधा अवधिः॥372॥)

भवपच्चइगो ओही, देसोही होदि परमसव्वोही।

गुणपच्चइगो णियमा, देसोही वि य गुणे होदि॥373॥

(भवप्रत्ययकोऽवधिः देशावधिः भवति परमसर्वावधी।

गुणप्रत्ययको नियमात् देशावधिरपि च गुणे भवति॥373॥)

देसोहिस्स य अवरं, णरतिरिये होदि संजदम्हि वरं।

परमोही सव्वोही, चरमसरीरस्स विरदस्स॥374॥

(देशावधेश्च अवरं नरतिरश्चोः भवति संयते वरम्।

परमावधिः सर्वावधिः चरमशरीरस्य विरतस्य॥374॥)

पडिवादी देसोही, अप्पडिवादी हवंति सेसा ओ।

मिच्छत्तं अविरमणं, ण य पडिवज्जंति चरमदुगे॥375॥

(प्रतिपाती देशावधिः अप्रतिपातिनौ भवतः शेषौ अहॊ।

मिथ्यात्वमविरमणं न च प्रतिपद्येते चरमद्विके॥375॥)

दव्वं खेत्तं कालं, भावं पडि रूवि जाणदे ओही।

अवरादुक्कस्सो त्ति य, वियप्परहिदो दु सव्वोही॥376॥

(द्रव्यं क्षेत्रं कालं भावं प्रति रूपि जानीते अवधिः।

अवरादुत्कृष्ट इति च विकल्परहितस्तु सर्वावधिः॥376॥)

णोकम्मुरालसंचं, मज्झिमजोगज्जियं सविस्सचयं।

लोयविभत्तं जाणदि, अवरोही दव्वदो णियमा॥377॥

(नॊकर्मौरालसंचयं मध्यमयॊगार्जितं सविस्रसॊपचयम्।

लॊकविभक्तं जानाति अवरावधिः द्रव्यतः नियमात्॥377॥)

सुहुमणिगोदअपज्जत्तयस्स जादस्स तदियसमयम्हि।

अवरोगाहणमाणं, जहण्णयं ओहिखेत्तं तु॥378॥

(सूक्ष्मनिगॊदापर्याप्तकस्य जातस्य तृतीयसमये।

अवरावगाहनमानं जघन्यकमवधिक्षेत्रं तु॥378॥)

अवरोहिखेत्तदीहं, वित्थारुस्सेहयं ण जाणामो।

अण्णं पुण समकरणे, अवरोगाहणपमाणं तु॥379॥

(अवरावधिक्षेत्रदीर्घं विस्तारोत्सेधकं न जानीमः।

अन्यत् पुनः समीकरणे अवरावगाहनाप्रमाणं तु॥379॥)

अवरोगाहणमाणं, उस्सेहंगुलअसंखभागस्स।

सूइस्स य घणपदरं, होदि हु तक्खेत्तसमकरणे॥380॥

(अवरावगाहनमानमुत्सेधांगुलासंख्यभागस्य।

सूचेश्च घनप्रतरं भवति हि तत्क्षेत्रसमीकरणे॥380॥)

अवरं तु ओहिखेत्तं, उस्सेहं अंगुलं हवे जम्हा।

सुहुमोगाहणमाणं उवरि पमाणं तु अंगुलयं॥381॥

(अवरं तु अवधिक्षेत्रमुत्सेधमंगुलं भवेद्यस्मात्।

सूक्ष्मावगाहनमानमुपरि प्रमाणं तु अंगुलकम्॥381॥)

अवरोहिखेत्तमज्झे, अवरोही अवरदव्वमवगमदि।

तद्दव्वस्सवगाहो उस्सेहासंखघणपदरो॥382॥

(अवरावधिक्षेत्रमध्ये अवरावधिः अवरद्रव्यमवगच्छति।

तद्द्रव्यस्यावगाहः उत्सेधासंख्यघनप्रतरः॥382॥)

आवलिअसंखभागं, तीदभविस्सं च कालदो अवरं।

ओही जाणदि भावे, कालअसंखेज्जभागं तु॥383॥

(आवल्यसंख्यभागमतीतभविष्यच्च कालतः अवरम्।

अवधिः जानाति भावे कालासंख्यातभागं तु॥383॥)

अवरद्दव्वादुवरिमदव्ववियप्पाय होदि धुवहारो।

सिद्धाणंतिमभागो, अभव्वसिद्धादणंतगुणो॥384॥

(अवरद्रव्यादुपरिमद्रव्यविकल्पाय भवति ध्रुवहारः।

सिद्धानन्तिमभागः अभव्यसिद्धादनन्तगुणः॥384॥)

धुवहारकम्मवग्गणगुणगारं कम्मवग्गणं गुणिदे।

समयपबद्धपमाणं, जाणिज्जो ओहिविसयम्हि॥385॥

(ध्रुवहारकार्मणवर्गणागुणकारं कार्मणवर्गणां गुणिते।

समयप्रबद्धप्रमाणं ज्ञातव्यमवधिविषये॥385॥)

मणदव्ववग्गणाण, वियप्पाणंतिमसमं खु धुवहारो।

अवरुक्कस्सविसेसा, रूवहिया तव्वियप्पा हु॥386॥

(मनोद्रव्यवर्गणानां विकल्पानन्तिमसमं खलु ध्रुवहारः।

अवरोत्कृष्टविशेषाः रूपाधिकास्तद्विकल्पा हि॥386॥)

अवरं होदि अणंतं, अणंतभागेण अहियमुक्कस्सं।

इदि मणभेदाणंतिमभागो दव्वम्मि धुवहारो॥387॥

(अवरं भवति अनन्तमनन्तभागेनाधिकमुत्कृष्टम्।

इति मनोभेदानन्तिमभागो द्रव्ये ध्रुवहारः॥387॥)

धुवहारस्स पमाणं, सिद्धाणंतिमपमाणमेत्तं पि।

समयपबद्धणिमित्तं, कम्मणवग्गणगुणादो दु॥388॥

(ध्रुवहारस्य प्रमाणं सिद्धानन्तिमप्रमाणमात्रमपि।

समयप्रबद्धनिमित्तं कार्मणवर्गणागुणतस्तु॥388॥)

होदि अणंतिमभागो, तग्गुणणारो वि देसओहिस्स।

दोऊणदव्वभेदपमाणद्धुवहारसंवग्गो॥389॥

(भवत्यनन्तिमभागस्तद्गुणकारॊ पि देशावधेः।

द्व्यूनद्रव्यभेदप्रमाणध्रुवहारसंवर्गः॥389॥)

अंगुलअसंखगुणिदा, खेत्तवियप्पा य दव्वभेदा हु।

खेत्तवियप्पा अवरुक्कस्सविसेसं हवे एत्थ॥390॥

(अंगुलासंख्यगुणिताः क्षेत्रविकल्पाश्च द्रव्यभेदा हि।

क्षेत्रविकल्पा अवरॊत्कृष्टविशेषॊ भवेदत्र॥390॥)

अंगुलअसंखभागं, अवरं उक्कस्सयं हवे लोगो।

इदि वग्गणगुणगारो, असंखधुवहारसंवग्गो॥391॥

(अंगुलासंख्यभागमवरमुत्कृष्टकं भवेल्लॊकः।

इति वर्ग्गणगुणकारॊऽसंख्यध्रुवहारसंवर्ग्गः॥391॥)

वग्गणरासिपमाणं, सिद्धाणंतिमपमाणमेत्तं पि।

दुगसहियपरमभेदपमाणवहाराण संवग्गो॥392॥

(वर्ग्गणाराशिप्रमाणं सिद्धानन्तिमप्रमाणमात्रमपि।

द्विकसहितपरमभेदप्रमाणावहाराणां संवर्ग्गः॥392॥)

परमावहिस्स भेदा, सगओगाहणवियप्पहदतेऊ।

इदि धुवहारं वग्गणगुणगारं वग्गणं जाणे॥393॥

(परमावधेर्भेदाः स्वकावगाहनविकल्पहततेजसः।

इति ध्रुवहारं वर्गणागुणकारं वर्ग्गणां जानीहि॥393॥)

देसोहिअवरदव्वं धुवहारेणवहिदे हवे विदियं।

तदियादिवियप्पेसु वि, असंखवारो त्ति एस कमो॥394॥

(देशावध्यवरद्रव्यं ध्रुवहारेणावहिते भवेत् द्वितीयम्।

तृतीयादिविकल्पेष्वपि असंख्यवार इत्येषः क्रमः॥394॥)

देसोहिमज्झभेदे सविस्ससोवचयतेजकम्मंगं।

तेजोभासमणाणं, वग्गणयं केवलं जत्थ॥395॥

(देशावधिमध्यभेदे सविस्रसोपचयतेजःकर्माङ्गम्।

तेजोभाषामनसां वर्गणां केवलां यत्र॥395॥)

पस्सदि ओहि तत्थ असंखेज्जाओ हवंति दीउवही।

वासाणि असंखेज्जा, होंति असंखेज्जगुणिदकमा॥396॥

(पश्यत्यवधिस्तत्र असंख्येया भवन्ति द्वौपौदधयः।

वर्षाणि असंख्यातानि भवन्ति असंख्यातगुणितक्रमाणि॥396॥)

तत्तो कम्मइयस्सिगिसमयपबद्धं विविस्ससोवचयं।

धुवहारस्स विभज्जं, सव्वोही जाव ताव हवे॥397॥

(ततः कार्मणस्य एकसमयप्रबद्धं विविस्रसोपचयम्।

ध्रुवहारस्य विभाज्यं सर्वावधिः यावत् तावत् भवेत्॥397॥)

एदम्हि विभज्जंते, दुचरिमदेसावहिम्मि वग्गणयं।

चरिमे कम्मइयस्सिगिवग्गणमिगिवारभजिदं तु॥398॥

(एतस्मिन् विभज्यमाने द्विचरमदेशावधौ वर्ग्गणा।

चरमे कार्मणस्यैकवर्ग्गणा एकवारभक्ता तु॥398॥)

अंगुलअसंखभागे, दव्ववियप्पे गदे दु खेत्तम्हि।

एगागासपदेसो, वड्ढदि संपुण्णलोगो त्ति॥399॥

(अंगुलासंख्यभागे, द्रव्यविकल्पे गते तु क्षेत्रे।

एकाकाशप्रदेशो वर्धते सम्पूर्णलोक इति॥399॥)

आवलिअसंखभागो, जहण्णकालो कमेण समयेण।

वड्ढदि देसोहिवरं पल्लं समऊणयं जाव॥400॥

(आवल्यसंख्यभागो जघन्यकालः क्रमेण समयेन।

वर्धते देशावधिवरं पल्यं समयोनकं यावत्॥400॥)

अंगुलअसंखभागं, धुवरूपेण य असंखवारं तु।

असंखसंखं भागं, असंखवारं तु अद्धुवगे॥401॥

(अंगुलासंख्यभागं ध्रुवरूपेण च असंख्यवारं तु।

असंख्यसंख्यं भागमसंख्यवारं तु अध्रुवगे॥401॥)

धुवअद्धुवरूवेण य, अवरे खेत्तम्हि वड्ढिदे खेत्ते।

अवरे कालम्हि पुणो, एक्केक्कं वड्ढदे समयं॥402॥

(ध्रुवाध्रुवरूपेण च अवरे क्षेत्रे वर्द्धिते क्षेत्रे।

अवरे काले पुनः एकैको वर्धते समयः॥402॥)

संखातीदा समया, पढमे पव्वम्मि उभयदो वड्ढी।

खेत्तं कालं अस्सिय, पढमादी कंडये वोच्छं॥403॥

(संख्यातीताः समयाः प्रथमे पर्वे उभयतो वृद्धिः।

क्षेत्रं कालमाश्रित्य प्रथमादीनि काण्डकानि वक्ष्ये॥403॥)

अंगुलमावलियाए, भागमसंखेज्जदो वि संखेज्जो।

अंगुलमावलियंतो, आवलियं चांगुलपुधत्तं॥404॥

(अंगुलावल्योः भागोऽसंख्येयोऽपि संख्येयः।

अंगुलमावल्यन्त आवलिकश्चांगुलपृथक्त्वम्॥404॥)

आवलियपुधत्तं पुण, हत्थं तह गाउयं मुहुत्तं तु।

जोयणभिण्णमुहुत्तं, दिवसंतो पण्णुवीसं तु॥405॥

(आवलिपृथक्त्वं पुनः हस्तस्तथा गव्यूतिः मुहूर्तस्तु।

योजनं भिन्नमुहूर्तः दिवसान्तः पञ्चविंशतिस्तु॥405॥)

भरहम्मि अद्धमासं, साहियमासं च जम्बुदीवम्मि।

वासं च मणुवलोए, वासपुधत्तं च रुचगम्मि॥406॥

(भरते अर्धमासः साधिकमासश्च जम्बूद्वीपे।

वर्षश्च मनुजलोके वर्षपृथक्त्वं च रुचके॥406॥)

संखेज्जपमे वासे, दीवसमद्दा हवंति संखेज्जा।

वासम्मि असंखेज्जे, दीवसमुद्दा असंखेज्जा॥407॥

(संख्यातप्रमे वर्षे द्वीपसमुद्रा भवन्ति संख्याताः।

वर्षे असंख्येये द्वीपसमुद्रा असंख्येयाः॥407॥)

कालविसेसेणवहिदखेत्तविसेसो धुवा हवे वड्ढी।

अद्धुववड्ढी वि पुणो, अविरुद्धं इट्ठकंडम्मि॥408॥

(कालविशेषेणावहितक्षेत्रविशेषो ध्रुवा भवेत् वृद्धिः।

अध्रुववृद्धिरपि पुनः अविरुद्धा इष्टकाण्डे॥408॥)

अंगुलअसंखभागं, संखं वा अंगुलं च तस्सेव।

संखमसंखं एवं, सेढीपदरस्स अद्धुवगे॥409॥

(अंगुलासंख्यभागः संख्यं वा अंगुलं तस्यैव।

संख्यमसंख्यमेवं श्रेणीप्रतरयॊरध्रुवगायाम्॥409॥)

कम्मइयवग्गणं ध्रुवहारेणिगिवारभाजिदे दव्वं।

उक्कस्सं खेत्तं पुण, लोगो संपुण्णओ होदि॥410॥

(कार्मणवर्गणां ध्रुवहारेणैकवारभाजिते द्रव्यम्।

उत्कृष्टं क्षेत्रं पुनः लॊकः संपूर्णॊ भवति॥410॥)

पल्लसमऊण काले, भावेण असंखलोगमेत्ता हु।

दव्वस्स य पज्जाया, वरदेसोहिस्स विसया हु॥411॥

(पल्यं समयॊनं काले भावेनासंख्यलॊकमात्रा हि।

द्रव्यस्य च पर्याया वरदेशावधेर्विषया हि॥411॥)

काले चउण्ण उड्ढी, कालो भजिदव्व खेत्तउड्ढी य।

उड्ढीए दव्वपज्जय, भजिदव्वा खेत्त-काला हु॥412॥

(काले चतुर्ण्णां वृद्धिः कालॊ भजितव्यः क्षेत्रवृद्धिश्च।

वृद्धया द्रव्यपर्याययॊः भजितव्यौ क्षेत्र-कालौ हि॥412॥)

देसावहिवरदव्वं, धुवहारेणवहिदे हवे णियमा।

परमावहिस्स अवरं, दव्वपमाणं तु जिणदिट्ठं॥413॥

(देशावधिवरद्रव्यं ध्रुवहारेणावहिते भवेत् नियमात्।

परमावधेरवरं द्रव्यप्रमाणं तु जिनदिष्टम्॥413॥)

परमावहिस्स भेदा, सगउग्गाहणवियप्पहदतेऊ।

चरमे हारपमाणं, जेट्ठस्स य होदि दव्वं तु॥414॥

(परमावधेर्भेदाः स्वकावगाहनविकल्पहततेजाः।

चरमे हारप्रमाणं ज्येष्ठस्य च भवति द्रव्यं तु॥414॥)

सव्वावहिस्स एक्को, परमाणू होदि णिव्वियप्पो सो।

गंगामहाणइस्स, पवाहोव्वा धुवो हवे हारो॥415॥

(सर्वावधेरेकः परमाणुर्भवति निर्विकल्पः सः।

गंगामहानद्याः प्रवाह इव ध्रुवो भवेत् हारः॥415॥)

परमोहिदव्वभेदा, जेत्तियमेत्ता हु तेत्तिया होंति।

तस्सेव खेत्त-कालवियप्पा विसया असंखगुणिदकमा॥416॥

(परमावधिद्रव्यभेदा यावन्मात्रा हि तावन्मात्रा भवन्ति।

तस्यैव क्षेत्र-कालविकल्पा विषया असंख्यगुणितक्रमाः॥416॥)

आवलिअसंखभागा, इच्छिदगच्छधणमाणमेत्ताओ।

देसावहिस्स खेत्ते काले वि य होंति संवग्गे॥417॥

(आवल्यसंख्यभागा इच्छितगच्छधनमानमात्राः।

देशावधेः क्षेत्रे कालेऽपि च भवन्ति संवर्ग्गे॥417॥)

गच्छसमा तक्कालियतीदे रूऊणगच्छधणमेत्ता।

उभये वि य गच्छस्स य, धणमेत्ता होंति गुणगारा॥418॥

(गच्छसमाः तात्कालिकातीते रूपोनगच्छधनमात्राः।

उभये पि च गच्छस्स च धनमात्रा भवन्ति गुणकाराः॥418॥)

परमावहिवरखेत्तेणवहिदउक्कस्सओहिखेत्तं तु।

सव्वावहिगुणगारो, काले वि असंखलोगो दु॥419॥

(परमावधिवरक्षेत्रेणावहितॊत्कृष्टावधिक्षेत्रं तु।

सर्वावधिगुणकारः, कालेऽपि असंख्यलॊकस्तु॥419॥)

इच्छिदरासिच्छेदं, दिण्णच्छेदेहिं भाजिदे तत्थ।

लद्धमिददिण्णरासीणब्भासे इच्छिदो रासी॥420॥

(इच्छितराशिच्छेदं देयच्छेदैर्भाजिते तत्र।

लब्धमितदेयराशीनामभ्यासे इच्छितॊ राशिः॥420॥)

दिण्णच्छेदेणवहिदलोगच्छेदेण पदधणे भजिदे।

लद्धमिदलोगगुणणं, परमावहिचरिमगुणगारो॥421॥

(देयच्छेदेनावहितलॊकच्छेदेन पदधने भजिते।

लब्धमितलॊकगुणनं परमावधिचरमगुणकारः॥421॥)

आवलिअसंखभागा, जहण्णदव्वस्स हॊंति पज्जाया।

कालस्य जहण्णादो, असंखगुणहीणमेत्ता हु॥422॥

(आवल्यसंख्यभागा जघन्यद्रव्यस्य भवन्ति पर्यायाः।

कालस्य जघन्यतः असंख्यगुणहीनमात्रा हि॥422॥)

सव्वोहि त्ति य कमसो, आवलिअसंखभागगुणिदकमा।

दव्वाणं भावाणं, पदसंखा सरिसगा हॊंति॥423॥

(सर्वावधिरिति च क्रमशः आवल्यसंख्यभागगुणितक्रमाः।

द्रव्याणां भावानां पदसंख्याः सदृशकाः भवन्ति॥423॥)

सत्तमखिदिम्मि कोसं, कोसस्सद्धं पवड्ढदे ताव।

जाव य पढमे णिरये, जोयण मेक्कं हवे पुण्णं॥424॥

(सप्तमक्षितौ क्रोशं क्रोशस्यार्धं प्रवर्धते तावत्।

यावच्च प्रथमे निरये योजनमेकं भवेत् पूर्णम्॥424॥)

तिरिये अवरं ओघो, तेजोयंते य होदि उक्कस्सं।

मणुए ओघं देवे, जहाकमं सुणह वोच्छामि॥425॥

(तिरश्चि अवरमोघः तेजोऽन्ते च भवति उत्कृष्टम्।

मनुजे ओघं देवे यथाक्रमं शृणुत वक्ष्यामि॥425॥)

पणुवीसजोयणाइं, दिवसंतं च य कुमारभोम्माणं।

संखेज्जगुणं खेत्तं, बहुगं कालं तु जोइसिगे॥426॥

(पञ्चविंशतियोजनानि दिवसान्तं च च कुमारभौमयोः।

संख्यातगुणं क्षेत्रं बहुकः कालस्तु ज्योतिष्के॥426॥)

असुराणमसंखेज्जा, कोडीओ सेसजोइसंताणं।

संखातीदसहस्सा, उक्कस्सोहीण विसओ दु॥427॥

(असुराणामसंख्येयाः कोट्यः शेषज्योतिष्कान्तानाम्।

संख्यातीतसहस्रा उत्कृष्टावधीनां विषयस्तु॥427॥)

असुराणमसंखेज्जा, वस्सा पुण सेसजोइसंताणं।

तस्संखेज्जदिभागं, कालेण य होदि णियमेण॥428॥

(असुराणामसंख्येयानि वर्षाणि पुनः शेषज्योतिष्कांतानाम्।

तत्संख्यातभागं कालेन च भवति नियमेन॥428॥)

भवणतियाणमधोधो, थोवं तिरियेण होदि बहुगं तु।

उड्ढेण भवणवासी, सुरगिरिसिहरो त्ति पस्संति॥429॥

(भवनत्रिकाणामधोऽधः स्तोकं तिरश्चा भवति बहुकं तु।

ऊर्ध्वेन भवनवासिनः सुरगिरिशिखरान्तं पश्यन्ति॥429॥)

सक्कीसाणा पढमं, बिदियं तु सणक्कुमार माहिंदा।

तदियं तु बम्ह-लांतव, सुक्क-सहस्सारया तुरियं॥430॥

(शक्रैशानाः प्रथमं द्वितीयं तु सनत्कुमार-माहेन्द्राः।

तृतीयं तु ब्रह्म-लान्तवाः शुक्र-सहस्रारकाः तुरियम्॥430॥)

आणद-पाणदवासी, आरण तह अच्चुदा य पस्संति।

पंचमखिदिपेरंतं, छट्ठिं गेवेज्जगा देवा॥431॥

(आनतप्राणतवासिनः आरणास्तथा अच्युताश्च पश्यन्ति।

पञ्चमक्षितिपर्यन्तं षष्ठीं ग्रैवेयका देवाः॥431॥)

सव्वं च लोयणालिं, पस्संति अणुत्तरेसु जे देवा।

सक्खेत्ते य सकम्मे, रूवगदमणंतभागं च॥432॥

(सर्वां च लोकनालीं पश्यन्ति अनुत्तरेषु ये देवाः।

स्वक्षेत्रे च स्वकर्मणि रूपगतमनन्तभागं च॥432॥)

कप्पसुराणं सगसगओहीखेत्तं विविस्ससोवचयं।

ओहीदव्वपमाणं, संठविय धुवहरेण हरे॥433॥

(कल्पसुराणां स्वकस्वकावधिक्षेत्रं विविस्रसोपचयम्।

अवधिद्रव्यप्रमाणं संस्थाप्य ध्रुवहारेण हरेत्॥433॥)

सगसगखेत्तपदेससलायपमाणं समप्पदे जाव।

तत्थतणचरिमखंडं, तत्थतणोहिस्स दव्वं तु॥434॥

(स्वकस्वकक्षेत्रप्रदेशशलाकाप्रमाणं समाप्यते यावत्।

तत्रतनचरमखण्डं तत्रतनावधेर्द्रव्यं तु॥434॥)

सोहम्मीसाणाणमसंखेज्जाओ हु वस्सकोडीओ।

उवरिमकप्पचउक्के पल्लासंखेज्जभागो दु॥435॥

(सौधर्मैशानानामसंख्येया हि वर्षकोट्यः।

उपरिमकल्पचतुष्के पल्यासंख्यातभागस्तु॥435॥)

तत्तो लांतवकप्पप्पहुदी सव्वत्थसिद्धिपेरंतं।

किंचूणपल्लमेत्तं, कालपमाणं जहाजोग्गं॥436॥

(ततो लान्तवकल्पप्रभृति सर्वार्थसिद्धिपर्यन्तम्।

किञ्चिदूनपल्यमात्रं कालप्रमाणं यथायोग्यम्॥436॥)

जोइसियंताणोहीखेत्ता उत्ता ण होंति घणपदरा।

कप्पसुराणं च पुणो, विसरित्थं आयदं होदि॥437॥

(ज्योतिष्कान्तानामवधिक्षेत्राणि उक्तानि भवन्ति घनप्रतराणि।

कल्पसुराणां च पुनः विसदृशमायतं भवति॥437॥)

इति अवधिज्ञानप्ररूपणा।

चिंतियमचिंतियं वा, अद्धं चिंतियमणेयभेयगयं।

मणपज्जवं ति उच्चइ, जं जाणइ तं खु णरलोए॥438॥

(चिन्तितमचिन्तितं वा अर्धं चिन्तितमनेकभेदगतम्।

मनःपर्यय इत्युच्यते यज्जानाति तत्खलु नरलोके॥438॥)

मणपज्जवं च दुविहं, उजुविउलमदि त्ति उजुमदी तिविहा।

उजुमणवयणे काए, गदत्थविसया त्ति णियमेण॥439॥

(मनःपर्ययश्च द्विविधः ऋजुविपुलमतीति ऋजुमतिस्त्रिविधा।

ऋजुमनॊवचने काये गतार्थविषया इति नियमेन॥439॥)

विउलमदी वि य छद्धा, उजुगाणुजुवयणकायचित्तगयं।

अत्थं जाणदि जम्हा, सद्दत्थगया हु ताणत्था॥440॥

(विपुलमतिरपि च षॊढा ऋजुगानृजुवचनकायचित्तगतम्।

अर्थं जानाति यस्मात् शब्दार्थगता हि तेषामर्थाः॥440॥)

तियकालविसयरूविं, चिंतियं वट्टमाणजीवेण।

उजुमदिणाणं जाणदि, भूदभविस्सं च विउलमदी॥441॥

(त्रिकालविषयरूपि चिंतितं वर्तमानजीवेन।

ऋजुमतिज्ञानं जानाति भूतिभविष्यच्च विपुलमतिः॥441॥)

सव्वंगअंगसंभवचिण्हादुप्पज्जदे जहा ओही।

मणपज्जवं च दव्वमणादो उप्पज्जदे णियमा॥442॥

(सर्वाङ्गाङ्गसम्भवचिह्नादुत्पद्यते यथावधिः।

मनःपर्ययं च द्रव्यमनस्त उत्पद्यते नियमात्॥442॥)

हिदि होदि हु दव्वमणं, वियसियअट्ठच्छादारविंदं वा।

अंगोवंगुदयादो, मणवग्गणखंधदो णियमा॥443॥

(हृदि भवति हि द्रव्यमनः विकसिताष्टच्छदारविंदवत्।

आंगॊपांगॊदयात् मनॊवर्गणास्कन्धतॊ नियमात्॥443॥)

णोइंदियं ति सण्णा, तस्स हवे सेसइंदियाणं वा।

वत्तत्ताभावादो, मणमणपज्जं च तत्थ हवे॥444॥

(नॊइन्द्रियमिति संज्ञा तस्य भवेत् शेषेन्द्रियाणां वा।

व्यक्तत्वाभावात् मनॊ मनःपर्ययश्च तत्र भवेत्॥444॥)

मणपज्जवं च णाणं, सत्तसु विरदेसु सत्तइड्ढीणं।

एगादिजुदेसु हवे, वड्ढंतविसिट्ठचरणेसु॥445॥

(मनःपर्ययश्च ज्ञांन सप्तसु विरतेसु सप्तर्धीनाम्।

एकादियुतेषु भवेत् वर्धमानविशिष्टचरणेषु॥445॥)

इंदियणोदंदियजोगादिं पेक्खित्तु उजुमदी होदि।

णिरवेक्खिय विउलमदी, ओहिं वा होदि णियमेण॥446॥

(इन्द्रियनॊन्द्रिययॊगादिमपेक्ष्य ऋजुमतिर्भवति।

निरपेक्ष्य विपुलमतिः अवधिर्वा भवति नियमेन॥446॥)

पडिवादी पुण पढमा, अप्पडिवादी हु होदि विदिया हु।

सुद्धो पढमो बोहो सुद्धतरो विदियबोहो दु॥447॥

(प्रतिपाती पुनः प्रथमः अप्रतिपाती हि भवति द्वितीयॊ हि।

शुद्धः प्रथमॊ बॊधः शुद्धतरॊ द्वितीयबॊधस्तु॥447॥)

परमणसि ट्ठियमट्ठं, ईहामदिणा उजुट्ठियं लहिय।

पच्छा पच्चक्खेण य, ऊजुमदिणा जाणदे णियमा॥448॥

(परमनसि स्थितमर्थमीहामत्या ऋजुस्थितं लब्ध्वा।

पश्चात् प्रत्यक्षेण च ऋजुमतिना जानीते नियमात्॥448॥)

चिंतियमचिंतियं वा, अद्धं चिंतियमणेयभेयगयं।

ओहिं वा विउलमदी, लहिऊण विजाणए पच्छा॥449॥

(चिन्तितमचिन्तितं वा अर्द्धं चिन्तितमनेकभेदगतम्।

अवधिर्वा विपुलमतिः लब्ध्वा विजानाति पश्चात्॥449॥)

दव्वं खेत्तं कालं, भावं पडि जीवलक्खियं रूविं।

उजुविउलमदी जाणदि, अवरवरं मज्झिमं च तहा॥450॥

(द्रव्यं क्षेत्रं कालं भावं प्रति जीवलक्षितं रूपि।

ऋजुविपुलमती जानीतः अवरवरं मध्यमं च तथा॥450॥)

अवरं दव्वमुरालियसरीरणिज्जिण्णसमयबद्धं तु।

चक्खिंदियणिज्जरणं, उक्कस्सं उजुमदिस्स हवे॥451॥

(अवरं द्रव्यमौरालिकशरीरनिर्जीणसमयप्रबद्धं तु।

चक्षुरिन्द्रियनिर्जीर्णमुत्कृष्टमृजुमतेर्भवेत्॥451॥)

मणदव्ववग्गणाणमणंतिमभागेण उजुगउक्कस्सं।

खंडिदमेत्तं होदि हु, विउलमदिस्सावरं दव्वं॥452॥

(मनोद्रव्यवर्गणानामनन्तिमभागेन ऋजुगोत्कृष्टम्।

खण्डितमात्रं भवति हि विपुलमतेरवरं द्रव्यम्॥452॥)

अट्ठण्हं कम्माणं, समयबद्धं विविस्ससोवचयं।

धुवहारेणिगिवारं, भजिदे विदियं हवे दव्वं॥453॥

(अष्टानां कर्मणां समयप्रबद्धं विविस्रसोपचयम्।

ध्रुवहारेणैकवारं भजिते द्वितीयं भवेत् द्रव्यम्॥453॥)

तव्विदियं कप्पाणमसंखेज्जाणं च समयसंखसमं।

धुवहारेणवहरिदे, होदि हु उक्कस्सयं दव्वं॥454॥

(तद्द्वितीयं कल्पानामसंख्येयानां च समयसंख्यासमम्।

ध्रुवहारेणावहृते भवति हि उत्कृष्टकं द्रव्यम॥454॥)

गाउयपुधत्तमवरं, उक्कस्सं होदि जोयणपुधत्तं।

विउलमदिस्स य अवरं, तस्स पुधत्तं वरं खु णरलोयं॥455॥

(गव्यूतिपृथक्त्वमवरमुत्कृष्टं भवति योजनपृथक्त्वम्।

विपुलमतेश्च अवरं तस्य पृथक्त्वं वरं खलु नरलोकः॥455॥)

णरलोएत्ति य वयणं, विक्खंमणियामयं ण वट्टस्स।

जम्हा तग्घणपदरं, मणपज्जवखेत्तमुद्दिट्ठं॥456॥

(नरलोक इति च वचनं विष्कम्भनियामकं न वृत्तस्य।

यस्मात् तद्घनप्रतरं मनःपर्ययक्षेत्रमुद्दिष्टम्॥456॥)

दुग-तिगभवा हु अवरं, सत्तट्ठभावा हवंति उक्कस्सं।

अड-णवभवा हु अवरमसंखेज्जं विउलउक्कस्सं॥457॥

(द्विकत्रिकभवा हि अवरं सप्ताष्टभवा भवन्ति उत्कृष्टम्।

अष्टनवभवा हि अवरमसंख्येयं विपुलोत्कृष्टम्॥457॥)

आवलिअसंखभागं, अवरं च वरं च वरमसंखगुणं।

तत्तो असंखगुणिदं, असंखलोगं तु विउलमदी॥458॥

(आवल्यसंख्यभागमवरं च वरं च वरमसंख्यगुणम्।

ततोऽसंख्यगुणितमसंख्यलोकं तु विपुलमतिः॥458॥)

मज्झिम दव्वं खेत्तं, कालं भावं च मज्झिम णाणं।

जाणदि इदि मणपज्जवणाणं कहिदं समासेण॥459॥

(मध्यमद्रव्यं क्षेत्रं कालं भावं च मध्यमं ज्ञानम्।

जानातीति मनःपर्ययज्ञानं कथितं समासेन॥459॥)

संपुण्णं तु समग्गं, केवलमसवत्त सव्वमावगयं।

लोयालोयवितिमिरं, केवलणाणं मुणेदव्वं॥460॥

(सम्पूर्णं तु समग्रं केवलमसपत्नं सर्वभावगतम्।

लॊकालॊकवितिमिरं केवलज्ञानं मन्तव्यम्॥460॥)

चदुगदिमदिसुदबोहा, पल्लासंखेज्जया हु मणपज्जा।

संखेज्जा केवलिणो, सिद्धादो हॊंति अतिरित्ता॥461॥

(चतुर्गतिमतिश्रुतबॊधाः पल्यासंख्येया हि मनःपर्ययाः।

संख्येयाः केवलिनः सिद्धात् भवन्ति अतिरिक्ताः॥461॥)

ओहिरहिदा तिरिक्खा, मदिणाणिअसंखभागगा मणुगा।

संखेज्जा हु तदूणा, मदिणाणी ओहिपरिमाणं॥462॥

(अवधिरहिताः तिर्यञ्चः मतिज्ञान्यसंख्याभागका मनुजाः।

संख्येया हि तदूना मतिज्ञानिनः अवधिपरिमाणम्॥462॥)

पल्लासंखघणंगुलहदसेणितिरिक्खगदिविभंगजुदा।

णरसहिदा किंचूणा, चदुगदिवेभंगपरिमाणं॥463॥

(पल्यासंख्यघनांगुलहतश्रेणितिर्यग्गतिविभंगयुताः।

नरसहिताः किञ्चिदूनाः चतुर्गतिवैभंगपरिमाणम्॥463॥)

सण्णाणरासिपंचयपरिहीणो सव्वजीवरासी हु।

मदिसुद-अण्णाणीणं, पत्तेयं होदि परिमाणं॥464॥

(सद्ज्ञानराशिपञ्चकपरिहीनः सर्वजीवराशिर्हि।

मतिश्रुताज्ञानिनां प्रत्येकं भवति परिमाणम्॥464॥)

इति ज्ञानमार्गणाधिकारः।

अथ संयममार्गणाधिकारः

वदसमिदिकसायाणं, दंडाण तहिंदियाण पंचण्हं।

धारणपालणणिग्गहचागजओ संजमो भणिओ॥465॥

(व्रतसमितिकषायाणां दण्डानां तथेन्द्रियाणां पंचानाम्।

धारणपालननिग्रहत्यागजयः संयमो भणितः॥465॥)

बादरसंजलणुदये, सुहुमुदये समखये य मोहस्स।

संजममावो णियमा, होदि त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥466॥

(बादरसंज्वलनोदये सूक्ष्मोदये शमक्षययोश्च मोहस्य।

संयमभावो नियमात् भवतीति जिनैर्निर्दिष्टम्॥466॥)

बादरसंजलणुदये, बादरसंजमतियं खु परिहारो।

पमदिदरे सुहुमुदये, सुहुमो संजमगुणो होदि॥467॥

(बादरसंज्वलनोदये बादरसंयमत्रिकं खलु परिहारः।

प्रमत्तेतरस्मिन् सूक्ष्मोदये सूक्ष्मः संयमगुणो भवति॥467॥)

जहखादसंजमो पुण, उवसमदो होदि मोहणीयस्स।

खयदो वि य सो णियमा, होदि त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥668॥

(यथाख्यातसंयमः पुनः उपशमतो भवति मोहनीयस्य।

क्षयतोऽपि च स नियमात् भवतीति जिनैर्निर्दिष्टम्॥468॥)

तदियकसायुदयेण य, विरदाविरदो गुणो हवे जुगवं।

विदियकसायुदयेण य, असंजमो होदि णियमेण॥469॥

(तृतीयकषायोदयेन च विरताविरतो गुणो भवेत् युगपत्।

द्वितीयकषायोदयेन च असंयमो भवति नियमेन॥469॥)

संगहिय सयलसंजममेयजममणुत्तरं दुरवगम्मं।

जीवो समुव्वहंतो, सामाइयसंजमो होदि॥470॥

(संगृह्य सकलसंयममेकयममनुत्तरं दुरवगम्यम्।

जीवः समुद्वहन् सामायिकसंयमॊ भवति॥470॥)

छेत्तूण य परियायं, पोराणं जो ठवेइ अप्पाणं।

पंचजमे धम्मे सो, छेदोवट्ठावगो जीवो॥471॥

(छित्वा च पर्यायं पुराणं यः स्थापयति आत्मानम्।

पंचयमे धर्म्मे सः छेदॊपस्थापकॊ जीवः॥471॥)

पंचसमिदो तिगुत्तो, परिहरइ सदा वि जो हु सावज्जं।

पंचेक्कजमो पुरिसो, परिहारयसंजदो सो हु॥472॥

(पञ्चसमितः त्रिगुप्तः परिहरति सदापि यॊ हि सावद्यम्।

पञ्चैकयमः पुरुषः परिहारकसंयतः स हि॥472॥)

तीसं वासो जम्मे, वासपुधत्तं खु तित्थयरमूले।

पच्चक्खाणं पढिदो, संझूणदुगाउयविहारो॥473॥

(त्रिंशद्वर्षॊ जन्मनि वर्षपृथक्त्वं खलु तीर्थकरमूले।

प्रत्याख्यानं पठितः संध्यॊनद्विगव्यूतिविहारः॥473॥)

अणुलोहं वेदंतो, जीवो उवसामगो व खवगो वा।

सो सुहुमसांपराओ, जहखादेणूणओ किंचि॥474॥

(अणुलॊभं विदन् जीवः उपशामकॊ वा क्षपकॊ वा।

स सूक्ष्मसाम्परायः यथाख्यातेनॊनः किञ्चित्॥474॥)

उवसंते खीणे वा, असुहे कम्मम्मि मोहणीयम्मि।

छदुमट्ठो व जिणो वा, जहखादो संजदो सो दु॥475॥

(उपशान्ते क्षीणे वा अशुभे कर्मणि मोहनीये।

छद्मस्थौ वा जिनौ वा यथाख्यातः संयतः स तु॥475॥)

पंचतिहिचहुविहेहिं य, अणुगुणसिक्खावयेहिं संजुत्ता।

उच्चंति देसविरया, सम्माइट्ठी झलियकम्मा॥476॥

(पञ्चत्रिचतुर्विधैश्च अणुगुणशिक्षाव्रतैः संयुक्ताः।

उच्यन्ते देशविरताः सम्यग्दृष्टयः झरितकर्माणः॥476॥)

दंसणवयसामाइय, पोसहसच्चित्तरायभत्ते य।

बम्हारंभपरिग्गह, अणुमणमुद्दिट्ठदेसविरदेदे॥477॥

(दर्शनव्रतसामायिकाः प्रोषधसचित्तरात्रिभक्ताश्च।

ब्रह्मारम्भपरिग्रहानुमतोद्दिष्टदेशविरता एते॥477॥)

जीवा चोद्दसभेया, इंदियविसया तहट्ठवीसं तु।

जे तेसु णेव विरया, असंजदा ते मुणेदव्वा॥478॥

(जीवाश्चतुर्दशभेदा इन्द्रियविषयाः तथाष्टाविंशतिस्तु।

ये तेषु नैव विरता असंयताः ते मन्तव्याः॥478॥)

पंचरसपंचवण्णा, दो गंधा अट्ठफाससत्तसरा।

मणसहिदट्ठावीसा इंदियविसया मुणेदव्वा॥479॥

(पञ्चरसपञ्चवर्णाः द्वौ गन्धौ अष्टस्पर्शसप्तस्वराः।

मनःसहिताः अष्टाविंशतिः इन्द्रियविषयाः मन्तव्याः॥479॥)

पमदादिचउण्हजुदी, सामयियदुगं कमेण सेसतियं।

सत्तसहस्सा णवसय, णवलक्खा तीहिं परिहीणा॥480॥

(प्रमत्तादिचतुर्णां युतिः सामायिकद्विकं क्रमेण शेषत्रिकम्।

सप्त सहस्राणि नव शतानि नव लक्षाणि त्रिभिः परिहीनानि॥480॥)

पल्लासंखेज्जदिमं, विरदाविरदाण दव्वपरिमाणं।

पुव्वुत्तरासिहीणा, संसारी अविरदाण पमा॥481॥

(पल्यासंख्येयं विरताविरतानां द्रव्यपरिमाणम्।

पूर्वोक्तराशिहीना संसारिणः अविरतानां प्रमा॥481॥)

इति संयममार्गणाधिकारः।

अथ दर्शनमार्गणाधिकारः

जं सामण्णं गहणं, भावाणं णेव कट्ठुमायारं।

अविसेसदूण अट्ठे, दंसणमिदि भण्णदे समये॥482॥

(यत् सामान्यं ग्रहणं भावनां नैव कृत्वाकारम्।

अविशेष्यार्थान् दर्शनमिति भण्यते समये॥482॥)

भावाणं सामण्ण-विसेसयाणं सरूवमेत्तं जं।

वण्णणहीणग्गहणं, जीवेण य दंसणं होदि॥483॥

(भावानां सामान्य-विशेषकानां स्वरूपमात्रं यत्।

वर्णनहीनग्रहणं जीवेन च दर्शनं भवति॥483॥)

चक्खूण जं पयासइ, दिस्सइ तं चक्खुदंसणं वेंति।

सेसिंदियप्पयासो, णायव्वो सो अचक्खू त्ति॥484॥

(चक्षुषोः यत् प्रकाशते पश्यति तत् चक्षुर्दर्शनं ब्रुवन्ति।

शेषेन्द्रियप्रकाशो ज्ञातव्यः स अचक्षुरिति॥484॥)

परमाणुआदियाइं, अंतिमखंधं ति मुत्तिदव्वाइं।

तं ओहिदंसणं पुण, जं पस्सइ ताइं पच्चक्खं॥485॥

(परमाण्वादीनि अन्तिमस्कन्धमिति मूर्तद्रव्याणि।

तदवधिदर्शनं पुनः यत् पश्यति तानि प्रत्यक्षम्॥485॥)

बहुविहबहुप्पयारा, उज्जोवा परिमियम्मि खेत्तम्मि।

लोगालोगवितिमिरो, जो केवलदंसणुज्जोओ॥486॥

(बहुविधबहुप्रकारा उद्योताः परिमिते क्षेत्रे।

लोकालोकवितिमिरो यः केवलदर्शनोद्योतः॥486॥)

जोगे चउरक्खाणं, पंचक्खाणं च खीणचरिमाणं।

चक्खूणमोहिकेवलपरिमाणं ताण णाणं च॥487॥

(योगे चतुरक्षाणां पञ्चाक्षाणां क्षीणचरमाणाम्।

चक्षुषामवधिकेवलपरिमाणं तेषां ज्ञानं च॥487॥)

एइंदियपहुदीणं, खीणकसायंतणंतरासीणं।

जोगो अचक्खुदंसणजीवाणं होदि परिमाणं॥488॥

(एकेन्द्रियप्रभृतीनां क्षीणकषायान्तानन्तराशीनाम्।

योगः अचक्षुर्दर्शनजीवानां भवति परिमाणम्॥488॥)

इति दर्शनमार्गणाधिकारः।

अथ लेश्यामार्गणाधिकारः

लिंपइ अप्पीकीरइ, एदीए णियअपुण्णपुण्णं च।

जीवो त्ति होदि लेस्सा लेस्सागुणजाणयक्खादा॥489॥

(लिंपत्यात्मीकरोति एतया निजापुण्यपुण्यं च।

जीव इति भवति लेश्या लेश्यागुणज्ञायकाख्याता॥489॥)

जोगपउत्ती लेस्सा, कसायउदयाणुरंजिया होई।

तत्तो दोण्णं कज्जं, बंधचउक्कं समुद्दिट्ठं॥490॥

(योगप्रवृत्तिर्लेश्या कषायोदयानुरञ्जिता भवति।

ततः द्वयोः कार्यं बन्धचतुष्कं समुद्दिष्टम्॥490॥)

णिद्देसवण्णपरिमाणमसंकमो कम्मलक्खणगदी य।

सामी साहणसंखा खेत्तं फासं तदो कालो॥491॥

(निर्देशवर्ण्णपरिणामसंक्रमाः कर्मलक्षणगतयश्च।

स्वामी साधनसंख्ये क्षेत्रं स्पर्शस्ततः कालः॥491॥)

अन्तरभावप्पबहु अहियारा सोलसा हवंति त्ति।

लेस्साण साहणट्ठं जहाकमं तेहिं वोच्छामि॥492॥

(अन्तरभावाल्पबहुत्वमधिकाराः षोडश भवन्तीति।

लेश्यानां साधनार्थं यथाक्रमं तैर्वक्ष्यामि॥492॥)

किण्हा णीला काऊ, तेऊ पम्मा य सुक्कलेस्सा य।

लेस्साणं णिद्देसा, छच्चेव हवंति णियमेण॥493॥

(कृष्णा नीला कापोता तेजः पद्मा च शुक्ललेश्या च।

लेश्यानां निर्देशाः षट् चैव भवन्ति नियमेन॥493॥)

वण्णोदयेण जणिदो, सरीरवण्णो दु दव्वदो लेस्सा।

सा सोढा किण्हादी, अणेयभेया सभेयेण॥494॥

(वर्णोदयेन जनितः शरीरवर्णस्तु द्रव्यतो लेश्या।

सा षोढा कृष्णादिः अनेकभेदा स्वभेदेन॥494॥)

छप्पयणीलकवोदसुहेमंबुजसंखसण्णिहा वण्णे।

संखेज्जासंखेज्जाणंतवियप्पा य पत्तेयं॥495॥

(षट्पदनीलकपोतसुहेमाम्बुजशंखसन्निभाः वर्णे।

संख्येयासंख्येयानन्तविकल्पाश्च प्रत्येकम्॥495॥)

णिरया किण्हा कप्पा, भावाणुगया हु तिसुरणरतिरिये।

उत्तरदेहे छक्कं, भोगे रविचंदहरिदंगा॥496॥

(निरयाः कृष्णाः कल्पाः भावानुगता हि त्रिसुरनरतिरश्चि।

उत्तरदेहे षट्कं भोगे रविचन्द्रहरितांगा॥496॥)

बादरआऊतेऊ, सुक्का तेऊय वाउकायाणं।

गोमुत्तमुग्गवण्णा, कमसो अव्वत्तवण्णो य॥497॥

(बादरापैजसौ शुक्लतेजसौ वायुकायानाम्।

गोमूत्रमुद्गवर्णौ क्रमशः अव्यक्तवर्णश्च॥497॥)

सव्वेसिं सुहुमाणं, कावोदा स सव्वविग्गहे सुक्का।

सव्वो मिस्सो देहो, कवोदवण्णो हवे णियमा॥498॥

(सर्वेषां सूक्ष्मानां कापोताः सर्वे विग्रहे शुक्लाः।

सर्वो मिश्रो देहः कपोतवर्णो भवेन्नियमात्॥498॥)

लोगाणमसंखेज्जा, उदयट्ठाणा कसायगा होंति।

तत्थ किलिट्ठा असुहा, सुहा विसुद्धा तदालावा॥499॥

(लोकानामसंख्येयान्युदयस्थानानि कषायगाणि भवन्ति।

तत्र क्लिष्टान्यशुभानि शुभानि विशुद्धानि तदालापात्॥499॥)

तिव्वतमा तिव्वतरा, तिव्वा असुहा सुहा तहा मंदा।

मंदतरा मंदतमा, छट्ठाणगया हु पत्तेयं॥500॥

(तीव्रतमास्तीव्रतरास्तीव्रा अशुभाः शुभास्तथा मन्दाः।

मन्दतरा मन्दतमाः षट्स्थानगता हि प्रत्येकम्॥500॥)

असुहाणं वरमज्झिमअवरंसे किण्हणीलकाउतिए।

परिणमदि कमेणप्पा, परिहाणीदो किलेसस्स॥501॥

(अशुभानां वरमध्यमावरांशे कृष्णनीलकापोतत्रिकानाम्।

परिणमति क्रमेणात्मा परिहानितः क्लेशस्य॥501॥)

काऊ णीलं किण्हं, परिणमदि किलेसवड्ढिदो अप्पा।

एवं किलेसहाणीवड्ढीदो, होदि असुहतियं॥502॥

(कापोतं नीलं कृष्णं परिणमति क्लेशवृद्धित आत्मा।

एवं क्लेशहानि-वृद्धितः भवति अशुभत्रिकम्॥502॥)

तेऊ पउमे सुक्के, सुहाणमवरादिअंसगे अप्पा।

सुद्धिस्य य वड्ढीदो, हाणीदो अण्णहा होदि॥503॥

(तेजसि पद्मे शुक्ले शुभानामवरायंशगे आत्मा।

शुद्धेश्च वृद्धितो हानितः अन्यथा भवति॥503॥)

संकमणं सट्ठाण-परट्ठाणं होदि किण्ह-सुक्काणं।

वड्ढीसु हि सट्ठाणं उभयं हाणिम्मि सेस उभये वि॥504॥

(संक्रमणं स्वस्थान-परस्थानं भवति कृष्ण-शुक्लयोः।

वृद्धिषु हि स्वस्थानमुभयं हानौ शेषस्योभयेऽपि॥504॥)

लेस्साणुक्कस्सादोवरहाणी अवरगादवरवड्ढी।

सट्ठाणे अवरादो, हाणी णियमा परट्ठाणे॥505॥

(लेश्यानामुत्कृष्टादवरहानिः अवरकादवरवृद्धिः।

स्वस्थाने अवरात् हानिर्नियमात् परस्थाने॥505॥)

संकमणे छट्ठाणा, हाणिसु वड्ढीसु होंति तण्णामा।

परिमाणं च य पुव्वं, उत्तकमं होदि सुदणाणे॥506॥

(संक्रमणे षट्स्थानानि हानिषु वृद्धिषु भवन्ति तन्नामानि।

परिमाणं च च पूर्वमुक्तक्रमं भवति श्रुतज्ञाने॥506॥)

पहिया जे छप्पुरिसा, परिभट्टारण्णमज्झदेसम्हि।

फलभरियरुक्खमेगं, पेक्खित्ता ते विचितंति॥507॥

(पथिका ये षट् पुरुषाः परिभ्रष्टा अरण्यमध्यदेशे।

फलभरितवृक्षमेकं प्रेक्षित्वा ते विचिन्तयन्ति॥507॥)

णिम्मूलसंधसाहुवसाहं छित्तुं चिणित्तु पडिदाइं।

खाउं फलाइं इदि जं, मणेण वयणं हवे कम्मं॥508॥

(निर्मूलस्कन्धशाखोपशाखं छित्वा चित्वा पतितानि।

खादितुं फलानि इति यन्मनसा वचनं भवेत् कर्म्म॥508॥)

चंडो ण मुचइ वेरं, भंडणसीलो य धरमदयरहिओ।

दुट्ठो ण य एदि वसं, लक्खणमेयं तु किण्हस्स॥509॥

(चण्डो न मुञ्चति वैरं भण्डनशीलश्च धर्मदयारहितः।

दुष्टो न चैति वशं लक्षणमेतत्तु कृष्णस्य॥509॥)

मंदो बुद्धिविहीणो, णिव्विणाणी य विसयलोलो य।

माणी मायी य तहा, आलस्सो चेव भेज्जो य॥510॥

(मन्दो बुद्धिविहीनो निर्विज्ञानी च विषयलोलश्च।

मानी मायी च तथा आलस्यश्चैव भेद्यश्च॥510॥)

णिद्दावंचणबहुलो, धणधण्णे होदि तिव्वसण्णा य।

लक्खणमेयं भणियं, समासदो णीललेस्सस्स॥511॥

(निद्रावञ्चनबहुलो धनधान्ये भवति तीव्रसंज्ञश्च।

लक्षणमेतद् भणितं समासतो नीललेश्यस्य॥511॥)

रूसइ णिंदइ अण्णे, दूसइ बहुसो य सोयभयबहुलो।

असुयइ परिभवइ परं, पसंसये अप्पयं बहुसो॥512॥

(रुष्यति निन्दति अन्यं दुष्यति बहुशश्च शोकभयबहुलः।

असूयति परिभवति परं प्रशंसति आत्मानं बहुशः॥512॥)

ण य पत्तियइ परं सो, अप्पाणं यिव परं पि मण्णंतो।

थूसइ अभित्थुवंतो, ण य जाणइ हाणि-वड्ढिं वा॥513॥

(न च प्रत्येति परं स आत्मानमिव परमपि मन्यमानः।

तुष्यति अभिष्टुवतो न च जानाति हानिवृद्धी वा॥513॥)

मरणं पत्थेइ रणे, देह सुबहुगं वि थुव्वमाणो दु।

ण गणइ कज्जाकज्जं, लक्खणमेयं तु काउस्स॥514॥

(मरणं प्रार्थयते रणे ददाति सुबहुकमपि स्तूयमानस्तु।

न गणयति कार्याकार्यं लक्षणमेतत्तु कापोतस्य॥514॥)

जाणइ कज्जाकज्जं, सेयमसेयं च सव्वसमपासी।

दयदाणरदो य मिदू, लक्खणमेयं तु तेउस्स॥515॥

(जानाति कार्याकार्यं सेव्यमसेव्यं च सर्वसमदर्शी।

दयादानरतश्च मृदुः लक्षणमेतत्तु तेजसः॥515॥)

चागी भद्दो चोक्खो, उज्जवकम्मो य खमदि बहुगं पि।

साहुगुरुपूजणरदो, लक्खणमेयं तु पम्मस्स॥516॥

(त्यागी भद्रः सुकरः उद्युक्तकर्मा च क्षमते बहुकमपि।

साधुगुरुपूजनरतो लक्षणमेतत्तु पद्मस्य॥516॥)

ण य कुणइ पक्खवायं, ण वि य णिदाणं समो य सव्वेसिं।

णत्थि य रायद्दोसा, णेहो वि य सुक्कलेस्सस्स॥517॥

(न च करोति पक्षपातं नापि च निदानं समश्च सर्वेषाम्।

न स्तः च रागद्वेषौ स्नेहोऽपि च शुक्ललेश्यस्य॥517॥)

लेस्साणं खलु अंसा, छव्वीसा होंति तत्थ मज्झिमया।

आउगबंधणजोगा, अट्ठट्ठवगरिसकालभवा॥518॥

(लेश्यानां खलु अंशाः षड्विंशतिः भवन्ति तत्र मध्यमकाः।

आयुष्कबन्धनयोग्या अष्ट अष्टापकर्षकालभवाः॥518॥)

सेसट्ठारस अंसा, चउगइगमणस्स कारणा होंति।

सुक्कुक्कस्संसमुदा, सव्वट्ठं जांति खलु जीवा॥519॥

(शेषाष्टादशांशाश्चतुर्गतिगमनस्य कारणानि भवन्ति।

शुक्लोत्कृष्टांशमृता सर्वार्थं यान्ति खलु जीवाः॥519॥)

अवरंसमुदा होंति सदारदुगे मज्झिमंसगेण मुदा।

आणदकप्पादुवरिं, सवट्ठाइल्लगे होंति॥520॥

(अवरांशमृता भवन्ति शतारद्विके मध्यमांशकेन मृताः।

आनतकल्पादुपरि सर्वार्थादिमे भवन्ति॥520॥)

पम्मुक्कस्संसमुदा, जीव उवजांति खलु सहस्सारं।

अवरंसमुदा जीवा, सणक्कुमारं च माहिदं॥521॥

(पद्मोत्कृष्टांशमृता जीवा उपयांति खलु सहस्रारम्।

अवरांशमृता जीवाः सनत्कुमारं च माहेन्द्रम्॥521॥)

मज्झिमअंसेण मुदा, तम्मज्झं जांति तेउजेट्ठमुदा।

साणक्कुमारमाहिंदंतिमचक्किंदिसेढिम्मि॥522॥

(मध्यमांशेन मृता तन्मध्यं यान्ति तेजोज्येष्ठमृताः।

सनत्कुमारमाहेन्द्रान्तिमचक्रेन्द्रश्रेण्याम्॥522॥)

अवरंसमुदा सोहम्मीसाणादिमउडम्मि सेढिम्मि।

मज्झिमअंसेण मुदा, विमलविमाणादिबलभद्दे॥523॥

(अवरांशमृताः सौधर्मैशानादिमतौ श्रेण्याम्।

मध्यमांशेन मृताः विमलविमानादिबलभद्रे॥523॥)

किण्हवरंसेण मुदा, अवधिट्ठाणम्मि अवरअंसमुदा।

पंचमचरिमतिमिस्से, मज्झे मज्झेण जायंते॥524॥

(कृष्णवरांशेन मृता अवधिस्थान अवरांशमृता।

पञ्चमचरमतिमिश्रे मध्ये मध्येन जायन्ते॥524॥)

नीलुक्कस्संसमुदा, पंचम अधिंदयम्मि अवरमुदा।

बालुकसंपज्जलिदे मज्झे मज्झेण जायंते॥525॥

(नीलोत्कृष्टांशमृताः पञ्चमान्ध्रेन्द्रके अवरमृताः।

वालुकासंप्रज्वलिते मध्ये मध्येन जायते॥525॥)

वरकाओदंसमुदा, संजलिदं जांति तदियणिरयस्स।

सीमंतं अवरमुदा, मज्झे मज्झेण जायंते॥526॥

(वरकापोतांशमृताः संज्वलितं यान्ति तृतीयनिरयस्य।

सीमन्तमवरमृता मध्ये मध्येन जायन्ते॥526॥)

किण्हचउक्काणं पुण, मज्झंसमुदा हु भवणगादितिये।

पुढवीआउवणप्फदिजीवेसु, हवंति खलु जीवा॥527॥

(कृष्णचतुष्काणां पुनः मध्यांशमृता हि भवनकादित्रये।

पृथिव्यव्वनस्पतिजीवेषु भवन्ति खलु जीवाः॥527॥)

किण्हतियाणं मज्झिमअंसमुदा तेउआउ वियलेसु।

सुरणिरया सगलेस्सहिं, णरतिरियं जांति सगजोग्गं॥528॥

(कृष्णत्रयाणां मध्यमांशमृतास्तेजॊवायुविकलेषु।

सुरनिरयाः स्वकलेश्याभिनरतिर्यञ्चं यान्ति स्वकयॊग्यम्॥528॥)

काऊ काऊ काऊ, णीला णीला य णील किण्हा य।

किण्हा य परमकिण्हा, लेस्सा पढमादिपुढवीणं॥529॥

(कापोता कापोता कापोता नीला नीला च नीलकृष्णे च।

कृष्णा च परमकृष्णा लेश्या प्रथमादिपृथिवीनाम्॥529॥)

णरतिरियाणं ओघो, इगिविगले तिण्णि चउ असण्णिस्स।

सण्णिअपुण्णगमिच्छे, सासणसम्भे असुहतियं॥530॥

(नरतिरश्चामॊघ एकविकले तिस्रः चतस्रः असंज्ञिनः।

संज्ञ्यपूर्णकमिथ्यात्वे सासनसम्यक्त्वेऽपि अशुभत्रिकम्॥530॥)

भोगा पुण्णगसम्णे, काउस्स जहण्णियं हवे णियमा।

सम्मे वा मिच्छे वा, पज्जत्ते तिण्णि सुहलेस्सा॥531॥

(भॊगापूर्णकसम्यक्त्वे कापॊतस्य जघन्यकं भवेत् नियमात्।

सम्यक्त्वे वा मिथ्यात्वे वा पर्याप्ते तिस्रः शुभ्लेश्याः॥531॥)

अयदो त्ति छ लेस्साओ, सुहतियलेस्सा हु देसविरदतिये।

तत्तो सुक्का लेस्सा अजोगिठाणं अलेस्सं तु॥532॥

(असंयत इति षड् लेश्याः शुभत्रयलेश्या हि देशविरतत्रये।

ततः शुक्ला लेश्या अयोगिस्थानमलेश्यं तु॥532॥)

णट्ठकसाये लेस्सा, उच्चदि सा भूदपुव्वगदिणाया।

अहवा जोगपउत्ती, मुक्खो त्ति तहिं हवे लेस्सा॥533॥

(नष्टकषाये लेश्या उच्यते सा भूतपूर्वगतिन्यायात्।

अथवा योगप्रवृत्तिः मुख्येति तत्र भवेल्लेश्या॥533॥)

तिण्हं दोण्हं दोण्हं, छण्हं दोण्हं च तेरसण्हं च।

एत्तो य चोद्दसण्हं, लेस्सा भवणादिदेवाणं॥534॥

(त्रयाणां द्वयोर्द्वयोः षण्णां द्वयोश्च त्रयोदशानां च।

एतस्माच्च चतुर्दशानां लेश्या भवनादिदेवानाम्॥534॥)

तेऊ तेऊ तेऊ, पम्मा पम्मा य पम्मसुक्का य।

सुक्का य परमसुक्का भवणतियापुण्णगे असुहा॥535॥

(तेजस्तेजस्तेजः पद्मा पद्मा च पद्मशुक्ले च।

शुक्ला च परमशुक्ला भवनत्रिकाऽपूर्णके अशुभाः॥535॥)

वण्णोदयसंपादितसरीरवण्णो दु दव्वदो लेस्सा।

मोहुदयखओवसमोवसमखयजजीवफंदणं भावो॥536॥

(वर्णोदयसंपादितशरीरवर्णस्तु द्रव्यतो लेश्या।

मोहोदयक्षयोपशमोपशमक्षयजजीवस्पन्दो भावः॥536॥)

किण्हादिरासिमावलि-असंखभागेण भजिय पविभत्ते।

हीणकमा कालं वा, अस्सिय दव्वा दु भजिदव्वा॥537॥

(कृष्णादिराशिमावल्यसंख्यभागेन भक्त्वा प्रविभक्ते।

हीनक्रमाः कालं वा आश्रित्य द्रव्याणि तु भक्तव्यानि॥537॥)

खेत्तादो असुहतिया, अणंतलोगा कमेण परिहीणा।

कालादोतीदादो, अणंतगुणिदा कमा हीणा॥538॥

(क्षेत्रतः अशुभत्रिका अनन्तलोकाः क्रमेण परिहीनाः।

कालादतीतादनन्तगुणिताः क्रमाद्धीनाः॥538॥)

केवलणाणाणंतिमभागा भावादु किण्हतियजीवा।

तेउतियासंखेज्जा, संखासंखेज्जभागकमा॥539॥

(केवलज्ञानानन्तिमभागा भावात्तु कृष्णत्रिकजीवाः।

तेजस्त्रिका असंख्येयाः संख्यासंख्येयभागक्रमाः॥539॥)

जोइसियादो अहिया, तिरिक्खसण्णिस्स संखभागो दु।

सूइस्स अंगुलस्य य, असंखभागं तु तेउतियं॥540॥

(ज्यॊतिष्कतॊऽधिकाः तिर्यक्संज्ञिनः संख्यभागस्तु।

सूचेरङ्गुलस्य च असंख्यभागं तु तेजस्त्रयम्॥540॥)

वेसदछप्पण्णंगुलकदिहिदपदरं तु जोइसियमाणं।

तस्स य संखेज्जदिमं, तिरिक्खसण्णीण परिमाणं॥541॥

(द्विशतषट्पञ्चाशदंगुलकृतिहितप्रतरं तु ज्यॊतिष्कमानम्।

तस्य च संख्येयतमं तिर्यक्सज्ञिनां परिमाणम्॥541॥)

तेउदु असंखकप्पा, पल्लासंखेज्जभागया सुक्का।

ओहिअसंखेज्जदिमा, तेउतिया भावदो होंति॥542॥

(तेजोद्वया असंख्यकल्पाः पल्यासंख्येयभागकाः शुक्लाः।

अवध्यसंख्येयाः तेजस्त्रिका भावतो भवन्ति॥542॥)

सट्ठाणसमुग्घादे, उववादे सव्वलोयमसुहाणं।

लोयस्सासंखेज्जदिभागं खेत्तं तु तेउतिये॥543॥

(स्वस्थानसमुद्घाते उपपादे सर्वलोकमशुभानाम्।

लोकस्यासंख्येयभागं क्षेत्रं तु तेजस्त्रिके॥543॥)

मरदि असंखेज्जदिमं, तस्सासंखा य विग्गहे होंति।

तस्सासखं दूरे उववादे तस्स खु असंखं॥544॥

(म्रियते असंख्येयं तस्यासंख्याश्च विग्रहे भवन्ति।

तस्यासंख्यं दूरे उपपादे तस्य खलु असंख्यम्॥544॥)

सुक्कस्स समुग्घादे, असंखलोगा य सव्वलोगो य।

फासं सव्वं लोयं, तिट्ठाणे असुहलेस्साणं॥545॥

(फासं सव्वं लोयं, तिट्ठाणे असुहलेस्साणं।

स्पर्शः सर्वो लोकस्त्रिस्थाने अशुभलेश्यानाम्॥545॥)

तेउस्स य सट्ठाणे, लोगस्स असंखभागमेत्तं तु।

अडचोद्दसभागा वा, देसूणा होंति णियमेण॥546॥

(तेजसश्च स्वस्थाने लोकस्य असंख्यभागमात्रं तु।

अष्ट चतुर्दशभागा वा देशोना भवन्ति नियमेन॥546॥)

एवं तु समुग्घादे, णव चोद्दसभागयं च किंचूणं।

उववादे पढमपदं, दिवड्ढचोद्दस य किंचूणं॥547॥

(एवं तु समुद्घाते नव चतुर्दशभागश्च किञ्चिदूनः।

उपपादे प्रथमपदं व्यर्धचतुर्दश च किञ्चिदूनम्॥547॥)

पम्मस्स य सट्ठाणसमुग्घाददुगेसु होदि पढमपदं।

अड चोद्दस भागा बा, देसूणा होंति णियमेण॥548॥

(पद्मायाश्च स्वस्थानसमुद्घातद्विकयोः भवति प्रथमपदम्।

अष्ट चतुर्दश भागा वा देशोना भवन्ति नियमेन॥548॥)

उववादे पढमपदं, पणचोदसभागयं च देसूणं।

सुक्कस्स य तिट्ठाणे पढमो छच्चोदसा हीणा॥549॥

(उपपादे प्रथमपदं पञ्चचतुर्दशभागकश्च देशोनः।

शुक्लायाश्च त्रिस्थाने प्रथमः षट्चतुर्दश हीनाः॥549॥)

णवरि समुग्घादम्मि य, संखातीदा हवंति भागा वा।

सव्वो वा खलु लोगो फासो होदि त्ति णिद्दिट्ठो॥550॥

(नवरि समुद्घाते च संख्यातीता भवन्ति भागा वा।

सर्वो वा खलु लोकः स्पर्शो भवतीति निर्दिष्टः॥550॥)

इति स्पर्शाधिकारः।

कालो छल्लेस्साणं, णाणाजीवं पडुच्च सव्वद्धा।

अंतोमुहुत्तमवरं, एगं जीवं पडुच्च हवे॥551॥

(कालः षड्लेश्यानां नानाजीवं प्रतीत्य सर्वाद्धा।

अन्तर्मुहूर्तोऽवरं एकं जीवं प्रतीत्य भवेत्॥551॥)

उवहीणं तेत्तीसं, सत्तर सत्तेव होंति दो चेव।

अट्ठारस तेत्तीसा, उक्कस्सा होंति अदिरेया॥552॥

(उदधीनां त्रयस्त्रिंशत् सप्तदश सप्तैव भवन्ति द्वौ चैव।

अष्टादश त्रयस्त्रिंशत् उत्कृष्टा भवन्ति अतिरेकाः॥552॥)

इति कालाधिकारः।

अथ अन्तराधिकारः

अंतरमवरुक्कस्सं, किण्हतियाणं मुहुत्तअंतं तु।

उवहीणं तेत्तीसं, अहियं होदि त्ति णिद्दिट्ठं॥553॥

(अन्तरमवरोत्कृष्टं कृष्णत्रयाणां मुहूर्तान्तस्तु।

उदधीनां त्रयस्त्रिंशदधिकं भवतीति निर्दिष्टम्॥553॥)

तेउतियाणं एवं, णवरि य उक्कस्सविरहकालो दु।

पोग्गलपरिवट्टा हु असंखेज्जा होंति णियमेण॥554॥

(तेजस्त्रयाणामेवं नवरि च उत्कृष्टविरहकालस्तु।

पुद्गलपरिवर्ता हि असंख्येया भवन्ति नियमेन॥554॥)

भावादो छल्लेस्सा, ओदइया होंति अप्पबहुगं तु।

दव्वपमाणे सिद्धं, इदि लेस्सा वण्णिदा होंति॥555॥

(भावतः षड्लेश्या औदयिका भवन्ति अल्पबहुकं तु।

द्रव्यप्रमाणे सिद्धिमिति लेश्या वर्णिता भवन्ति॥555॥)

इति भावाल्पबहुत्वाधिकारौ।

किण्हादिलेस्सरहिया, संसारविणिग्गया अणंतसुहा।

सिद्धिपुरं संपत्ता, अलेस्सिया ते मुणेयव्वा॥556॥

(कृष्णादिलेश्यारहिताः संसारविनिर्गता अनंतसुखाः।

सिद्धिपुरं संप्राप्ता अलेश्यास्ते ज्ञातव्याः॥556॥)

इति लेश्याप्ररूपणा समाप्ता।

भविया सिद्धी जेसिं, जीवाणं ते हवंति भवसिद्धा।

तव्विवरीयाऽभव्वा, संसारादो ण सिज्झंति॥557॥

(भव्या सिद्धिर्येषां जीवानां ते भवन्ति भवसिद्धाः।

तद्विपरीता अभव्याः संसारान्न सिध्यन्ति॥557॥)

भव्वत्तणस्स जोग्गा, जे जीवा ते हवंति भवसिद्धा।

ण हु मलविगमे णियमा, ताणं कणओवलाणमिव॥558॥

(भव्यत्वस्य योग्या ये जीवास्ते भवन्ति भवसिद्धाः।

न हि मलविगमे नियमात् तेषां कनकोपलानामिव॥558॥)

ण य जे भव्वाभव्वा, मुत्तिसुहातीदणंतसंसारा।

ते जीवा णायव्वा, णेव य भव्वा अभव्वा य॥559॥

(न च ये भव्या अभव्या मुक्तिसुखा अतीतानन्तसंसाराः।

ते जीवा ज्ञातव्या नैव च भव्या अभव्याश्च॥559॥)

अवरो जुत्ताणंतो, अभव्वरासिस्स होदि परिमाणं।

तेण विहीणो सव्वो, संसारी भव्वरासिस्स॥560॥

(अवरो युक्तानन्तः अभव्यराशेर्भवति परिमाणम्।

तेन विहीनः सर्वः संसारी भव्यराशेः॥560॥)

सुहुमट्ठिदिसंजुत्तं, आसण्णं कम्मणिज्जरामुक्कं।

पाऐण एदि गहणं, दव्वमणिद्दिट्ठसंठाणं॥560 -1॥

(सूक्ष्मस्थितिसंयुक्तमासन्नं कर्मनिर्जरामुक्तम्।

प्रायेणैति ग्रहणं द्रव्यमनिर्दिष्टसंस्थानम्॥560 -1॥)

अगहिदमिस्सं गहिदं, मिस्समगहिदं तहेव गहिदं च।

मिस्सं गहिदमगहिदं गिहदं मिस्सं अगहिदं च॥560 -2॥

(अग्रहीतं मिश्रं ग्रहीतं मिश्रमग्रहीतं तथैव ग्रहीतं च।

मिश्रं ग्रहीतमग्रहीतं ग्रहीतं मिश्रमग्रहीतं च॥560 -2॥)

इति भव्यत्वमार्गणा समाप्ता।

छप्पंचणवविहाणं, अत्थाणं जिणवरोवइट्ठाणं।

आणाए अहिगमेण य, सद्दहणं होइ सम्मत्तं॥561॥

(षट्पञ्चनवविधानामर्थानां जिनवरॊपदिष्टानाम्।

आज्ञया अधिगमेन च श्रद्धानं भवति सम्यक्त्वम्॥561॥)

छद्दव्वेसु य णामं, उवलक्खणुवाय अत्थणे कालो।

अत्थणखेत्तं संखा, ठाणसरूवं फलं च हवे॥562॥

(षड्द्रव्येषु च नाम उपलक्षणानुवादः अस्तित्वकालः।

अस्तित्वक्षेत्रं संख्या स्थानस्वरूपं फलं च भवेत्॥562॥)

जीवाजीवं दव्वं, रूवारूवि त्ति होदि पत्तेयं।

संसारत्था रूवा, कम्मविमुक्का अरूवगया॥563॥

(जीवाजीवं द्रव्यं रूप्यरूपीति भवति प्रत्येकम्।

संसारस्था रूपिणः कर्मविमुक्ता अरूपगताः॥563॥)

अज्जीवेसु य रूवी, पुग्गलदव्वाणि धम्म इदरो वि।

आगासं कालो वि य, चत्तारि अरूविणो होंति॥564॥

(अजीवेषु च रूपीणि पुद्गलद्रव्याणि धर्म इतरॊऽपि।

आकाशं कालॊपि च चत्वारि अरूपीणि भवन्ति॥564॥)

उवजोगो वण्णचऊ, लक्खणमिह जीवपोग्गलाणं तु।

गदिठाणोग्गहवत्तणकिरियुवयारो दु धम्मचरू॥565॥

(उपयोगो वर्ण्णचतुष्कं लक्षणमिह जीवपुद्गलानां तु।

गतिस्थानावगाहवर्तनक्रियोपकारस्तु धर्मचतुर्ण्णाम्॥565॥)

गदिठाणोग्गहकिरिया, जीवाणं पुग्गलाणमेव हवे।

धम्मतिये ण हि किरिया, मुक्खा पुण साधका होंति।566॥

(गतिस्थानावगाहक्रिया जीवानां पुद्गलानामेव भवेत्।

धर्मत्रिके न हि क्रिया मुख्याः पुनः साधका भवन्ति॥566॥)

जत्तस्स पहं ठत्तस्स आसणं णिवसगस्स वसदी वा।

गदिठाणोग्गहकरणे धम्मतियं साधगं होदि॥567॥

(यातस्य पन्थाः तिष्ठतः आसनं निवसकस्य वसतिर्वा।

गतिस्थानावगाहकरणे धर्मत्रयं साधकं भवति॥567॥)

वत्तणहेदू कालो, वत्तणगुणमविय दव्वणिचयेसु।

कालाधारेणेव य, वट्टंति हु सव्वदव्वाणि॥568॥

(वर्तनाहेतुः कालो वर्तनागुणमवेहि द्रव्यनिचयेषु।

कालाधारेणैव च वर्तन्ते हि सर्वद्रव्याणि॥568॥)

धम्माधम्मादीणं, अगुरुगलहुगं तु छहिं वि वड्ढीहिं।

हाणीहिं वि वड्ढंतो, हायंतो वट्टदे जम्हा॥569॥

(धर्माधर्मादीनामगुरुकलघुकं तु षड्भिरपि वृद्धिभिः।

हानिभिरपि वर्धमानं हायमानं वर्तते यस्मात्॥569॥)

ण य परिणमदि सयं सो, ण य परिणामेइ अण्णमण्णेहिं।

विविहपरिणामियाणं, हवदि हु कालो सयं हेदू॥570॥

(न च परिणमति स्वयं स न च परिणामयति अन्यदन्यैः।

विविधपरिणामिकानां भवति हि कालः स्वयं हेतुः॥570॥)

कालं अस्सिय दव्वं, सगसगपज्जायपरिणदं होदि।

पज्जायावट्ठाणं, सुद्धणये होदि खणमेत्तं॥571॥

(कालमाश्रित्य द्रव्यं स्वकस्वकपर्यायपरिणतं भवति।

पर्यायावस्थानं शुद्धनयेन भवति क्षणमात्रम्॥571॥)

ववहारो य वियप्पो, भेदो तह पज्जओ त्ति एयट्ठो।

ववहार अवट्ठाणट्ठिदी हु ववहारकालो दु॥572॥

(व्यवहारश्च विकल्पॊ भेदस्तथा पर्याय इत्येकार्थः।

व्यवहारावस्थानस्थितिर्हि व्यवहारकालस्तु॥572॥)

अवरा पज्जायठिदी, खणमेत्तं होदि तं च समओ त्ति।

दोण्हमणूणमदिक्कमकालपमाणं हवे सो दु॥573॥

(अवरा पर्यायस्थितिः क्षणमात्रं भवति सा च समय इति।

द्वयॊरण्वॊरतिक्रमकालप्रमाणं भवेत् स तु॥573॥)

णभएयपयेसत्थो, परमाणू मंदगइपवट्टंतो।

बीयमणंतरखेत्तं, जावदियं जादि तं समयकालो॥573-1॥

(नभएकप्रदेशस्थः परमाणुर्मन्दगतिप्रवर्तमानः।

द्वितीयमनन्तरक्षेत्रं यावत् याति सः समयकालः॥573-1॥)

जेत्ती वि खेत्तमेत्तं, अणुणा रुद्धं खु गयणदव्वं च।

तं च पदेसं भणियं, अवरावरकारणं जस्स॥573-2॥

(यावदपि क्षेत्रमात्रमणुना रुद्धं खलु गगनद्रव्यं च।

स च प्रदेशो भणितः अपरपरकारणं यस्य॥573-2॥)

आवलिअसंखसमया, संखेज्जावलिसमूहमुस्सासो।

सत्तुस्सासा थोवो, सत्ततत्थोवा लवो भणियो॥574॥

(आवलिरसंख्यसमया संख्येयावलिसमूह उच्छ्वासः।

सप्तोच्छ्वासाः स्तोकः सप्तस्तोको लवो भणितः॥574॥)

अड्ढस्स अणलसस्स य, णिरुवहदस्स य हवेज्ज जीवस्स।

उस्सासाणिस्सासो, एगो पाणो त्ति आहीदो॥574-1॥

(आढ्यस्यानलसस्य च निरुपहतस्य च भवेत् जीवस्य।

उच्छ्वासनिःश्वास एकः प्राण इति आख्यातः॥574-1॥)

अट्ठत्तीसद्धवला, णाली वेणालिया मुहुत्तं तु।

एगसमयेण हीणं भिण्णमुहुत्तं तदो सेसं॥575॥

(अष्टत्रिंशदर्धलवा नाली द्विनालिको मुहूर्तस्तु।

एकसमयेन हीनो भिन्नमुहूर्तस्ततः॥575॥)

ससमयमावलि अवरं, समऊणमुहुत्तयं तु उक्कस्सं।

मज्झासंखवियप्पं, वियाण अंतोमुहुत्तमिणं॥575-1॥

(ससमय आवलिरवरः समयोनमुहूर्तकस्तु उत्कृष्टः।

मध्यासंख्यविकल्पः विजानीहि अन्तर्मुहूर्तमिमम्॥575-1॥)

दिवसो पक्खो मासो, उडु अयणं वस्समेवमादी हु।

संखेज्जासंखेज्जाणंताओ होदि ववहारो॥576॥

(दिवसः पक्षो मास ऋतुरयनं वर्षमेवमादिर्हि।

संख्येयासंख्येयानन्ता भवन्ति व्यवहाराः॥576॥)

ववहारो पुण कालो, माणुसखेत्तम्हि जाणिदव्वो दु।

जोइसियाणं चारे, ववहारो खलु समाणो त्ति॥577॥

(व्यवहारः पुनः कालः मानुषक्षेत्रे ज्ञातव्यस्तु।

ज्योतिष्काणां चारे व्यवहारः खलु समान इति॥577॥)

ववहारो पुण तिविहो, तीदो वट्टंतगो भविस्सो दु।

तीदो संखेज्जावलिहदसिद्धाणं पमाणं तु॥578॥

(व्यवहारः पुनस्त्रिविधोऽतीतो वर्तमानो भविष्यंस्तु।

अतीतः संख्येयावलिहतसिद्धानां प्रमाणं तु॥578॥)

समओ हु वट्टमाणो, जीवादो सव्वपुग्गलादो वि।

भावी अणंतगुणिदो, इदि ववहारो हवे कालो॥579॥

(समयो हि वर्तमानो जीवात् सर्वपुद्गलादपि।

भावी अनंतगुणित इति व्यवहारो भवेत्कालः॥579॥)

कालो वि य ववएसो, सब्भावपरूवओ हवदि णिच्चो।

उप्पण्णप्पद्धंसी, अवरो दीहंतरट्ठाई॥580॥

(कालोऽपि च व्यपदेशः सद्भावप्ररूपको भवति नित्यः।

उत्पन्नप्रध्वंसी अपरो दीर्घान्तरस्थायी॥580॥)

छद्दव्वावट्ठाणं, सरिसं तियकालअत्थपज्जाये।

वेंजणपज्जाये वा, मिलिदे ताणं ठिदित्तादो॥581॥

(षड्द्रव्यावस्थानं सदृशं त्रिकालार्थपर्याये।

व्यञ्जनपर्याये वा मिलिते तेषां स्थितित्वात्॥581॥)

एयदवियम्मि जे, अत्थपज्जया वियणपज्जया चावि।

तीदाणागदभूदा, तावदियं तं हवदि दव्वं॥582॥

(एकद्रव्ये ये अर्थपर्याया व्यञ्जनपर्यायाश्चापि।

अतीतानागतभूताः तावत्तत् भवति द्रव्यम्॥582॥)

आगासं वज्जित्ता, सव्वे लोगम्मि चेव णत्थि वहिं।

वावी धम्माधम्मा, अवट्ठिदा अचलिदा णिच्चा॥583॥

(आकाशं वर्जयित्वा सर्वाणि लॊके चैव न सन्ति बहिः।

व्यापिनौ धर्माधर्मौ अवस्थितावचलितौ नित्यौ॥583॥)

लोगस्स असंखेज्जदिभागप्पहुदिं तु सव्वलोगो त्ति।

अप्पपदेसविसप्पणसंहारे वावडो जीवो॥584॥

(लॊकस्यासंख्येयादिभागप्रभृतिस्तु सर्वलॊक इति।

आत्मप्रदेशविसर्पणसंहारे व्यापृतॊ जीवः॥584॥)

पोग्गलदव्वाणं पुण, एयपदेसादि होंति भजणिज्जा।

एक्केक्को दु पदेसो, कालाणूणं धुवो होदि॥585॥

(पुद्गलद्रव्याणां पुनरेकप्रदेशादयॊ भवन्ति भजनीयाः।

एकैकस्तु प्रदेशः कालाणूनां ध्रुवॊ भवति॥585॥)

संखेज्जासंखेज्जाणंता वा होंति पोग्गलपदेसा।

लोगागासेव ठिदी, एगपदेसो अणुस्स हवे॥586॥

(संख्येयासंख्येयानन्ता वा भवन्ति पुद्गलप्रदेशाः।

लॊकाकाश एव स्थितिरेकप्रदेशॊऽणॊर्भवेत्॥586॥)

लोगागासपदेसा, छद्दव्वेहिं फुडा सदा होंति।

सव्वमलोगागासं, अण्णेहिं विवज्जियं होदि॥587॥

(लॊकाकाशप्रदेशाः षड्द्रव्यैः स्फुटाः सदा भवन्ति।

सर्वमलॊकाशमन्यैर्विवर्जितं भवति॥587॥)

इति क्षेत्राधिकारः।

जीवा अणंतसंखाणंतगुणा पुग्गला हु तत्तो दु।

धम्मतियं एक्केक्कं, लोगपदेसप्पमा कालो॥588॥

(जीवा अनन्तसंख्या अनन्तगुणाः पुद्गला हि ततस्तु।

धर्मत्रिकमेकैकं लॊकप्रदेशप्रमः कालः॥588॥)

लोगागासपदेसे, एक्केक्के जे ट्ठिया हु एक्केक्का।

रयणाणं रासी इव, ते कालाणू मुणेयव्वा॥589॥

(लॊकाकाशप्रदेशे एकैकस्मिन् ये स्थिता हि एकैके।

रत्नानां राशिरिव ते कालाणवॊ मन्तव्याः॥589॥)

ववहारो पुण कालो, पोग्गलदव्वादणंतगुणमेत्तो।

तत्तो अणंतगुणिदा आगासपदेसपरिसंखा॥590॥

(व्यवहारः पुनः कालः पुद्गलद्रव्यादनन्तगुणमात्रः।

ततः अनन्तगुणिता आकाशप्रदेशपरिसंख्या॥590॥)

लोगागासपदेसा, धम्माधम्मेगजीवगपदेसा।

सरिसा हु पदेसो पुण, परमाणुअवट्ठिदं खेत्तं॥591॥

(लॊकाकाशप्रदेशा धर्माधर्म्मैकजीवगप्रदेशाः।

सदृशा हि प्रदेशः पुनः परमाण्ववस्थितं क्षेत्रम्॥591॥)

सव्वमरूवी दव्वं, अवट्ठिदं अचलिआ पदेसा वि।

रूवी जीवा चलिया, तिवियप्पा होंति हु पदेसा॥592॥

(सर्वमरूपि द्रव्यमवस्थितमचलिताः प्रदेशा अपि।

रूपिणॊ जीवाश्चलितास्त्रिकल्पा भवन्ति हि प्रदेशाः॥592॥)

पोग्गलदव्वम्हि अणू, संखेज्जादी हवंति चलिदा हु।

चरिममहक्खंधम्मि य, चलाचला होंति हु पदेसा॥593॥

(पुद्गलद्रव्येऽणवः संख्यातादयॊ भवंति चलिता हि।

चरममहास्कन्धे च चलाचला भवन्ति हि प्रदेशाः॥593॥)

अणुसंखासंखेज्जाणंता य अगेज्जगेहि अंतरिया।

आहारतेजभासामणकम्मइया धुवक्खंघा॥594॥

(अणुसंख्यासंख्यातानन्ताश्च अग्राह्यकाभिरन्तरिताः।

आहारतेजॊभाषामनःकार्मणा ध्रुवस्कन्धाः॥594॥)

सांतरणिरंतरेण य सुण्णा पत्तियदेहधुवसुण्णा।

बादरणिगोदसुण्णा, सुहुमणिगोदा णभो महक्खंधा॥595॥

(सान्तरनिरन्तरया च शून्या प्रत्येकदेहध्रुवशून्याः।

बादरनिगॊदशून्याः सूक्ष्मनिगॊदा नभॊ महास्कन्धाः॥595॥)

परमाणुवग्गणम्मि ण, अवरुक्कस्सं च सेसगे अत्थि।

गेज्झमहक्खंधाणं वरमहियं सेसगं गुणियं॥596॥

(परमाणुवर्गणायां नावरॊत्कृष्टं च शेषके अस्ति।

ग्राह्यमहास्कन्धानां वरमधिकं शेषकं गुणितम्॥596॥)

सिद्धाणंतिमभागो पडिभागो गेज्झगाण जेट्ठट्ठं।

पल्ला संखेज्जदिमं, अंतिमखंधस्स जेट्ठट्ठं॥597॥

(सिद्धानन्तिमभागः प्रतिभागो ग्राह्याणां ज्येष्ठार्थम्।

पल्यासंख्येयमन्तिमस्कन्धस्य ज्येष्ठार्थम्॥597॥)

संखेज्जासंखेज्जे गुणगारो सो दु होदि हु अणंते।

चत्तारि अगेज्जेसु वि सिद्धाणमणंतिमो भागो॥598॥

(संख्यातासंख्यातायां गुणकारः स तु भवति हि अनन्तायाम्।

चतसृषु अग्राह्यास्वपि सिद्धानामनन्तिमो भागः॥598॥)

जीवादोणंतगुणो, धुवादितिण्हं असंखभागो दु।

पल्लस्स तदो तत्तो असंखलोगवहिदो मिच्छो॥599॥

(जीवादनन्तगुणो ध्रुवादितिसृणामसंख्यभागस्तु।

पल्यस्य ततस्ततः असंख्यलोकावहिता मिथ्या॥599॥)

सेढी सूई पल्ला, जगपदरा संखभागगुणगारा।

अप्पप्पणअवरादो, उक्कस्से होंति णियमेण॥600॥

(श्रेणी सूची पल्यजगत्प्रतरासंख्यभागगुणकाराः।

आत्मात्मनोवरादुत्कृष्टे भवन्ति नियमेन॥600॥)

हेट्ठि मउक्कस्सं पुण रूवहियं उवरिमं जहण्णं खु।

इदि तेवीसवियप्पा, पुग्गलदव्वा हु जिणदिट्ठा॥601॥

(अधस्तनोत्कृष्टं पुनः रूपाधिकमुपरिमं जघन्यं खलु।

इति त्रयोविंशतिविकल्पानि पुद्गलद्रव्याणि हि जिनदिष्टानि॥601॥)

पुढवी जलं च छाया, चउरिंदियविसयकम्ममपरमाणु।

छव्विहभेयं भणियं, पोग्गलदव्वं जिणवरेहिं॥602॥

(पृथ्वी जलं च छाया चतुरिन्द्रियविषयकर्मपरमाणवः।

षड्विधभेदं भणितं पुद्गलद्रव्यं जिनवरैः॥602॥)

बादरबादर बादर, बादरसुहमं च सुहमथूलं च।

सुहमं च सुहमसुहमं धरादियं होदि छब्भेयं॥603॥

(बादरबादरं बादरं बादरसूक्ष्मं च सूक्ष्मस्थूलं च।

सूक्ष्मं च सूक्ष्मसूक्ष्मं धरादिकं भवति षड्भेदम्॥603॥)

खंधं सयलसमत्थं, तस्य य अद्धं भणंति देसो त्ति।

अद्धद्धं च पदेसो, अविभागी चेव परमाणू॥604॥

(स्कन्धं सकलसमर्थं तस्य चार्धं भणन्ति देशमिति।

अर्द्धार्द्धं च प्रदेशमविभागिनं चैव परमाणुम्॥604॥)

इति स्थानस्वरूपाधिकारः।

गदिठाणोग्गहकिरियासाधणभूदं खु होदि धम्मतियं।

वत्तणकिरियासाहणभूदो णियमेण कालो दु॥605॥

(गतिस्थानावगाहक्रियासाधनभूतं खलु भवति धर्मत्रयम्।

वर्तनाक्रियासाधनभूतो नियमेन कालस्तु॥605॥)

अण्णोण्णुवयारेण य, जीवा वट्टंति पुग्गलाणि पुणो।

देहादीणिव्वत्तणकारणभूदा हु णियमेण॥606॥

(अन्योन्योपकारेण च जीवा वर्तन्ते पुद्गलाः पुनः।

देहादिनिर्वर्तनकारणभूता हि नियमेन॥606॥)

आहारवग्गणादो तिण्णि सरीराणि होंति उस्सासो।

णिस्सासो वि य तेजोवग्गणखंधादु तेजंगं॥607॥

(आहारवर्गणातः त्रीणि शरीराणि भवन्ति उच्छ्वासः।

निश्वासोपि च तेजोवर्गणास्कन्धात्तु तेजोऽङ्गम्॥607॥)

भासमणवग्गणादो कमेण भासा मणं च कम्मादो।

अट्ठविहकम्मदव्वं होदि त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥608॥

(भाषामनोवर्गणातः क्रमेण भाषा मनश्च कार्मणतः।

अष्टविधकर्मद्रव्यं भवतीति जिनैर्निर्दिष्टम्॥608॥)

णिद्धत्तं लुक्खत्तं बंधस्स य कारणं तु एयादी।

संखेज्जासंखेज्जाणंतविहा णिद्धणुक्खगुणा॥609॥

(स्निग्धत्वं रूक्षत्वं बन्धस्य च कारणं तु एकादयः।

संख्येयासंख्येयानन्तविधा स्निग्धरूक्षगुणाः॥609॥)

एगगुणं तु जहण्णं णिद्धत्तं विगुणतिगुणसंखेज्जाऽ-।

संखेज्जाणंतगुणं, होदि तहा रुक्खभावं च॥610॥

(एकगुणं तु जघन्यं स्निग्धत्वं द्विगुणत्रिगुणसंख्येयाऽ-।

संख्येयानन्तगुणं भवति तथा रूक्षभावं च॥610॥)

एवं गुणसंजुत्ता, परमाणू आदिवग्गणम्मि ठिया।

जोग्गदुगाणं बंधे, दोण्हं बंधो हवे णियमा॥611॥

(एवं गुणसंयुक्ताः परमाणव आदिवर्गणायां स्थिताः।

योग्यद्विकयोः बंधे द्वयोर्बन्धो भवेन्नियमात्॥611॥)

णिद्धणिद्धा ण वज्झंति, रुक्खरुक्खा य पोग्गला।

णिद्धलुक्खा य बज्झंति, रूवारूवी य पोग्गला॥612॥

(स्निग्धस्निग्धा न बध्यन्ते रूक्षरूक्षाश्च पुद्गलाः।

स्निग्धरूक्षाश्च बध्यन्ते रूप्यरूपिणश्च पुद्गलाः॥612॥)

णिद्धिदरोलीमज्झे, विसरिसजादिस्स समगुणं एक्कं।

रूवि त्ति होदि सण्णा सेसाणं ता अरूवि त्ति॥613॥

(स्निग्धेतरावलीमध्ये विसदृशजातेः समगुणः एकः।

रूपीति भवति संज्ञा शेषाणां ते अरूपिण इति॥613॥)

दोगुणणिद्धाणुस्स य, दोगुणलुक्खाणुगं हवे रूवी।

इगितिगुणादि अरूवी, रुक्खस्स वि तंव इदि जाणे॥614॥

(द्विगुणस्निग्धाणोश्च द्विगुणरूक्षाणुकॊ भवेत् रूपी।

एकत्रिगुणादिः अरूपी रूक्षस्यापि तद्वदिति जानीहि॥614॥)

णिद्धस्स णिद्धेण दुराहिएण, लुक्खस्स लुक्खेण दुराहिएण।

णिद्धस्स लुक्खेण हवेज्ज बंधो, जहण्णवज्जे विसमे समे वा॥615॥

(स्निग्धस्य स्निग्धेन व्यधिकेन रूक्षस्य रूक्षेण व्यधिकेन।

स्निग्धस्य रूक्षेण भवेद्बन्धॊ जघन्यवर्ज्ये विषमे समे वा॥615॥)

णिद्धिदरे समविसमा, दोत्तिगआदी दुउत्तरा होंति।

उभयेवि य समविसमा, सरिसिदरा होंति पत्तेयं॥616॥

(स्निग्धेतरयॊः समविषमा द्वित्रिकादयः व्युत्तरा भवन्ति।

उभयेऽपि च समविषमाः सदृशेतरे भवन्ति प्रत्येकम्॥616॥)

दोत्तिगपभवदुउत्तरगदेसुणंतरदुगाण बंधो दु।

णिद्धे लुक्खे वि तहा वि जहण्णुभये वि सव्वत्थ॥617॥

(द्वित्रिकप्रभवद्विउत्तरगतेष्वनन्तरद्विकयॊः बन्धस्तु।

स्निग्धे रूक्षे पि तथापि जघन्यॊभयेऽपि सर्वत्र॥617॥)

णिद्धिदरवरगुणाणू, सपरट्ठाणे वि णेदि बंधट्ठं।

बहिरंतरंगहेदुहि, गुणंतरं संगदे एदि॥618॥

(स्निग्धेतरावरगुणाणुः स्वपरस्थानेऽपि नैति बन्धार्थम्।

बहिरंतरंगहेतुभिर्गुणान्तरं संगते एति॥618॥)

णिद्धिदरगुणा अहिया, हीणं परिणामयंति बंधम्मि।

संखेज्जासंखेज्जाणंतपदेसाण खंधाणं॥619॥

(स्निग्धेतरगुणा अधिका हीनं परिणामयंति बन्धे।

संख्येयासंख्येयानन्तप्रदेशानां स्कन्धानाम्॥619॥)

इति फलाधिकारः।

दव्वं छक्कमकालं, पंचत्थीकायसण्णिदं होदि।

काले पदेसपचयो, जम्हा णत्थि त्ति णिद्दिट्ठं॥620॥

(द्रव्यं षट्कमकालं पञ्चास्तिकायसंज्ञितं भवति।

काले प्रदेशप्रचयो यस्मात् नास्तीति निर्दिष्टम्॥620॥)

णव य पदत्था जीवाजीवा ताणं च पुण्णपावदुगं।

आसवसंवरणिज्जरबंधा मोक्खो य होंति त्ति॥621॥

(नव च पदार्था जीवाजीवाः तेषां च पुण्यपापद्विकम्।

आस्रवसंवरनिर्जराबन्धा मोक्षश्च भवन्तीति॥621॥)

जीवदुगं उत्तट्ठं, जीवा पुण्णा हु सम्मगुणसहिदा।

वदसहिदा वि य पावा, तव्विवरीया हवंति त्ति॥622॥

(जीवद्विकमुक्तार्थं जीवाः पुण्या हि सम्यक्त्वगुणसहिताः।

व्रतसहिता अपि च पापास्तद्विपरीता भवन्तीति॥622॥)

मिच्छाइट्ठी पावा, णंताणंदा य सासणगुणा वि।

पल्लासंखेज्जदिमा, अणअण्णदरुदयमिच्छगुणा॥623॥

(मिथ्यादृष्टयः पापा अनन्तानन्ताश्च सासनगुणा अपि।

पल्यासंख्येया अनान्यतरौदयमिथ्यात्वगुणाः॥623॥)

मिच्छा सावयसासणमिस्साविरदा दुवारणंता यं।

पल्लासंखेज्जदिममसंखगुणं संखसंखगुणं॥624॥

(मिथ्याः श्रावकसासनमिश्राविरता द्विवारानन्ताश्च।

पल्यासंख्येयसंख्यगुणं संख्यासंख्यगुणम्॥624॥)

तिरधियसयणवणउदी, छण्णउदी अप्पमत्त वे कोडी।

पंचेव य तेणउदी, णवट्ठविसयच्छउत्तरं पमदे॥625॥

(त्र्यधिकशतनवनवतिः षण्णवतिः अप्रमत्ते द्वे कॊटी।

पञ्चैव च त्रिनवतिः नवाष्टद्विशतषडुत्तरं प्रमत्ते॥625॥)

तिसयं भणंति केई, चउरुत्तरमत्थपंचयं केई।

उवसामगपरिमाणं, खवगाणं जाण तद्दुगुणं॥626॥

(त्रिशतं भणंति केचित् चतुरुत्तरमस्तपंचकं केचित्।

उपशामकपरिमाणं क्षपकाणां जानीहि तद्द्विगुणम्॥626॥)

सोलसयं चउवीसं, तीसं छत्तीस तह य बादालं।

अडदालं चउवण्णं, चउवण्णं होंति उवसमगे॥627॥

(षॊडशकं चतुर्विंशतिः त्रिंशत् षट्त्रिंशत् तथा च द्वाचत्वारिंशत्।

अष्टाचत्वारिंशत् चतुःपंचाशत् चतुःपंचाशत् भवन्ति उपशमके॥627॥)

बत्तीसं अडदालं, सट्ठी वावत्तरी य चुलसीदी।

छण्णउदी अट्ठुत्तरसयमट्ठु त्तरसयं च खवगेसु॥628॥

(द्वात्रिंशदष्टचत्वारिंशत् षष्टिः द्वासप्ततिश्च चतुरशीतिः।

षण्णवतिः अष्टोत्तरशतमष्टोत्तरशतं च क्षपकेषु॥628॥)

अट्ठेव सयसहस्सा, अट्ठाणउदी तहा सहस्साणं।

संखा जोगिजिणाणं, पंचसयविउत्तरं वंदे॥629॥

(अष्टैव शतसहस्राणि अष्टानवतिस्तथा सहस्राणाम्।

संख्या योगिजिनानां पंचशतव्युत्तरं वन्दे॥629॥)

होंति खवा इगिसमये, बोहियबुद्धा य पुरिसवेदा य।

उक्कस्सेणट्ठुत्तरसयप्पमा सग्गदो य चुदा॥630॥

(भवन्ति क्षपका एकसमये बोधितबुद्धाश्च पुरुषवेदाश्च।

उत्कृष्टेनाष्टोत्तरशतप्रमाः स्वर्गतश्च च्युताः॥630॥)

पत्तेयबुद्धतित्थयरत्थिणंउसयमणोहिणाणजुदा।

दसछक्कवीसदसवीसट्ठावीसं जहाकमसो॥631॥

जेट्ठावरबहुमज्झिम, ओगाहणगा दु चारि अट्ठेव।

जुगवं हवंति खवगा, उवसमगा अद्धमेदेसिं॥632॥ विसेसयं।

(प्रत्येकबुद्धतीर्थकरस्त्रीनपुंसकमनोवधिज्ञानयुताः।

दशषट्कविंशतिदशविंशत्यष्टाविंशौ यथाक्रमशः॥631॥

ज्येष्ठावरबहुमध्यमावगाहा द्वौ चत्वारोऽष्टैव।

युगपत् भवन्ति क्षपका उपशमका अर्धमेतेषाम्॥632॥ विशेषकम्॥)

सत्तादी अट्ठंता, छण्णवमज्झा य संजदा सव्वे।

अंजलिमोलियहत्थो, तियरणसुद्धे णमंसामि॥633॥

(सप्तादयोऽष्टान्ताः षण्णवमध्याश्च संयताः सर्वे।

अञ्जलिमौलिकहस्तस्त्रिकरणशुद्ध्या नमस्यामि॥633॥)

ओघासंजदमिस्सयसासणसम्माण भागहारा जे।

रूऊणावलियासंखेज्जेणिह भजिय तत्थ णिक्खित्ते॥634॥

देवाणं अवहारा, होंति असंखेण ताणि अवहरिय।

तत्थेव य पक्खित्ते, सोहम्मीसाण अवहारा॥635॥ जुम्मं।

(ओधा असंयतमिश्रकसासनसमीचां भागहारा ये।

रूपोनावलिकासंख्यातेनेह भक्त्वा तत्र निक्षिप्ते॥634॥

देवानामवहारा भवन्ति असंख्येन तानवहृत्य।

तत्रैव च प्रक्षिप्ते सौधर्मैशानावहाराः॥635॥ युग्मम्॥)

सोहम्मसाणहारमसंखेण य संखरूवसंगुणिदे।

उवरि असंजदमिस्सयसासणसम्माण अवहारा॥636॥

(सौधर्मैशानहारमसंख्येन च संख्यरूपसंगुणिते।

उपरि असंयतमिश्रकसासनसमीचामवहाराः॥636॥)

सोहम्मादासारं, जोइसिवणभवणतिरियपुढवीसु।

अविरदमिस्सेऽसंखं, संखासंखगुणं सासणे देसे॥637॥

(सौधर्मादासहस्रारं ज्योतिषि वनभवनतिर्यक्पृथ्वीषु।

अविरतमिश्रेऽसंख्यं संख्यासंख्यगुणं सासने देशे॥637॥)

चरमधरासाणहरा आणदसम्माण आरणप्पहुदिं।

अंतिमगेवेज्जंतं, सम्माणमसंखसंखगुणहारा॥638॥

(चरमधरासानहारादानतसमीचामारणप्रभृति।

अंतिमग्रैवेयकान्ते समीचामसंख्यसंख्यगुणहाराः॥638॥)

तत्तो ताणुत्ताणं, वामाणमणुद्दिसाण विजयादि।

सम्माणं संखगुणो, आणदमिस्से असंखगुणो॥639॥

(ततस्तेषामुक्तानां वामानामनुदिशानां विजयादि।

समीचां संख्यगुण आनतमिश्रे असंख्यगुणः॥639॥)

तत्तो संखेज्जगुणो सासणसम्माण होदि संखगुणो।

उत्तट्ठाणे कमसो, पणछस्सत्तट्ठचदुरसंदिट्ठी॥640॥

(ततः संख्येयगुणः सासनसमीचां भवति संख्यगुणः।

उक्तस्थाने क्रमशः पञ्चषट्सप्ताष्टचतुःसंदृष्टि॥640॥)

सगसगअवहारेहिं, पल्ले भजिदे हवंति सगरासी।

सगसगगुणपणिवण्णे, सगसगरासीसु अवणिदे वामा॥641॥

(स्वकस्वकावहारैः पल्ये भक्ते भवन्ति स्वकराशयः।

स्वकस्वकगुणप्रतिपन्नेषु स्वकस्वकराशिषु अपनीतेषु वामाः॥641॥)

तेरसकोडी देसे, बावण्णं सासणे मुणेदव्वा।

मिस्सा वि य तद्दुगणा, असंजदा सत्तकोडिसयं॥642॥

(त्रयोदशकोट्यो देशे द्वापञ्चाशत् सासने मन्तव्याः।

मिश्रा अपि च तद्विगुणा असंयताः सप्तकोटिशतम्॥642॥)

जीविदरे कम्मचये, पुण्णं पावो त्ति होहि पुण्णं तु।

सुहपयडीणं दव्वं, पावं असुहाण दव्वं तु॥643॥

(जीवेतरस्मिन् कर्मचये पुण्यं पापमिति भवति पुण्यं तु।

शुभप्रकृतिनां द्रव्यं पापमशुभप्रकृतीनां द्रव्यं तु॥643॥)

आसवसंवरदव्वं समयपबद्धं तु णिज्जरादव्वं।

तत्तो असंखगुणिदं, उक्कस्सं होदि णियणेण॥644॥

(आस्रवसंवरद्रव्यं समयप्रबद्धं तु निर्जराद्रव्यम्।

ततोऽसंख्यगुणितमुत्कृष्टं भवति नियमेन॥644॥)

बंधो समयपबद्धो, किंचूणदिवड्ढमेत्तगुणहाणी।

मोक्खो य होदि एवं, सद्दहिदव्वा दु तच्चट्ठा॥645॥

(बन्धः समयप्रबद्धः किञ्चिदूनव्यर्धमात्रगुणहानिः।

मोक्षश्च भवत्येवं श्रद्धातव्यास्तु तत्त्वार्थाः॥645॥)

खीणे दंसणमोहे, जं सद्दहणं सुणिम्मलं होई।

तं खाइयसम्मत्तं, णिच्चं कम्मक्खवणहेदू॥646॥

(क्षीणे दर्शनमोहे यच्छ्रद्धानं सुनिर्मलं भवति।

तत्क्षायिकसम्यक्त्वं नित्यं कर्मक्षपणहेतु॥646॥)

दंसणमोहे खविदे, सिज्झदि एक्केव तदियतुरियभवे।

णादिक्कदि तुरियभवं, ण विणस्सदि सेससम्मं व॥646-1॥

(दर्शनमोहे क्षपिते सिद्धयति एकस्मिन्नेव तृतीयतुरीयभवे।

नातिक्रामति तुरीयभवं न विनश्यति शेषसम्यक्त्वं व॥646-1॥)

वयणेहिं वि हेदूहिं वि, इंदियभयआणएहिं रूवेहिं।

वीभच्छजुगुच्छाहिं य, तेलोक्केण वि ण चालेज्जो॥647॥

(वचनैरपि हेतुभिरपि इन्द्रियभयानीतै रूपैः।

बीभत्स्यजुगुप्साभिश्च त्रैलोक्येनापि न चाल्यः॥647॥)

दंसणमोहक्खवणापट्ठबगो कम्मभूमिजादो हु।

मणुसो केवलिमूले णिट्ठवगो होदि सव्वत्थ॥648॥

(दर्शनमोहक्षपणाप्रस्थापकः, कर्मभूमिजातो हि।

मनुष्यः केवलिमूले निष्ठापको भवति सर्वत्र॥648॥)

दंसणमोहुदयादो, उप्पज्जइ जं पयत्थसद्दहणं।

चलमलिणमगाढं तं, वेदयसम्मत्तमिदि जाणे॥649॥

(दर्शनमोहोदयादुत्पद्यते यत् पदार्थश्रद्धानम्।

चलमलिनमगाढं तद् वेदकसम्यक्त्वमिति जानीहि॥649॥)

दंसणमोहुवसमदो, उप्पज्जइ जं पयत्थसद्दहणं।

उवसमसम्मत्तमिणं, पसण्णमलपंकतोयसमं॥650॥

(दर्शनमोहोपशमादुत्पद्यते यत्पदार्थश्रद्धानम्।

उपशमसम्यक्त्वमिदं प्रसन्नमलपंकतोयसमम्॥650॥)

खयउवसमियविसोही, देसणपाउग्गकरणलद्धी य।

चत्तारि वि सामण्णा, करणं पुण होदि सम्मत्ते॥651॥

(क्षायोपशमिकविशुद्धी देशना प्रायोग्यकरणलब्धी च।

चतस्रोऽपि सामान्याः करणं पुनर्भवति सम्यक्त्वे॥651॥)

चदुगदिभव्वो सण्णी, पज्जत्तो सुज्झगो य सागारो।

जागारो सल्लेसो, सलद्धिगो सम्ममुवगमई॥652॥

(चतुर्गतिभव्यः संज्ञी पर्याप्तः शुद्धकश्च साकारः।

जागरूकः सल्लेश्यः सलब्धिकः सम्यक्त्वमुपगच्छति॥652॥)

चत्तारि वि खेत्ताइं, आउगबंधेण होदि सम्मत्तं।

अणुवदमहव्वदाइं, ण लहइ देवाउगं मोत्तुं॥653॥

(चत्वार्यपि क्षेत्राणि आयुष्कबन्धेन भवति सम्यक्त्वम्।

अणुव्रतमहाव्रतानि न लभते देवायुष्कं मुक्त्वा॥653॥)

ण य मिच्छत्तं पत्तो, सम्मत्तादो य जो य परिवडिदो।

सो सासणो त्ति णेयो, पंचमभावेण संजुत्तो॥654॥

(न च मिथ्यात्वं प्राप्तः सम्यक्त्वतश्च यश्च परिपतितः।

स सासन इति ज्ञेयः पंचमभावेन संयुक्तः॥654॥)

सद्दहणासद्दहणं, जस्स य जीवस्स होइ तच्चेसु।

विरयाविरयेण समो, सम्मामिच्छो त्ति णायव्वो॥655॥

(श्रद्धानाश्रद्धानं यस्य य जीवस्य भवति तत्त्वेषु।

विरताविरतेन समः सम्यग्मिथ्य इति ज्ञातव्यः॥655॥)

मिच्छादिट्ठी जीवो, उवइट्ठं पवयणं ण सद्दहदि।

सद्दहदि असब्भावं उवइट्ठं वा अणुवइट्ठं॥656॥

(मिथ्यादृष्टिर्जीव उपदिष्टं प्रवचनं न श्रद्दधाति।

श्रद्दधाति असद्भावमुपदिष्टं वा अनुपदिष्टम्॥656॥)

वासपुधत्ते खइया, संखेज्जा जइ हवंति सोहम्मे।

तो संखपल्लठिदिये, केवडिया एवमणुपादे॥657॥

(वर्षपृथक्त्वे क्षायिकाः संख्येया यदि भवन्ति सौधर्मे।

तर्हि संख्यपल्यस्थितिके कति एवमनुपाते॥657॥)

संखावलिहिदपल्ला, खइया तत्तो य वेदमुवसमगा।

आवलिअसंखगुणिदा, असंखगुणहीणया कमसो॥658॥

(संख्यावलिहितपल्या क्षायिकास्ततश्च वेदमुपशमकाः।

आवल्यसंख्यगुणिता असंख्यगुणहीनकाः क्रमशः॥658॥)

पल्लासंखेज्जदिमा, सासणमिच्छा य संखगुणिदा हु।

मिस्सा तेहिं विहीणो, संसारी वामपरिमाणं॥659॥

(पल्यासंख्याताः सासनमिथ्याश्च संख्यगुणिता हि।

मिश्रास्तैर्विहीनः संसारी वामपरिमाणम्॥659॥)

णोइंदियआवरणखओवसमं तज्जबोहणं सण्णा।

सा जस्स सो दु सण्णी, इदरो सेसिंदिअवबोहो॥660॥

(नॊइन्द्रियावरणक्षयॊपशमस्तज्जबॊधनं संज्ञा।

सा यस्य स तु संज्ञी इतरः शेषेन्द्रियावबॊधः॥660॥)

सिक्खाकिरियुवदेसालावग्गाही मणोवलंबेण।

जो जीवो सो सण्णी, तव्विवरीओ असण्णी दु॥661॥

(शिक्षाक्रियॊपदेशालापग्राही मनॊऽवलम्बेन।

यॊ जीवः स संज्ञी तद्विपरीतॊऽसंज्ञी तु॥661॥)

मीमंसदि जो पुव्वं, कज्जमकज्जं च तच्चमिदरं च।

सिक्खदि णामेणेदि य, समणो अमणो य विवरीदो॥662॥

(मीमांसति यः पूर्वं कार्यमकार्यं च तत्त्वमितरच्च।

शिक्षते नाम्ना एति च समनाः अमनाश्च विपरीतः॥662॥)

देवेहिं सादिरेगो, रासी सण्णीण होदि परिमाणं।

तेणूणो संसारी, सव्वेसिमसण्णिजीवाणं॥663॥

(देवैः सातिरेकॊ राशिः संज्ञिनां भवति परिमाणम्।

तेनॊनः संसारी सर्वेषामसंज्ञिजीवानाम्॥663॥)

इति संज्ञिमार्गणाधिकारः।

उदयावण्णसरीरोदयेण तद्देहवयणचित्ताणं।

णोकम्मवग्गणाणं, गहणं आहारयं णाम॥664॥

(उदयापन्नशरीरॊदयेन तद्देहवचनचित्तानाम्।

नॊकर्मवर्गणानां ग्रहणमाहारकं नाम॥664॥)

आहरदि सरीराणं, तिण्हं एयदरवग्गणाओ य।

भासमणाणं णियदं तम्हा आहारयो भणियो॥665॥

(आहरति शरीराणां त्रयाणामेकतरवर्गणाश्च।

भाषामनसॊर्नियतं तस्मादाहारकॊ भणितः॥665॥)

विग्गहगदिमावण्णा केवलिणो, समुग्घदो अजोगी य।

सिद्धा य अणाहारा, सेसा आहारया जीवा॥666॥

(विग्रहगतिमापन्नाः केवलिनः समुद्धाता अयॊगिनश्च।

सिद्धाश्च अनाहाराः शेषा आहारका जीवाः॥666॥)

वेयणकसायवेगुव्वियो य मरणंतियो समुग्घादो।

तेजाहारो छट्ठो, सत्तमओ केवलीणं तु॥667॥

(वेदनाकषायवैगुर्विकाश्च मारणान्तिकः समुद्धातः।

तेज आहारः षष्ठः सप्तमः केवलिनां तु॥667॥)

मूलसरीरमछंडिय, उत्तरदेहस्स जीवपिंडस्स।

णिग्गमणं देहादो, होदि समुग्घादणामं तु॥668॥

(मूलशरीरमत्यक्त्वा उत्तरदेहस्य जीवपिण्डस्य।

निर्गमनं देहाद् भवति समुद्घातनाम तु॥668॥)

आहारमारणंतिय, दुगं पि णियमेण एगादिसिगं तु।

दसदिसि गदा हु सेसा, पंच समुग्घादया होंति॥669॥

(आहारमारणांतिकद्विकमपि नियमेन एकदिशिकं तु।

दशदिशि गता हि शेषाः पञ्चसमुद्घातका भवन्ति॥669॥)

अंगुलअसंखभागो, कालो आहारयस्स उक्कस्सो।

कम्मम्मि अणाहारो, उक्कस्सं तिण्ण समया हु॥670॥

(अंगुलासंख्यभागः कालः आहारकस्यॊत्कृष्टः।

कार्मणे अनाहारः उत्कृष्टः त्रयः समया हि॥670॥)

कम्मइयकायजोगी, होदि अणाहारयाण परिमाणं।

तव्विरहिदसंसारी, सव्वो आहारपरिमाणं॥671॥

(कार्मणकाययॊगी भवति अनाहारकाणां परिमाणम्।

तद्विरहितसंसारी सर्व आहारपरिमाणम्॥671॥)

इति आहारमार्गणाधिकारः।

वत्थुणिमित्तं भावो, जादो जीवस्स जो दु उवजोगो।

सो दुविहो णायव्वो, सायारो चेव णायारो॥672॥

(वस्तुनिमित्तं भावॊ जातॊ जीवस्य यस्तूपयॊगः।

स द्विविधॊ ज्ञातव्यः साकारश्चैवानाकारः॥672॥)

णाणं पंचविहं पि य, अण्णाणतियं च सागरुवजोगो।

चदुदंसणमणगारो, सव्वे तल्लक्खणा जीवा॥673॥

(ज्ञानं पंचविधमपि च अज्ञानत्रिकं च साकारॊपयॊगः।

चक्षुर्दर्शनमनाकारः सर्वे तल्लक्षणा जीवाः॥673॥)

मदिसुदओहिमणेहि य, सगसगविसये विसेसविण्णाणं।

अंतोमुहुत्तकालो, उवजोगो सो दु सायारो॥674॥

(मतिश्रुतावधिमनोभिश्च स्वकस्वकविषये विशेषविज्ञानम्।

अन्तर्मुहूर्तकाल उपयोगः स तु साकारः॥674॥)

इंदियमणोहिणा वा, अत्थे अविसेसिदूण जं गहणं।

अंतोमुहुत्तकालो, उवजोगो सो अणायारो॥675॥

(इन्द्रियमनोऽवधिना वा अर्थे अविशेष्य यद्ग्रहणम्।

अन्तर्मुहूर्तकालः उपयोगः स अनाकारः॥675॥)

णाणुवजोगजुदाणं, परिमाणं णाणमग्गणं व हवे।

दंसणुवजोगियाणं, दंसणमग्गण व उत्तकमो॥676॥

(ज्ञानोपयोगयुतानां परिमाणं ज्ञानमार्गणावद् भवेत्।

दर्शनोपयोगिनां दर्शनमार्गणावदुक्तक्रमः॥676॥)

इति उपयोगाधिकारः।

गुणजीवा पज्जत्ती, पाणा सण्णा य मग्गणुवजोगो।

जोग्गा परूविदव्वा, ओघादेसेसु पत्तेयं॥677॥

(गुणजीवाः पर्याप्तयः प्राणाः संज्ञाश्च मार्गणोपयोगौ।

योग्याः प्ररूपितव्या ओघादेशयोः प्रत्येकम्॥677॥)

चउ पण चोद्दस चउरो, णिरयादिसु चोद्दसं तु पंचक्खे।

तसकाये सेसिंदियकाये मिच्छं गुणट्ठाणं॥678॥

(चत्वारि पञ्च चतुर्दश चत्वारि निरयादिषु चतुर्दश तु पञ्चाक्षे।

त्रसकाये शेषेन्द्रियकाये मिथ्यात्वं गुणस्थानम्॥678॥)

मज्झिमचउमणवयणे, सण्णिप्पहुदिं दु जाव खीणो त्ति।

सेसाणं जोगि त्ति य, अणुभयवयणं तु वियलादो॥679॥

(मध्यमचतुर्मनोवचनयोः संज्ञिप्रभृतिस्तु यावत् क्षीण इति।

शेषाणां योगिति च अनुभयवचनं तु विकलतः॥679॥)

ओरालं पज्जत्ते, थावरकायादि जाव जोगो त्ति।

तम्मिस्समपज्जत्ते, चदुगुणठाणेसु णियमेण॥680॥

(औरालं पर्याप्ते स्थावरकायादि यावत् योगीति।

तन्मिश्रमपर्याप्ते चतुर्गुणस्थानेषु नियमेन॥680॥)

मिच्छे सासणसम्मे, पुंवेदयदे कवाडजोगिम्मि।

णरतिरिये वि य दोण्णि वि, होंति त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥681॥

(मिथ्यात्वे सासनसम्यक्त्वे पुंविदायते कपाटायोगिनि।

नरतिरश्चोरपि च द्वावपि भवन्तीति जिनैर्निर्दिष्टम्॥681॥)

वेगुव्वं पज्जत्ते, इदरे खलु होदि तस्स मिस्सं तु।

सुरणिरयचउट्ठाणे, मिस्से ण हि मिस्सजोगो हु॥682॥

(वैगूर्वं पर्याप्ते इतरे खलु भवति तस्य मिश्रं तु।

सुरनिरयचतुःस्थाने मिश्रे न हि मिश्रयोगो हि॥682॥)

आहारो पज्जत्ते, इदरे खलु होदि तस्स मिस्सो दु।

अंतोमुहुत्तकाले, छट्ठगुणे होदि आहारो॥683॥

(आहारः पर्याप्ते इतरे खलु भवति तस्य मिश्रस्तु।

अन्तर्मुहूर्तकाले षष्ठगुणे भवति आहारः॥683॥)

ओरालियमिस्सं वा, चउगुणठाणेसु होदि कम्मइयं।

चदुगदिविग्गहकाले, जोगिस्स य पदरलोगपूरणगे॥684॥

(औरालिकमिश्रो वा चतुर्गुणस्थानेषु भवति कार्मणम्।

चतुर्गतिविग्रहकाले यॊगिनश्च प्रतरलॊकपूरणके॥684॥)

थावरकायप्पहुदी, संढो सेसा असण्णिआदी य।

अणियट्टिस्स य पढमो, भागो त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥685॥

(स्थावरकायप्रभृतिः षण्ढः शेषा असंज्ञ्यादयश्च।

अनिवृत्तेश्च प्रथमॊ भाग इति जिनैर्निर्दिष्टम्॥685॥)

थावरकायप्पहुदी, अणियट्टीवितिचउत्थभागो त्ति।

कोहतियं लोहो पुण, सुहमसरागो त्ति विण्णेयो॥686॥

(स्थावरकायप्रभृति अनिवृत्तिद्वित्रिचतुर्थभाग इति।

क्रॊधत्रिकं लॊभः पुनः सूक्ष्मसराग इति विज्ञेयः॥686॥)

थावरकायप्पहुदी, मदिसुदअण्णाणयं विभंगो दु।

सण्णीपुण्णप्पहुदी, सासणसम्मो त्ति णायव्वो॥687॥

(स्थावरकायप्रभृति मतिश्रुताज्ञानकं विभङ्गस्तु।

संज्ञीपूर्णप्रभृति सासनसम्यगिति ज्ञातव्यः॥687॥)

सण्णाणतिगं अविरदसम्मादी छट्ठगादि मणपज्जो।

खीणकसायं जाव दु, केवलणाणं जिणे सिद्धे॥688॥

(सद्ज्ञानत्रिकमविरतसम्यगादि षष्ठकादिर्मनःपर्ययः।

क्षीणकषायं यावत्तु केवलज्ञानं जिने सिद्धे॥688॥)

अयदो त्ति हु अविरमणं, देसे देसो पमत्त इदरे य।

परिहारो सामाइयछेदो छट्ठादि थूलो त्ति॥689॥

(अयत इति अविरमणं देशे देशः प्रमत्तेतरस्मिन् च।

परिहारः सामायिकश्छेदः षष्ठादिः स्थूल इति॥689॥)

सुहुमो सुहुमकसाये, संते खीणे जिणे जहक्खादं।

संजममग्गणभेदा, सिद्धे णत्थि त्ति णिद्दिट्ठं॥690॥

(सूक्ष्मः सूक्ष्मकषाये शान्ते क्षीणे जिने यथाख्यातम्।

संयममार्गणभेदाः सिद्धे न सन्तीति निर्दिष्टम्॥690॥युग्मम्।)

चउरक्खथावराविरदसम्माइट्ठी दु खीणमोहो त्ति।

चक्खुअचक्खू ओही, जिणसिद्धे केवलं होदि॥691॥

(चतुरक्षस्थावराविरतसम्यग्दृष्टिस्तु क्षीणमोह इति।

चक्षुरचक्षुरवधिः जिनसिद्धे केवलं भवति॥691॥)

थावरकायप्पहुदी, अविरदसम्मो त्ति असुहतियलेस्सा।

सण्णीदो अपमत्तो, जाव दु सुहतिण्णिलेस्साओ॥692॥

(स्थावरकायप्रभृति अविरतसम्यगिति अशुभत्रिकलेश्याः।

संज्ञितः अप्रमत्तो यावत्तु शुभास्तिस्रो लेश्याः॥692॥)

णवरि य सुक्का लेस्सा, सजोगिचरिमो त्ति होदि णियमेण।

गयजोगिम्म वि सिद्धे, लेस्सा णत्थि त्ति णिद्दट्ठं॥693॥

(नवरि च शुक्ला लेश्या सयोगिचरम इति भवति नियमेन।

गतयोगेऽपि च सिद्धे लेश्या नास्तीति निर्दिष्टम्॥693॥)

थावरकायप्पहुदी, अजोगिचरिमो त्ति होंति भवसिद्धा।

मिच्छाइट्ठिट्ठाणे, अभव्वसिद्धा हवंति त्ति॥694॥

(स्थावरकायप्रभृति अयॊगिचरम इति भवति भवसिद्धाः।

मिथ्यादृष्टिस्थाने अभव्यसिद्धा भवन्तीति॥694॥)

मिच्छो सासणमिस्सो, सगसगठाणम्मि होदि अयदादो।

पढमुवसमवेदगसम्मत्तदुगं अप्पमत्तो त्ति॥695॥

(मिथ्यात्वं सासनमिश्रौ स्वकस्वकस्थाने भवति अयतात्।

प्रथमॊपशमवेदकसम्यक्त्वद्विकमप्रमत्त इति॥695॥)

विदियुवसमसम्मत्तं, अविरदसम्मादि संतमोहो त्ति।

खइगं सम्मं च तहा, सिद्धो त्ति जिणेहि णिद्दिट्ठं॥696॥

(द्वितीयॊपशमसम्यक्त्वमविरतसम्यगादिशांतमॊह इति।

क्षायिकं सम्यक्त्वं च तथा सिद्ध इति जिनैर्निर्दिष्टम्॥696॥)

सण्णी सण्णिप्पहुदी, खीणकसाओत्ति होदि णियमेण।

थावरकायप्पहुदी, असण्णित्ति हवे असण्णी हु॥697॥

(संज्ञी संज्ञीप्रभृतिः क्षीणकषाय इति भवति नियमेन।

स्थावरकायप्रभृतिः असंज्ञीति भवेदसंज्ञी हि॥697॥)

थावर कायप्पहुदी, सजोगिचरिमोत्ति होदि आहारी।

कम्मइय अणाहारी, अजोगिसिद्धे वि णायव्वो॥698॥

(स्थावरकायप्रभृतिः सयॊगिचरम इति भवति आहारी।

कार्मण अनाहारी अयॊगिसिद्धेपि ज्ञातव्यः॥698॥)

मिच्छे चोद्दस जीवा, सासण अयदे पमत्तविरदे य।

सण्णिदुगं सेसगुणे, सण्णीपुण्णी दु खीणोत्ति॥699॥

(मिथ्यात्वे चतुर्दश जीवाः सासनायते प्रमत्तविरते च।

संज्ञिद्विकं शेषगुणे संज्ञिपूर्णस्तु क्षीण इति॥699॥)

तिरियगदीए चोद्दस, हवंति सेसेसु जाण दो दो दु।

मग्गणठाणस्सेव, णेयाणि समासठाणाणि॥700॥

(तिर्यग्गतौ चतुर्दश भवन्ति शेषेषु जानीहि द्वौ द्वौ तु।

मार्गणास्थानस्यैवं ज्ञेयानि समासस्थानानि॥700॥)

पज्जत्ती पाणावि य, सुगमा भाविंदयं ण जोगिम्हि।

तहिं वाचुस्सासाउगकायत्तिगदुगमजोगिणो आऊ॥701॥

(पर्याप्तयः प्राणा अपि च सुगमाः भावेन्द्रियं न योगिनि।

तस्मिन् वागुच्छासायुष्ककायत्रिकद्विकमयोगिन आयुः॥701॥)

छट्ठोत्ति पढमसण्णा, सकज्ज सेसा य कारणावेक्खा।

पुव्वो पढमणियट्ठी, सुहुमोत्ति कमेण सेसाओ॥702॥

(षष्ठ इति प्रथमसंज्ञा सकार्यां शेषाश्च कारणापेक्षाः।

अपूर्वः प्रथमानिवृत्तिः सूक्ष्म इति क्रमेण शेषाः॥702॥)

मग्गण उवजोगावि य, सुगमा पुव्वं परूविदत्तादो।

गदिआदिसु मिच्छादी, परूविदे रूविदा होंति॥703॥

(मार्गणा उपयोगा अपि च सुगमाः पूर्वं प्ररूपितत्वात्।

गत्यादिषु मिथ्यात्वादौ प्ररूपिते रूपिता भवंति॥703॥)

तिसु तेरं दस मिस्से, सत्तसु णव छट्ठयम्मि एयारा।

जोगिम्मि सत्त जोगा, अजोगिठाणं हवे सुण्णं॥704॥

(त्रिषु त्रयोदश दश मिश्रे सप्तसु नव षष्ठे एकादश।

योगिनि सप्त योगा अयोगिस्थानं भवेत् शून्यम्॥704॥)

दोण्हं पंच छच्चेव दोसु मिस्सम्मि होंति वामिस्सा।

सत्तुवजोगा सत्तसु, दो चेव जिणे य सिद्धे य॥705॥

(द्वयोः पञ्च च छट् चैव द्वयोर्मिश्रै भवन्ति व्यामिश्राः।

सप्तोपयोगाः सप्तसु द्वौ चैव जिने च सिद्धे च॥705॥)

गोयमथेरं पणमिय, ओघादेसेसु वीसभेदाणं।

जोजणिकाणालावं, वोच्छामि जहाकमं सुणह॥706॥

(गौतमस्थविरं प्रणम्य ओघादेशयोः विंशभेदानाम्।

योजनिकानामालापं वक्ष्यामि यथाक्रमं शृणुतः॥706॥)

ओघे चोदसठाणे, सिद्धे वीसदिविहाणमालावा।

वेदकसायविभिण्णे अणियट्टीपंचभागे य॥707॥

(ओघे चतुर्दशस्थाने सिद्धे विंशतिविधानामालापाः।

वेदकषायविभिन्ने अनिवृत्ति पंचभागे च॥707॥)

ओघे मिच्छदुगे वि य, अयदपमत्ते सजोगिठाणम्मि।

तिण्णेव य अलावा सेसेसिक्को हवे णियमा॥708॥

(ओघे मिथ्यात्वद्विकेऽपि च अयतप्रमत्तयोः सयोगिस्थाने।

त्रय एव चालापाः शेषेष्वेको भवेत् नियमात्॥708॥)

सामण्णं पज्जत्तमपज्जत्तं चेदि तिण्ण अलावा।

दुवियप्पमपज्जत्तं, लद्धीणिव्वत्तगं चेदि॥709॥

(सामान्यः पर्याप्तः अपर्याप्तश्चेति त्रय आलापाः।

द्विविकल्पोऽपर्याप्तो लब्धिर्निवृत्तिकश्चेति॥709॥)

दुविहं पि अपज्जत्तं, ओघे मिच्छेव होदि णियमेण।

सासणअयदपमत्ते, णिव्वत्तिअपुण्णगो होदि॥710॥

(द्विविधोप्यपर्याप्त ओघे मिथ्यात्व एव भवति नियमेन।

सासादनायतप्रमत्तेषु निर्वृत्त्यपूर्णको भवति॥710॥)

जोगं पडि जोगिजिणे, होदि हु णियमा अपुण्णगत्तं तु।

अवसेसणवट्ठाणे, पज्जत्तालावगो एक्को॥711॥

(योगं प्रति योगिजिने भवति हि नियमादपूर्णकत्वं तु।

अवशेषनवस्थाने पर्याप्तालापक एकः॥711॥)

सत्तण्हं पुढवीणं, ओघे मिच्छे य तिण्णि अलावा।

पढमाविरदेवि तहा, सेसाणं पुण्णगालावो॥712॥

(सप्तानां पृथिवीनामोघे मिथ्यात्वे च त्रय आलापाः।

प्रथमाविरतेपि तथा शेषाणां पूर्णकालापः॥712॥)

तिरियचउक्काणोघे, मिच्छदुगे अविरदे य तिण्णे व।

णवरि य जोणिणि अयदे, पुण्णो सेसेवि पुण्णो दु॥713॥

(तिर्यक्चतुष्काणामोघे मिथ्यात्वद्विके अविरते च त्रय एव।

नवरि च योनिन्ययते पूर्णः शेषेऽपि पूर्णस्तु॥713॥)

तेरिच्छियलद्धियपज्जत्ते एक्को अपुण्ण अलावो।

मूलोघं मणुसतिये, मणुसिणिअयदम्हि पज्जत्तो॥714॥

(तिर्यग्लब्ध्यपर्याप्ते एकः अपूर्ण आलापः।

मूलोघं मनुष्यत्रिके मानुष्ययते पर्याप्तः॥714॥)

मणुसिणि पमत्तविरदे, आहारदुगं तु णत्थि णियमेण।

अवगदवेदे मणुसिणि, सण्णा भूदगदिमासेज्ज॥715॥

(मानुष्यां प्रमत्तविरते आहारद्विकं तु नास्ति नियमेन।

अपगतवेदायां मानुष्यां संज्ञा भूतगतिमासाद्य॥715॥)

णरलद्धिअपज्जत्ते, एक्को दु अपुण्णगो दु आलावो।

लेस्साभेदविभिण्णा, सत्त वियप्पा सुरट्ठाणा॥716॥

(नरलब्ध्यपर्याप्ते एकस्तु अपूर्णकस्तु आलापः।

लेश्याभेदविभिन्नानि सप्त विकल्पानि सुरस्थानानि॥716॥)

सव्वसुराणं ओघे, मिच्छदुगे अविरदे य तिण्णेव।

णवरि य भवणतिकप्पित्थीणं च य अविरदे पुण्णो॥717॥

(सर्वसुराणामोघे मिथ्यात्वद्विके अविरते च त्रय एव।

नवरि च भवनत्रिकल्पस्त्रीणां च च अविरते पूर्णः॥717॥)

मिस्से पुण्णालाओ, अणुद्दिसाणुत्तरा हु ते सम्मा।

अविरद तिण्णालावा, अणुद्दिसाणुत्तरे होंति॥718॥

(मिश्रे पूर्णालापः अनुदिशानुत्तरा हि ते सम्यञ्चः।

अविरते त्रय अलापा अनुदिशानुत्तरे भवन्ति॥718॥)

बादरसुहुमेइंदियवितिचउरिंदियअसण्णिजीवाणं।

ओघे पुण्णे तिण्णि य, अपुण्णगे पुण अपुण्णो दु॥719॥

(बादरसूक्ष्मैकेन्द्रियद्वित्रिचतुरिन्द्रियासंज्ञिजीवानाम्।

ओघे पूर्णे त्रयश्च अपूर्णके पुनः अपूर्णस्तु॥719॥)

सण्णी ओघे मिच्छे, गुणपडिवण्णे य मूलआलावा।

लद्धियपुण्णे एक्कोऽपज्जत्तो होदि आलाओ॥720॥

(संज्ञ्योघे मिथ्यात्वे गुणप्रतिपन्ने च मूलालापाः।

लब्ध्यपूर्णे एकः अपर्याप्तो भवति आलापः॥720॥)

भूआउतेउवाऊणिच्चचदुग्गदिणिगोदगे तिण्णि।

ताणं थूलिदरेसु वि, पत्तेगे तद्दु भेदेवि॥721॥

तसजीवाणं ओघे, मिच्छादिगुणे वि ओघ आलाओ।

लद्धिअपुण्णे एक्कोऽपज्जत्तो होदि आलाओ॥722॥ जुम्मं।

(भ्वप्तेजोवायुनित्यचतुर्गतिनिगोदके त्रयः।

तेषां स्थूलेतरयोरपि प्रत्येके तद्द्विभेदेपि॥721॥

त्रसजीवानामोघे मिथ्यात्वादिगुणेऽपि ओघ आलापः।

लब्ध्यपूर्णे एक अपर्याप्तो भवत्यालापः॥722॥ युग्मम्।)

एक्कारसजोगाणं, पुण्णगदाणं सपुण्ण आलाओ।

मिस्सचउक्कस्स पुणो, सगएक्कअपुण्ण आलाओ॥723॥

(एकादशयोगानां पूर्णगतानां स्वपूर्णालापः।

मिश्रचतुष्कस्य पुनः स्वकैकापूर्णालापः॥723॥)

वेदादाहारोत्ति य, सगुणट्ठाणाणमोघ आलाओ।

णवरि य संढित्थीणं, णत्थि दु आहारगाण दुगं॥724॥

(वेदादाहार इति च स्वगुणस्थानानामोघ आलापः।

नवरि च षण्ढस्त्रीणां नास्ति हि आहारकाणां द्विकम्॥724॥)

गुणजीवापज्जत्ती, पाणा सण्णा गइंदिया काया।

जोगा वेदकसाया, णाणजमा दंसणा लेस्सा॥725॥

(गुणजीवाः पर्याप्तयः प्राणाः संज्ञाः गतीन्द्रियाणि कायाः।

यॊगा वेदकषायाः ज्ञानयमा दर्शनानि लेश्याः॥725॥)

भव्वा सम्मत्तावि य, सण्णी आहारगा य उवजोगा।

जोग्गा परूविदव्वा, ओघादेसेसु समुदायं॥726॥

(भव्याः सम्यक्त्वान्यपि च संज्ञिनः आहारकाश्चॊपयॊगाः।

यॊग्याः प्ररूपितव्या ओघादेशयॊः समुदायम्॥726॥)

ओघे आदेसे वा, सण्णीपज्जंतगा हवे जत्थ।

तत्थ य उणवीसंता, इगिविंतिगुणिदा हवे ठाणा॥727॥

(ओघे आदेशे वा, संज्ञिपर्यन्तका भवेयुर्यत्र।

तत्र चैकॊनविंशांता एकद्वित्रिगुणिता भवेयुः स्थानानि॥727॥)

वीरमुहकमलणिग्गयसयलसुयग्गहणपयडणसमत्थं।

णमिऊणगोयममहं, सिद्धंतालावमणुवोच्छं॥728॥

(वीरमुखकमलनिर्गतसकलश्रुतग्रहणप्रकटनसमर्थम्।

नत्वा गौतममहं सिद्धान्तालापमनुवक्ष्ये॥728॥)

सव्वेसिं सुहुमाणं, काओदा सव्वविग्गहे सुक्का।

सव्वो मिस्सो देहो, कओदवण्णो हवे णियमा॥728-1॥

(सर्वेषां सूक्ष्माणां कापॊताः सर्वविग्रहे शुक्लाः।

सर्वॊ मिश्रॊ देहः कपॊतवर्णॊ भवेन्नियमात्॥728-1॥)

मणपज्जवपरिहारो, पढमुवसम्मत्त दोण्णि आहारा।

एदेसु एक्कपगदे, णत्थित्ति असेसयं जाणे॥729॥

(मनःपर्ययपरिहारौ प्रथमॊपसम्यक्त्वं द्वावाहारौ।

एतेषु एकप्रकृते नास्तीति अशेषकं जानाहि॥729॥)

विदियुवसमसम्मत्तं, सेढीदोदिण्णि अविरदादीसु।

सगसगलेस्सामरिदे, देवअपज्जत्तगेव हवे॥730॥

(द्वितीयोपशमसम्यक्त्वं श्रेणितोऽवतीर्णेऽविरतादिषु।

स्वकस्वकलेश्यामृते देवापर्याप्तक एव भवेत्॥730॥)

सिद्धाणं सिद्धगई, केवलणाणं च दंसणं खयियं।

सम्मत्तमणाहारं, उवजोगाणक्कमपउत्ती॥731॥

(सिद्धानां सिद्धगतिः केवलज्ञानं च दर्शनं क्षायिकम्।

सम्यक्त्वमनाहारमुपयोगानामक्रमप्रवृत्तिः॥731॥)

गुणजीवठाणरहिया, सण्णापज्जत्तिपाणपरिहीणा।

सेसणवमग्गणूणा, सिद्धा सुद्धा सदा होंति॥732॥

(गुणजीवस्थानरहिताः संज्ञापर्याप्तिप्राणपरिहीनाः।

शेषनवमार्गणोनाः सिद्धाः शुद्धाः सदा भवन्ति॥732॥)

णिक्खेवे एयत्थे, णयप्पमाणे णिरुत्तिअणियोगे।

मग्गइ वीसं भेयं, सो जाणइ अप्पसब्भावं॥733॥

(निक्षेपे एकार्थे नयप्रमाणे निरुक्त्यनुयोगयोः।

मार्गयति विंश भेदं स जानाति आत्मसद्भावम्॥733॥)

इति आलापाधिकारः।

अज्जज्जसेणगुणगणसमूहसंधारिअजियसेणगुरू।

भुवणगुरू जस्स गुरू सो राओ गोम्मटो जयतु॥734॥

(आर्यार्यसेनगुणगणसमूहसंधार्यजितसेनगुरुः।

भुवनगुरुर्यस्य गुरुः स राजा गोम्मटो जयतु॥734॥)

इति गोम्मटसारस्य जीवकाण्डं संस्कृतच्छायासहितं समाप्तम्।